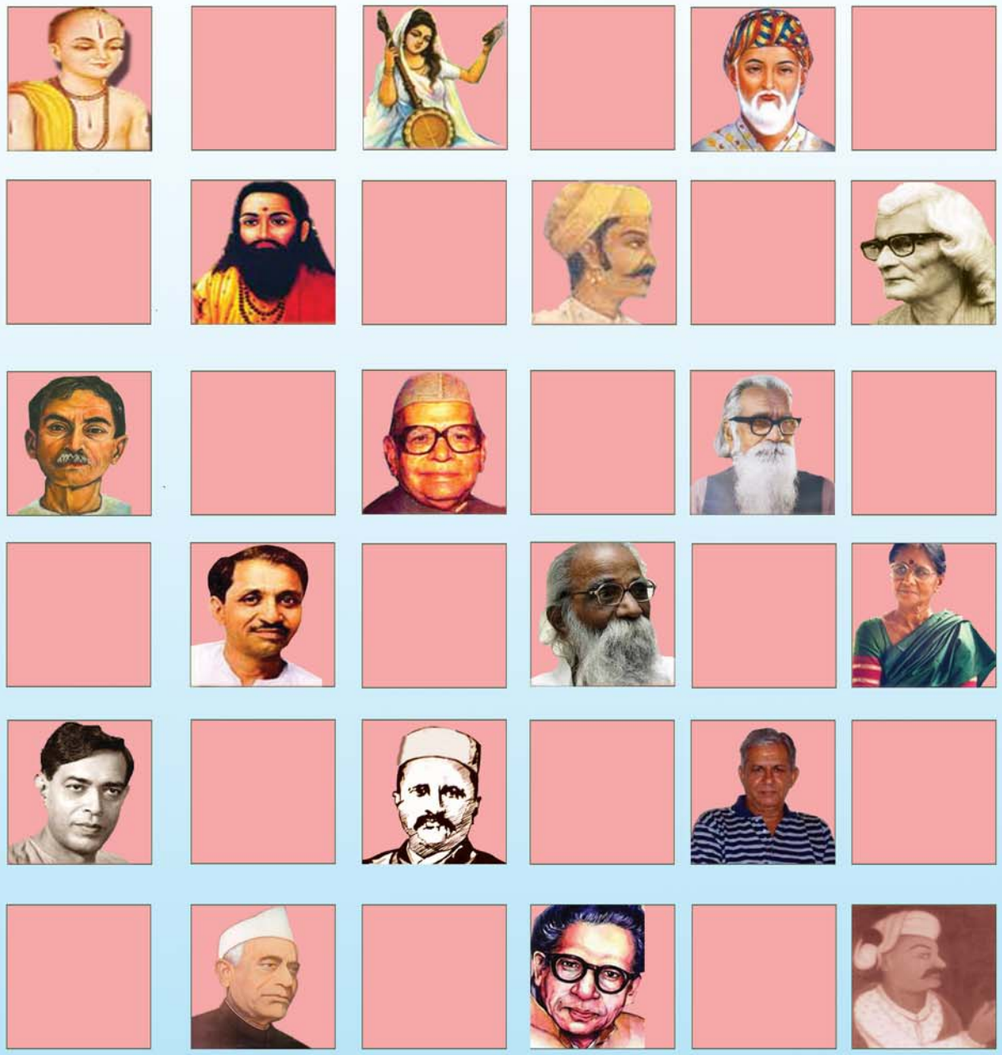

हिंदी अध्यापक मार्गदर्शिका

10 वीं कक्षा के
हिंदी अध्यापकों के लिए
प्रशिक्षण कार्यक्रम - मार्गदर्शिका

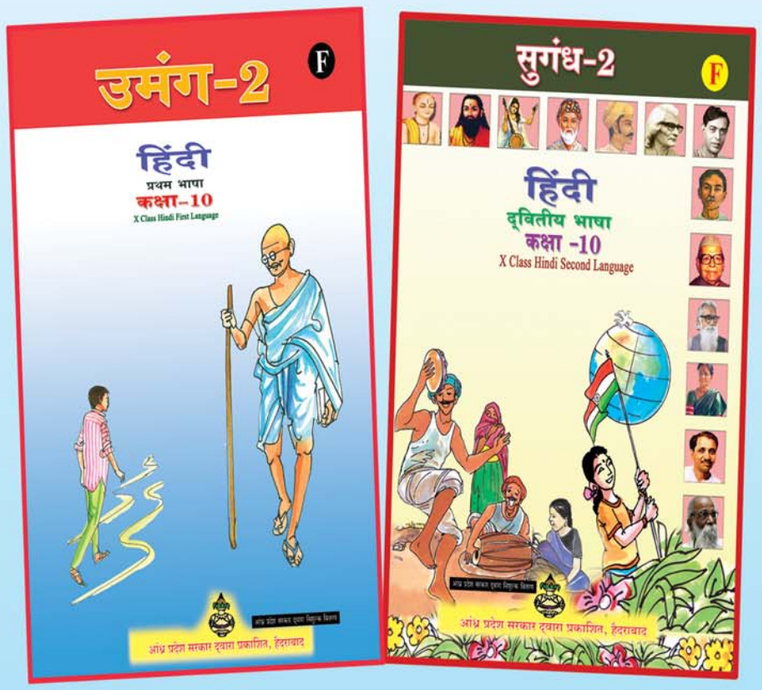

राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, तेलंगाणा, हैदराबाद

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद

SCERT, TELANGANA, HYDERABAD

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी समन्वयक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक
जी.एच.एस.फॉर डेफ मलकपेट, हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा
राज्य हिंदी संसाधक,
एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

एम. डी. यूसुफोद्दीन
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.बी.एच.एस., नलगोंडा

शेख़ हाजी नूरानी
जड.पी.हेच.एस.चिट्याल, मं. चिट्याल
ज़िला : वरंगल

श्रीमती रेशमा बेगम
राज्य हिंदी संसाधक, जड़,पी.एच.एस., देवरयंजाल,
शामीरपेट मंडल, रंगारेड्डी

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक
जी.बी.एच.एस., नामपल्ली, हैदराबाद

डॉ. दुर्गेश नंदिनी
राज्य हिंदी संसाधक, हैदराबाद

श्रीमती ए.वी.रमणा
राज्य हिंदी संसाधक, हैदराबाद

श्रीमती अनुराधा
जड़,पी.एच.एस शादनगर, महबूबनगर

संपादक मंडल

डॉ. फराह नसरीन
प्रिंसिपल,आई.ए.एस.ई., हैदराबाद

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी समन्वयक,
एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक
जी.एच.एस.फॉर डेफ मलकपेट, हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा
राज्य हिंदी संसाधक,
एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक
जी.बी.एच.एस., नामपल्ली, हैदराबाद

श्रीमती रेशमा बेगम
राज्य हिंदी संसाधक, जड़,पी.एच.एस.,
देवरयंजाल, शामीरपेट मंडल, रंगारेड्डी

कुमारी के. भारती
राज्य हिंदी संसाधक,
एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

अध्यापक मार्गदर्शिका विकास समिति

श्री ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, तेलंगाणा
हैदराबाद

श्री एस. जगन्नाथ रेड्डी
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा
हैदराबाद

श्री जी. गोपाल रेड्डी
पूर्व निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा
हैदराबाद

श्री के. कृष्ण मोहन
प्रोफेसर, सी&टी, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा
हैदराबाद

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
पूर्व अध्यक्ष,सी&टी, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा
हैदराबाद

श्री मोहम्मद मौलाना
प्राध्यापक, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, तेलंगाणा
हैदराबाद

आमुख

हिंदी भाषा शिक्षण द्वितीय भाषा की 9,10 वीं कक्षा की नवीन पाठ्यपुस्तकें तैयार की गयी हैं। इन पाठ्यपुस्तकों के आधार पर किस प्रकार शिक्षण कार्य किया जाय, इस के मार्गदर्शन के लिए 9वीं व 10 वीं कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए 'अध्यापक मार्गदर्शिका' तैयार की गयी है। इसके अंतर्गत पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता को व्यापक रूप से व्यक्त किया गया है। जिसे पढ़ने से अध्यापकों को पाठों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होगी। शैक्षिक मापदंड अध्याय के अंतर्गत दसवीं कक्षा के लिए निर्धारित शैक्षिक मापदंडों की जानकारी के साथ-साथ कक्षा में इन मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्यो के संचालन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इन अभ्यासों के द्वारा छात्रों को विचार-विमर्श, विश्लेषण, चिंतनशील, क्रियाशील, तर्कशील, निर्णयशील, सृजनशील आदि दक्षताओं में सक्षम बनाकर बालक का सर्वांगीण विकास करना पाठ्यपुस्तक का मुख्य उद्देश्य है। पाठ्यपुस्तक में इन पाठों और अभ्यासों के अंतर्गत विभिन्न विधाएँ दी गयी हैं। कौनसी - विधा की क्या विशेषता है? किस विधा में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? छात्रों द्वारा सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अंतर्गत किये गये 'सृजनात्मक कार्य' जैसे - निबंध, पत्र-लेखन, घटना वर्णन, नाटक आदि किस आधार पर किया जाना चाहिए, इसकी जानकारी 'विधा-विशेषता' अध्याय के अंतर्गत दी गयी है। मार्गदर्शिका में 'शिक्षण व्यूह' अध्याय बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्यापक को अध्यापन के लिए कौन-कौन से शिक्षण व्यूह अपनाने चाहिए? किस शिक्षण व्यूह (जैसेः- मनोरेखा चित्रण, नृत्याभिनय, एकल अभिनय, सामूहिक कार्य आदि) का किस प्रकार क्रियान्वयन किया जाय, इसकी जानकारी 'शिक्षण ब्यूह' अध्याय के अंतर्गत दी गयी है। यह तो आप सभी जानते हैं कि अध्यापक को कक्षा में जाने से पहले ही अध्यापन संबंधी तैयारी करनी होती है। नयी पाठ्यपुस्तक पढ़ाने के लिए अध्यापक 'शिक्षण, आकलन, बालक के सर्वांगीण विकास आदि के लिए किस प्रकार की तैयारी करनी होगी? इसकी विस्तृत जानकारी 'अध्यापक की तैयारी' अध्याय के अंतर्गत दी गयी है। यह अध्यापकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक में दिये गये पाठों को किस प्रकार योजनाबद्ध पद्धति से पढ़ाना है? इसके लिए वार्षिक योजना तथा पाठ योजना किस प्रकार तैयार की जानी चाहिए? इनके मुख्य सोपान कौन-कौन से हैं? किस सोपान के अंतर्गत क्या सूचना दी जानी चाहिए? इसके विषय में 'योजनाएँ' शीर्षकीय अध्याय से जानकारी प्राप्त होगी। RTE के अंतर्गत CCE को महत्व दिया गया है और हमारी पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन का मुख्य आधार CCE है। इसमें CCE की महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी है। दसवीं कक्षा में रचनात्मक आकलन (FA) तथा सारांशात्मक आकलन (SA) परीक्षाएँ किस प्रकार आयोजित की जाएँ? इसमें किस प्रकार के प्रश्न दिए जाएँ तथा इसका आकलन किस आधार पर किया जाना चाहिए? आदि की व्यापक जानकारी इस मार्गदर्शिका में दी गयी है। इससे अध्यापकों को छात्रों के सर्वांगीण विकास तथा उन्हें पब्लिक परीक्षा के लिए तैयार करने में सहायता मिलेगी। साथ ही इस मार्गदर्शिका में कुछ वेबसाइट भी दिये गये हैं। इससे अध्यापक अपने अध्यापन संबंधी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

इस प्रकार यह मार्गदर्शिका दसवीं कक्षा के अध्यापकों के लिए अत्यधिक सहायक सिद्ध होगी।

निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

नमस्ते मित्रो!

हमें हर्ष है कि आप सब हिंदी शिक्षण विकास व CCE के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

हम यह जानते हैं कि R.T.E.-2009 व N.C.F.-2005 के सुझावों के अनुसार पाठ्यपुस्तक ही नहीं संपूर्ण पाठ्यक्रम शिक्षण व मूल्यांकन में परिवर्तन हुए हैं।

इस "माड्युल" में नयी पाठ्यपुस्तक, मूल्यांकन, शिक्षण, वार्षिक योजना व पाठ योजना आदि की जानकारी प्रतिबिंबित होती है। अतः इसके एक-एक पृष्ठ पर विशेष ध्यान दें, जिससे छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहयोग देने के भरपूर अवसर मिलते हैं। आशा है कि इस शैक्षिक वर्ष भर इसका सहारा लेते हुए आप अपने शिक्षण को और भी सरल व समृद्ध बनायेंगे।

धन्यवाद,

आपका भवीदय,

सय्यद मतीन अहमद,

समन्वयक

एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	**पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता** (Phylosophy of the Text Book)	1 - 14
2.	**पाठ्यांश व शैक्षिक मापदंड** (Lesson & Academic Standards)	15 - 50
3.	**विधाएँ स्पष्टीकरण व शिक्षण व्यूह** (Discourses & Strategies)	51 - 55
4.	**अध्यापक की सन्नद्धता व योजनाएँ** (Teacher Readiness & Plans)	56 - 78
5.	**सतत् समग्र मूल्यांकन** (Continuous Comprehensive Evaluation)	79 - 130

अध्याय –I

पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता
(PHYLOSOPHY OF THE TEXT BOOK)

1) पाठ्यपुस्तक का मुखचित्र
2) पाठ्यपुस्तक का आमुख
3) पाठ्यपुस्तक में छात्रों के लिए सूचनाएँ
4) अध्यापकों के लिए सूचनाएँ
5) पाठ्यपुस्तक के मुख्य सिद्धांत
6) विषयसूची
7) पाठ की संरचना
8) शैक्षिक मापदंड
9) पाठ्यपुस्तक में परियोजना
10) पाठ्यपुस्तक के चित्र
11) नीति वाक्य
12) शब्दकोश
13) नागरिकों के मूल कर्तव्य
14) मूल्यांकन
15) नवीन पाठ्यपुस्तक के संसाधन

पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता (PHYLOSOPHY OF THE TEXT BOOK)

1) पाठ्यपुस्तक का मुखचित्र

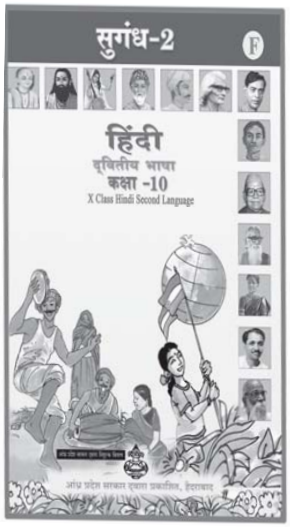

पाठ्यपुस्तक का मुखपृष्ठ बहुत ही रोचक, सुंदर, आकर्षक व साहित्यिक है। यदि आप छठवीं, सातवीं व आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के शीर्षक देखें तो जहाँ उनके नाम क्रमशः बाल बगीचा-1, बाल बगीचा-2 और बाल बगीचा-3 हैं, वहीं नवीं व दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के शीर्षक सुगंध-1 और सुगंध-2 हैं। पुस्तक के शीर्षक बड़े ही तार्किक ढंग से दिये गये हैं। छठवीं, सातवीं व आठवीं कक्षा में पुस्तकें जहाँ बच्चों (बाल) के बगीचों के रूप में विकसित होते हुए दिखायी देते हैं वहीं आगे जाकर सुगंध लुटाने लगते हैं। यही कारण है कि नवीं कक्षा की पुस्तक का नाम सुगंध-1 और और दसवीं कक्षा की पुस्तक का नाम सुगंध-2 रखा गया है।

पुस्तक के मुखपृष्ठ पर तुलसीदास, रैदास, मीराबाई, रहीम, बिहारी, सुमित्रानंदन पंत, डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, प्रेमचंद, विष्णु प्रभाकर, काका कालेलकर, मन्नू भंडारी, भगवतशरण उपाध्याय व रावूरि भरद्वाज के चित्र दिये गये हैं। इन चित्रों के माध्यम से यह पुस्तक साहित्यिक सुगंध लुटाती दिखायी देती है।

एनसीएफ-2005 की बातों का शब्दशः पालन करते हुए स्थानीय कलाओं को महत्व देने हेतु लोकगीत का चित्र भी मुखपृष्ठ पर दिया गया है। इसके अतिरिक्त विश्वभर में सत्य, अहिंसा, धर्म, न्याय, प्रेम, शांति फैलाने और उसे पावन धाम बनाने के लिए भारत के योगदान को दर्शाने वाला चित्र भी दिया गया है। इस चित्र में एक बालिका भारत का तिरंगा झंडा लेकर लहरा रही है। वह भारत के परिश्रम से विश्व (गोलक) को पावन स्थान बनाने की प्रेरणा दे रही है।

मुखपृष्ठ के पीछे वाले भाग में भ्रूण हत्या रोकने संबंधी पठन हेतु कविता ''माँ मुझे आने दे'', जल का महत्व बताने वाले पठन हेतु ''क्या आपको पता है?'' स्लाइड व रैगिंग (छेड़छाड़) रोकने संबंधी उपवाचक पाठ ''अपने स्कूल को एक उपहार'' के चित्र दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त ''हम भारतवासी'' कविता में दिये गये गौतम बुद्ध का चित्र भी दिया गया है। गौतम बुद्ध विश्वभर में सत्य, अहिंसा, धर्म, न्याय, शांति, प्रेम के प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं दादी अमीना और पोते हामिद का हृदय आलिंगन चित्र बड़ा ही हृदयस्पर्शी है।

पुस्तक का मुखपृष्ठ यूँही नहीं दिया गया है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या 73 पर छठवीं से लेकर दसवीं कक्षा तक की पुस्तकों के मुखपृष्ठ पर एक परियोजना कार्य भी दिया गया है। अतः सभी अध्यापकों से अनुरोध है कि वे पुस्तकों के मुखपृष्ठ पर भी छात्रों से कार्य करवायें।

जैसेः छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के मुखपृष्ठों में (कवरपेज) आपको कौनसा मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगता है? उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए एक सूची बनाइए और उसका कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

2) पाठ्यपुस्तक का आमुख

आमुख को पाठ्यपुस्तक का प्रतिबिंब कहा जाता है। इसे पढ़कर हम पाठ्यपुस्तक में निहित सामग्री की ढेर सारी बातों के बारे में अनुमान लगा सकते हैं। दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक सुगंध - 2 के आमुख के प्रस्तावित अंश निम्नलिखित हैं :-

- एन.सी.एफ.-2005, आर.टी.ई. - 2009 तथा आधार पत्र - 2011 के सुझावों के आधार पर पाठ्यपुस्तक के सृजन पर प्रकाश डाला गया है।

आमुख

आंध्र प्रदेश में हिंदी भाषा शिक्षण द्वितीय भाषा के रूप में छठवीं कक्षा से आरंभ किया जाता है। छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों में विविध भाषाई कौशलों के अभ्यास दिये गये हैं। छठवीं में सुनने-बोलने के कौशल पर, सातवीं में पढ़ने के कौशल पर, आठवीं में लिखने (स्वरचना) के कौशल पर और नवीं कक्षा में सृजनात्मक अभिव्यक्ति दक्षता पर विशेष प्रकाश डाला गया है। इसी को ध्यान में रखकर दसवीं कक्षा में भाषा कौशलों व दक्षताओं (शैक्षिक मापदंड) के समग्र विकास के आयामों का ध्यान रखा गया है। इसमें सामाजिक, मानवीय, संवैधानिक, ऐतिहासिक, बालस्वभाव, वैज्ञानिक आदि भावों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जो बालक के सर्वांगीण विकास में सहयोग दे सकें। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझाव ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य-पुस्तक का सृजन किया गया है।

- त्रिभाषा सूत्र के अनुरूप पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है।
- बच्चों के किताबी ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने और अर्जित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करने तथा नवीन ज्ञान का संबंध पूर्व ज्ञान से जोड़ने के लिए विभिन्न विधाओं (गीत, कहानी, साक्षात्कार, पी.पी.टी.) के समावेश की जानकारी दी गयी है।
- बालक के सर्वांगीण विकास में सहयोग देने वाले मानवीय, संवैधानिक, ऐतिहासिक, बाल-स्वभाव, वैज्ञानिक आदि भावों को पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया गया है।
- बच्चों की आयु, रुचि और स्तर के अनुकूल भाषा कौशलों व दक्षताओं (शैक्षिक मापदंडों) जैसे :- अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति सृजनात्मकता, भाषा की बात का समावेश है।
- परियोजना कार्यों के संबंध में विशेष जानकारी दी गयी है।
- छात्र को भावी नागरिक बनाने में उच्चतम बौद्धिक कौशलों को (Higher Order Thinking Skills - HOTS) महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

3) पाठ्यपुस्तक में छात्रों के लिए सूचनाएँ

I. सूचनाएँ क्यों दी गयी हैं?

पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ के भीतरी भाग में 'छात्रों के लिए विशेष सूचनाएँ' दी गयीं हैं। इसे देने के निम्न उद्देश्य हैं :-

- इसे पढ़ने से पाठ्यपुस्तक के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- पढ़े जाने वाले अंशों का परिचय मिलता है। इससे छात्रों में पाठ्यपुस्तक के प्रति रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न होती है।
- पाठ्यपुस्तक में कुशलताओं के विकास के लिए दिये गये अभ्यासों का परिचय मिलता है।
- अभ्यासों की प्रकृति को समझने में सहायता होती है।

- इससे छात्रों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- विभिन्न अभ्यास कार्य किस प्रकार करने चाहिए। इसकी जानकारी प्राप्त होती है।

II किन अंशों पर आधारित हैं?

- शैक्षिक मापदंडों के अंतर्गत दिये गये अभ्यास कार्यों की व्याख्या की गयी है।
- कौनसा अभ्यास कार्य किस प्रकार करना चाहिए, इसकी जानकारी दी गयी है।
- शब्दकोश व अन्य संदर्भ पुस्तकों के उपयोग की जानकारी दी गयी है।
- गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक का उपयोग न करने का निर्देश दिया गया है।
- परियोजना कार्य से संबंधित जानकारी दी गयी है।

III शिक्षक क्या करें?

- छात्रों को 'छात्रों के लिए विशेष सूचनाएँ' वाला अंश पढ़ने के लिए कहें।
- प्रत्येक बिंदु पर चर्चा करें।
- निष्कर्ष के आधार पर इसकी उपयोगिता बतायें।
- अभ्यास कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें।

4) अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

पाठ्यपुस्तक में अध्यापकों के लिए सूचनाएँ, ''अध्यापकों से ...'' शीर्षक के अंतर्गत दी गयी हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रारूप की जानकारी इसके अंतर्गत दी गयी सूचना से मिलती है। हर अध्यापक के लिए इसे पढ़ना अनिवार्य है।

इसके अंतर्गत दिये गये अंशः

1. कालांशों का विभाजन
2. पाठ की संरचना के प्रमुख अंश और उनके उद्देश्य
3. पठन हेतु और उपवाचक पाठों के उद्देश्यों पर प्रकाश
4. विभिन्न शिक्षण पद्धतियों के उपयोग का उल्लेख
5. विश्लेषणात्मक और विचारात्मक प्रश्नों के उपयोग पर बल
6. शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यासों की प्रकृति, उनके संचालन तथा आकलन की पद्धतियों का उल्लेख
7. परियोजना कार्य के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण
8. वार्षिक योजना और पाठ योजना के नमूनों का प्रस्तुतीकरण
9. भाषा-शिक्षण के सोपानों का उल्लेख
10. विभिन्न संसाधनों और संदर्भ ग्रंथों के उपयोग के निर्देश
11. भाषा-क्रियाकलाप और साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन पर प्रकाश
12. गाइड, स्टडी मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि के उपयोग की मनाही

अध्यापकों को चाहिए कि -

- वे इन सूचनाओं को पढ़ें -
- इनमें दी गयी सूचनाओं के आधार पर अपनी शिक्षण योजना की तैयारी करें।
- कालांशानुसार अपनी वार्षिक योजना और पाठ योजना तैयार करें।
- संसाधनों और संदर्भ ग्रंथों की सूची बना लें।
- छात्रों को स्वलेखन के लिए प्रेरित करें।
- पाठ के अनुरूप विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें।
- छात्रों की क्षमताओं का आकलन शैक्षिक मापदंडों के आधार पर करें।
- भाषाई क्रियाकलापों का क्रियान्वन तत्परता के साथ करें।

5) पाठ्यपुस्तक के मुख्य सिद्धांत

राष्ट्र का प्राथमिक उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु राज्य सरकार ने एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई - 2009 के सुझावों के आधार पर ए.पी.एस.सी.एफ. - 2011 का निर्माण किया है। इसी ए.पी.एस.सी.एफ - 2011 के मौलिक सूत्रों के आधार पर दसवीं कक्षा की द्वितीय भाषा और प्रथम भाषा की पाठ्यपुस्तकों की रचना हुई है।

इन पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

1. भाषार्जन की न्यूनतम क्षमता से उच्चतम क्षमता की ओर ले जाना :

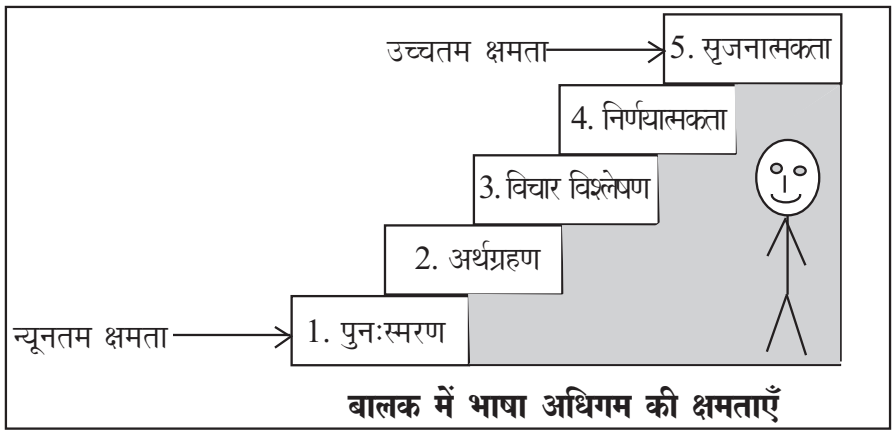

बालक में भाषा अधिगम की क्षमताएँ

2. रटंत पद्धति की समाप्ति : -

यह पाठ्यपुस्तकें बच्चों को रटने की नीरस व बोझिली पद्धतियों से बचाये रखती हैं। इन पुस्तकों में ऐसे अंशों का समायोजन है जो बच्चों को रटने की अपेक्षा सोचने-विचारने, विश्लेषण करने और प्रतिक्रिया करने पर बल दिया गया है। इस पुस्तक के पाठों में दिये गये प्रश्न विचारोत्तेजक हैं जो छात्र को सोचने, समझने और तर्क करने के लिए प्रेरित करते हैं।

उदा :-
1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है? कैसे? (पृष्ठ : 3)
2. राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (पृष्ठ : 34)
3. नीचे दिये गये वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में बताइए। (पृष्ठ : 26)
4. अपठित गद्यांश, पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (पृष्ठ : 48)

3. अर्जित ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक रूप से करना :

पाठ्यपुस्तक एक साधन है, साध्य नहीं। यह अर्जित ज्ञान का उपयोग अपने दैनंदिन जीवन में व्यावहारिक रूप से करने का मार्ग सुगम बनाती है। बच्चे कक्षा में जो ज्ञान अर्जित करते हैं वे उसका उपयोग, विद्यालय से बाहर अर्थात् समाज में स्वतंत्रतापूर्वक कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में दिये गये पढ़ना-समझना, स्वरचना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और परियोजना जैसे अभ्यासों से बालक में इस क्षमता का विकास होता है। उदा : - 1. विज्ञापन पढ़िए और उस पर चार प्रश्न बनाइए। (पृष्ठ : 33)

2. जल संरक्षण पर एक पोस्टर बनाइए। (पृष्ठ : 65)

4. पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर सीखने के अवसर :-

हमारी पाठ्यपुस्तक बच्चों को केवल पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रखती, बल्कि वह उसे अतिरिक्त शिक्षण के लिए संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने, पुस्तकालय का उपयोग करने और समाज के सदस्यों से परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा शिक्षा प्रदान करने के अवसर भी प्रदान करती है। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास बच्चों को इस दिशा में प्रेरित करते हैं। उदा :-

1. वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कोई कहानी ढूँढ़कर लाइए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (पृष्ठ : 9)
2. शांति के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (पृष्ठ : 16)

5. बच्चों के ज्ञान, संस्कृति, स्थानीय कलाओं आदि से संबंधित अंश :-

पाठ्यपुस्तकों में बच्चों के ज्ञान, संस्कृति, स्थानीय कलाओं से संबंधित अंश अवश्य होने चाहिए। इससे बच्चों में अपनी संस्कृति के प्रति आदर की भावना उत्पन्न होती है, स्थानीय विषयों के प्रति जागरुकता का निर्माण होता है, मानवीय मूल्यों का विकास होता है, विभिन्न कलाओं के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक बालक को इसका भरपूर अवसर प्रदान करती है, उदा :-

1. अपने आसपास के क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकगीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए। (पृष्ठ : 27)
2. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी? (पृष्ठ : 55)

6. शैक्षिक मापदंडों पर आधारित पाठः-

शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बालक की विभिन्न दक्षताओं के विकास के लिए कुछ मापदंडों का निर्धारण हुआ है।

दसवीं की पाठ्यपुस्तक में ये मापदंड हैं-

I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया (सुनना - बोलना, पढ़ना - लिखना)

II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता (स्वरचना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और प्रशंसा)

III भाषा की बात (शब्द भंडार, व्याकरणांश) के रूप में हैं।

इनके द्वारा बच्चों की विभिन्न दक्षताओं के साथ-साथ सतत् समग्र मूल्यांकन में भी सहायता प्राप्त होती है। इन अभ्यासों के द्वारा बच्चे मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में सक्षम बनते हैं, विभिन्न विधाओं का सृजन कर सकते हैं, संदर्भ पुस्तकें पढ़कर समझ सकते हैं और भिन्न-भिन्न शब्दावली का प्रयोग कर सकते हैं। उदा : - 1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है? कैसे? (पृष्ठ संख्या : 26)

2. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 49)

3. भक्ति - भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 42)

7. आकलन की विशेषता :-

पाठ्यपुस्तक के सृजन का एक अन्य विशेष और ठोस आधार है- सतत् समग्र मूल्यांकन। सतत् समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन किया जाता है। इनके आधार पर ही पाठ्यपुस्तक में इकाइयों का विभाजन किया गया है। पाठ के बीच-बीच में दिये जाने वाले प्रश्न भी सतत् समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया में सहयोग देते हैं। पाठ्यपुस्तक के अभ्यास भी पूर्णतः इस मूल्यांकन पर ही आधारित हैं।

6) विषयसूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	विषय
1.	बरसते बादल	कविता	• प्रकृति वर्णन, पर्यावरण
2.	ईदगाह	कहानी	• मानव मूल्य
*	यह रास्ता कहाँ जाता है?	नाटक	• बौद्धिक व नैतिक
3.	हम भारतवासी	कविता	• देशप्रेम, मानव मूल्य
*	शांति की राह में	निबंध (उपवाचक)	• मानव मूल्य
4.	कण-कण का अधिकारी	कविता	• सामाजिकता
5.	लोकगीत	निबंध	• संस्कृति
*	उलझन	कविता (उपवाचक)	• बाल-स्वभाव
6.	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	पत्र	• सृजनात्मकता
*	दो कलाकार	कहानी (उपवाचक)	• मानवमूल्य
7.	भक्ति पद	कविता	• संस्कृति
8.	स्वराज्य की नींव	एकांकी	• देशभक्ति
*	माँ मुझे आने दे!	कविता (पठन हेतु)	• सामाजिकता
9.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा-वृत्तांत	• संस्कृति
*	अपने स्कूल को एक उपहार	कहानी (उपवाचक)	• बाल - स्वभाव
10.	नीति दोहे	कविता	• मानवमूल्य
11.	जल ही जीवन है	कहानी	• सामाजिकता
*	क्या आपको पता है?	निबंध पी.पी.टी. (पठन हेतु)	• सामाजिकता, सृजनात्मकता
12.	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	साक्षात्कार	• वैज्ञानिक
*	अनोखा उपाय	कहानी (उपवाचक)	• मनोरंजन

7) पाठ की संरचना

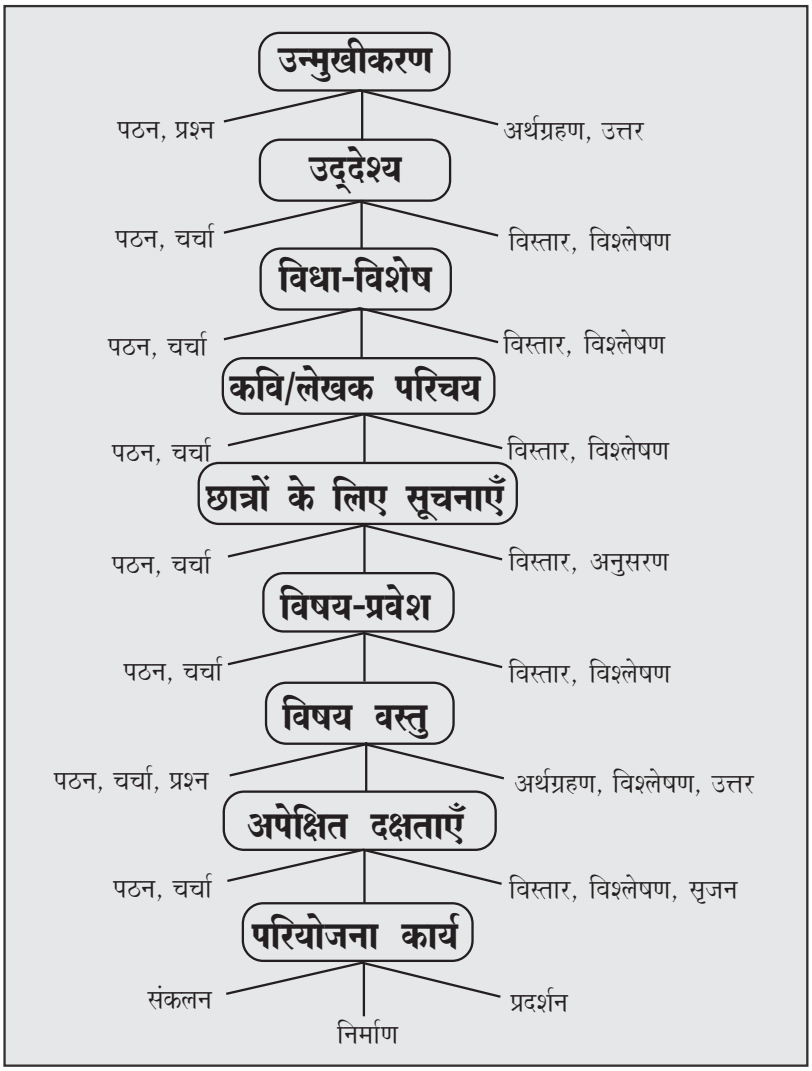

1) उन्मुखीकरण

(i) पाठ का आरंभ उन्मुखीकरण से होता है।

(ii) छात्रों को प्रेरणा देनेवाले अंशों के द्वारा पढ़ने वाले अंश की ओर रुचि पैदा करना इसका उद्देश्य है।

(iii) इसे पूर्व विषयवस्तु (Pre-Text) कहा जाता है।

(iv) इसमें कुछ प्रश्न दिये गये हैं - जिनके माध्यम से कक्षा में चर्चा कर विषय के प्रति अवबोधन करवाया जाय।

(v) उन्मुखीकरण के अंतर्गत दिये गये प्रश्नों के अलावा कुछ अन्य प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

2) उद्देश्य

(i) हर एक पाठ में विषयवस्तु के अनुसार उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

(ii) उद्देश्य के द्वारा बालकों में विषयवस्तु के बारे में अवबोध कराया जाता है।

(iii) बच्चों को पाठ पढ़ने से पहले ही उद्देश्य से अवगत कराने पर विषयवस्तु के प्रति रोचकता उत्पन्न कर सकते हैं।

3) विधा - विशेष

(i) पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार की विधाओं के आधार पर पाठ रखे गये हैं।

(ii) इसमें कविता, कहानी, निबंध, पत्र, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार आदि विधाओं पर पाठ दिये गये हैं।

(iii) बच्चों को साहित्य की विविध विधाओं से परिचय कराना इसका उद्देश्य है।

4) कवि परिचय/लेखक परिचय

(i) जहाँ तक हो सके लेखक व कवि के जीवन काल एवं उनके साहित्यिक कृत्यों पर प्रकाश डाला गया है।

(ii) दिये गये अंशों के अलावा अतिरिक्त बिंदुओं की जानकारी प्रदान करें।

5) छात्रों के लिए सूचनाएँ

(i) हर एक पाठ में इसकी विधा के अनुसार बच्चों के लिए सूचनाएँ दी गयी है।

(ii) ज्ञानात्मक चर्चा में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सूचनाएँ दी गयीं हैं।

(iii) इनके कारण छात्र अपने आपको अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

(iv) इसी को Cognitive Apprentiship कहते हैं जिसका अर्थ हैं- ज्ञानात्मक चर्चा में भाग लेना।

6) विषय प्रवेश

(i) इसमें पाठ के शिक्षण से पूर्व छात्रों को विषय के प्रति ज्ञान प्रदान करने के लिए पाठ का मूल प्रतिबिंब दर्शाया जाता है।

(ii) इसे Schema (विषय प्रवेश) कहते हैं। अर्थात् पढ़े जानेवाले अंश पर कल्पना करना और चर्चा में भाग लेने के लिए तैयार रहना इसका उद्देश्य है।

7) विषयवस्तु

(i) पाठ्यपुस्तक में हर एक पाठ गुणवत्तापूर्ण (Potential Text), क्षमतापूर्ण है।

(ii) हर एक विषय अर्थपूर्ण चर्चा करने के अनुकूल है।

8) अपेक्षित दशताएँ

- हर पाठ में शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्य दिये गये हैं।
- ये अभ्यास - कार्य तीन मुख्य शीर्षकों में विभाजित हैं -

I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया

II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

III भाषा की बात

I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया

⇒''अ'' उपशीर्षक के अंतर्गत सुनो-बोलो के प्रश्न हैं।

⇒''आ'' ''इ'' और ''ई'' के अंतर्गत पढ़ना - लिखना के प्रश्न है।

II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता**

⇒''अ'' के अंतर्गत स्वरचना - तीन - चार पंक्तियों में उत्तर लिखने से संबंधित प्रश्न

⇒''आ''के अंतर्गत स्वरचना - निबंधात्मक प्रश्न (5-8)

⇒''इ''के अंतर्गत सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रश्न हैं।

⇒''ई''के अंतर्गत प्रशंसा के प्रश्न हैं।

III **भाषा की बात**

''अ'' शब्द भंडार के प्रश्न।

''आ'' शब्द संबंधी व्याकरणांश के प्रश्न।

''इ'' शब्द संबंधी व्यावहारिक व्याकरण के प्रश्न।

''ई'' वाक्य संबंधी, व्यावहारिक व्याकरण के प्रश्न हैं।

9) परियोजना कार्य

- इस में उपर्युक्त तीन शैक्षिक मापदंडों से संबंधी कृत्य दिये गये हैं जो बच्चों को व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हैं। यह बात ध्यान में रखें कि परियोजना में तीन शैक्षिक मापदंडों का समावेश है, परियोजना कार्य शैक्षिक मापदंड नहीं है।
- परियोजना कार्य का उद्देश्य बच्चों के अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना और खोजबीन (सर्वेक्षण) जैसी भावनाओं का विकास करना है।

8) शैक्षिक मापदंड

नवीन पाठ्यपुस्तक का मूल उद्देश्य रटंत विद्या की समाप्ति है। ये पुस्तकें बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती हैं। आखिर इन पुस्तकों में ऐसे कौन से लक्षण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि ये अपने उपर्युक्त उद्देश्यों पर खरी उतरती हैं। इसकी प्रतिपुष्टि हमें इसमें निहित 'शैक्षिक मापदंडों' से होती है। ये शैक्षिक मापदंड बच्चों में सुनकर प्रतिक्रिया करने, धाराप्रवाह के साथ पढ़कर समझने, अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने, विभिन्न विधाओं का सृजन करने, किसी विषय या तथ्य का महत्व समझने, नए-नए शब्दों की जानकारी और उनका वाक्यों में प्रयोग करने तथा व्यावहारिक रूप में व्याकरण अंशों को समझने जैसी विभिन्न क्षमताओं का विकास करने में सहायक हैं।

शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्य इस प्रकार हैं -

I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता III भाषा की बात

9) पाठ्यपुस्तक में परियोजना

बच्चों के अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ने तथा बच्चों को निरीक्षण और खोजबीन (सर्वेक्षण) जैसी भावनाओं के विकास के लिए नवीन पाठ्यपुस्तक में परियोजना कार्य जोड़े गये हैं। इनमें विभिन्न विषयों से संबंधित अलग-अलग परियोजना कार्य दिये गये हैं जो सर्वेक्षण, संकलन, संग्रहण और प्रस्तुतीकरण की क्षमताओं का विकास करते हैं। उदा :-

1) प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रहण कीजिए।

2) शांती के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।

3) 'जल संरक्षण' पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

परियोजनाएँ दो प्रकार की हैं - वैयक्तित परियोजना और सामूहिक परियोजना। बच्चों के परियोजना कार्यों का आकलन समाचार संकलन, प्रतिवेदन लेखन तथा प्रस्तुतीकरण के आधार पर करना चाहिए।

क्रम संख्या	**पाठ का नाम**	**परियोजना कार्य**
1.	बरसते बादल	प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए।
2.	ईदगाह	वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर सम्मान के प्रति कोई कहानी लिखिए।
3.	हम भारतवासी	शांति के पथ पर समर्पित किसी महान् व्यक्ति जानकारी इकट्टा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
4.	कण-कण का अधिकारी	विश्व श्रम दिवस के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
5.	लोकगीत	पाठ में दिए गए चित्र के आधार पर भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा एक प्रहसन नाटक अपने पुस्तकालय व अन्य स्त्रोतों से इकट्ठा कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
6.	अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	पहले पाठ से पाँचवे पाठ तक आए चित्रों में अपने मनपसंद चित्र के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
7.	भक्ति पद	भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती है। इस भावना को दर्शाने वाली किसी कविता का संग्रह कीजिए।
8.	स्वराज्य की नींव	देशभक्ति से संबंधित किसी एकांकी का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।
9.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा-वृत्तान्त विधा की जानकारी प्राप्त कीजिए। उसकी सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।
10.	नीति दोहे	पाठ-पुस्तक में आए नीति वाक्यों में आपको मनपसंद 10 नीति वाक्यों की सूची बनाइए।
11.	जल ही जीवन है	जल संरक्षण पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
12.	धरती के सवाल अंतरिक्षके जवाब	छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्य पुस्तकों के मुख पृष्ठों में (कवर-पेज) आपको कौनसा मुख पृष्ठ बहुत अच्छा लगता है? अपने विचार लिखिए।

परियोजना कार्य का आयोजन

- पाठयोजना कार्य 5 वें कालांश में गृहकार्य के रूप में दें।
- परियोजना कार्य को कक्षा-कक्ष में पढ़वायें।
- परियोजना कार्य कैसे किया जाय, इसके बारे में समझायें।
- समाचार एकत्र करना, संबंधित स्त्रोतों की जानकारी दें।
- समाचार एकत्र करने के लिए आवश्यक प्रश्नवाली बनायें।
- परियोजना कार्य को समूह में बाँटें, और किसे करना है इसकी सूचना दें।
- जो समाचार एकत्र किया गया है, उस पर प्रतिवेदन बनाने के लिए सूचनाएँ दें।
- अंतिम कालांश में परियोजना कार्य का प्रदर्शीन करवायें। (प्रतिवेदन सामूहिक या वैयक्तिक रूप से पढवाएँ)
- भाव, विषय, वाक्य निर्माण, शब्दविन्यास, अक्षर-दोष इन पर चर्चा करते हुए प्रतिवेदन सुधारें।
- अंत में इस परियोजना कार्य द्वारा अध्यापक प्रश्न पूछें।
- उपरोक्त अंशों के आधार पर छात्रों को अंक प्रदान करें।

अंक विभाजन - सूचक

- समाचार एकत्र करना - 1 अंक
- प्रतिवेदन लिखना - 2 अंक
- प्रदर्शन या प्रतिक्रिया - 2 अंक

Note : रचनात्मक मूल्यांकन में परियोजना कार्य एक अंश है। इसके लिए एक नोट बुक रखी जाय। कोई अधिकारी या जांचकर्ता आने पर उन्हें परियोजना कार्य पुस्तिका दिखायें।

10) पाठ्यपुस्तक के चित्र

पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र बच्चों को सोचने के लिए प्रेरित करने वाले हैं। चित्रों का पाठ की अर्थग्राह्यता में महत्वपूर्ण स्थान होता है। यही कारण है पुस्तक में हर चित्र बहुत ही सोच-समझकर दिया गया है। अतः अध्यापकों को चाहिए कि वे इन चित्रों का सदुपयोग करते हुए छात्रों से इन पर बातचीत करवाएँ। इससे छात्र सोचने-समझने का प्रयास करते हुए पाठ के बारे में अवधारणा बना सकेंगे। चित्रों के माध्यम से छात्रों से चर्चा करवाएँ। चित्र दिखाकर पहले संज्ञा शब्द बताने हेतु प्रेरित करने वाले प्रश्न पूछें। तत्पश्चात क्रिया संबंधी शब्द पूछें और अंत में संज्ञा और क्रिया शब्दों को जोड़कर वाक्यों से संवाद की ओर ले जाने वाले प्रश्न पूछें। ऐसा करने पर ही पाठ का उद्देश्य सफल हो सकता है।

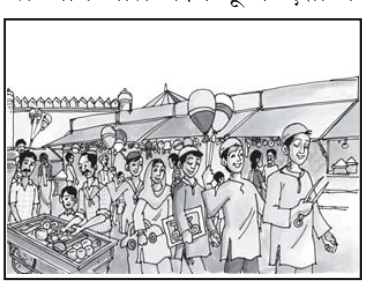

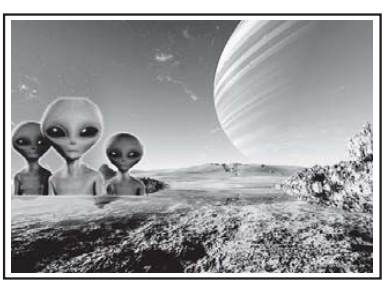

11) नीति वाक्य

आज का समाज तीव्र गति से विकास कर रहा है। इसी विकास के क्रम में व्यक्ति जहाँ नये-नये ग्रहों की खोज में लगा है, वहीं वह नैतिक मूल्यों से दूर होता जा रहा है। यही कारण है कि पुस्तकों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का विकास किया जा रहा है। यदि आप दसवीं कक्षा की पुस्तक देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि हर पृष्ठ पर महापुरुषों व महाग्रंथों का एक-एक नीति वाक्य दिया गया है। इन नीति वाक्यों के पढ़ने से मन में शुद्धता और आचरण में सद्परिवर्तन लाने की इच्छा जागृत होती है। पुस्तक के अंत में छात्रों को स्वयं एक नीति वाक्य बनाने के लिए रिक्त स्थान दिया गया है। यदि एक वर्ष में सभी छात्र अपनी ओर से एक-एक नीति वाक्य भी बनाते हैं तो वर्ष के अंत में लगभग औसतन दस लाख नीति वाक्य बनेंगे। यही प्रक्रिया अगले दस वर्षों तक चली तो अमूमन एक करोड़ नीति वाक्य बन जाएँगे। इस तरह नीति वाक्य बना पाने वाला छात्र आगे जाकर न केवल स्वयं को बल्कि दूसरों को भी नैतिक मूल्य बाँटने में सक्षम होकर उस पर अमल करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। ऐसा होने पर ही पुस्तक में दिये गये नीति वाक्यों का उद्देश्य सफल होगा। आशा करते हैं कि सभी अध्यापक इस मर्म को जानकर अपने छात्रों को प्रेरित कर उन्हें न केवल नैतिक वाक्य लिखने बल्कि नैतिक रूप से सक्षम बनने में भी सहायता करेंगे।

पुस्तक में दिये गये कुछ नैतिक वाक्य-

- **सौंदर्य का आदर्श सादगी और शांति है। - गेटे**
- **मन को पवित्र रखना ही सबसे बड़ा धर्म है। - कबीरदास**
- **विश्वास मैत्री का मुख्य अंग है। - प्रेमचंद**
- **अपना सामर्थ्य ही सबसे श्रेष्ठ बल है। - मनुस्मृति**

12) शब्दकोश

पाठ्यपुस्तक में शब्दकोश के लिए दिये गये दो पृष्ठ (पृष्ठ संख्या-77, 78) केवल नाममात्र के लिए है। इन दो पृष्ठों का उद्देश्य यह है कि अध्यापक पुस्तक में आये नये शब्दों के लिए छात्रों को बड़े से बड़े और अलग-अलग शब्दकोश से जोड़ने का प्रयास करें। पुस्तक में यदि सभी नये शब्दों के लिए शब्दकोश बना दिया जाए तो छात्र बाह्य शब्दकोशों से नहीं जुड़ पायेंगे। शब्दकोश का उद्देश्य खोजबीन कर शब्द का अर्थ पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस तरह पता लगाये गये अर्थ बहुत दिनों तक काम आते हैं। सी.सी.ई. के अनुसार छात्र किसी भी ज्ञान का निर्माण रटकर नहीं करना चाहिए, बल्कि पता लगाकर करना चाहिए। यही कारण है कि पुस्तक में शब्दकोश नाममात्र के लिए दिया गया है। आशा है कि सभी अध्यापक इस बात को समझने का प्रयास करेंगे।

13) नागरिकों के मूल कर्तव्य

पाठ्यपुस्तक के अंत में यानी मुखपृष्ठ के पिछले हिस्से में ''भारत का संविधान, भाग-क, नागरिकों के मूल कर्तव्य'' शीर्षकीय अंश दिया गया है। एनसीएफ-2005 के अनुसार हमारी पाठ्यपुस्तकों व पाठ्यक्रमों का अंतिम उद्देश्य छात्रों को आदर्श नागरिक बनाना है। यही कारण है छठवीं कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा के सभी पाठ्यपुस्तकों के अंत में ''नागरिकों के मूल कर्तव्य'' शीर्षकीय सामग्री दी गयी है। अतः सभी अध्यापकों को चाहिए कि वे पाठ्यपुस्तक में दिये गये पाठों का शिक्षण छात्रों को आदर्श नागरिक बनाने के अनुरूप करें। तभी पाठ्यपुस्तक में दिये गये ''नागरिकों के मूल कर्तव्य'' पृष्ठ का उद्देश्य सार्थक हो सकता है।

14) मूल्यांकन

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक में परिवर्तन के साथ ही मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवर्तन देखने को मिलते हैं। नवीन मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों का मूल आधार है। सतत् समग्र मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को बोझरहित बनाना है। और मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम के अंतर्गत लाना है। इसके लिए यह छात्र की अपेक्षित दक्षताओं और उनकी समग्रता के आधार पर आकलन पर बल देता है।

इससे पूर्व जो आकलन किया जाता था वह इकाई परीक्षा के रूप में (वर्ष में चार बार) और सत्र परीक्षा के रूप में (वर्ष में तीन बार) किया जाता था। यह मूल्यांकन छात्रों की सभी क्षमताओं के आकलन में असमर्थ दृष्टिगोचर होता था। एक इकाई परीक्षा के पश्चात् फिर से आकलन अगली इकाई परीक्षा में ही होता था। बीच में किसी प्रकार का आकलन नहीं किया जाता था। किंतु सतत् समग्र मूल्यांकन की प्रणाली को अपनाने से बालकों की सभी क्षमताओं के निरंतर आकलन में आसानी हो गयी है। हमारी पाठ्यपुस्तक का हर पाठ आरंभ से लेकर (उन्मुखीकरण) अंत (परियोजना कार्य) तक इसी पर आधारित है।

15) नवीन पाठ्यपुस्तक के संसाधन

- शब्दकोश
- लोकगीत
- ग्रामीण जीवन की जानकारी
- निबंध पुस्तकें
- मुहावरे व लोकोक्ति, सूक्तिकोश
- देशभक्ति गीत
- कहानियाँ - वर्षा - बादल संबंधी
- वैज्ञानिक संबंधी विषयों की जानकारी
- महापुरुषों की जीवनियाँ
- जीवन संघर्ष की कहानियाँ
- स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र एवं जीवनियाँ
- पर्यावरण संरक्षण, जागरुकता संबंधी नारें, कथाएँ, लेख, गीत, कविता आदि
- बधाई संदेश (ग्रीटिंगकार्ड), प्रशंसा पत्र आदि बनाने की जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- भारत के दर्शनीय स्थलों की जानकारी से संबंधित पत्रिकाएँ और पुस्तकें
- नदियों के बारे में जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- पेड़-पौधों की कविताएँ, गीत, चित्र
- राष्ट्रीय एवं धार्मिक त्यौहारों से संबंधित पुस्तकें
- चित्रकला और कलाकारों के बारे में जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- प्राकृतिक सौंदर्य के चित्र (सूर्योदय, सूर्यास्त, हरितप्रदेश आदि)
- कृषक जीवन की कथाएँ, प्रदर्शन संबंधी विवरण

अध्याय –II

पाठ्यांश व शैक्षिक मापदंड

इकाई-I

1. **बरसते बादल** (कविता) *सुमित्रानंदन पंत*
2. **ईदगाह** (कहानी) *प्रेमचंद*
- **यह रास्ता कहाँ जाता है?** (पठन हेतु) *बाबू रामसिंह*
3. **हम भारतवासी** (कविता) *आर.पी.'निशंक'*
- **शांति की राह में** (उपवाचक-निबंध) *संकलित*

इकाई-II

4. **कण-कण का अधिकारी** (कविता) *डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'*
5. **लोकगीत** (निबंध) *भगवतशरण उपाध्याय*
- **उलझन** (पठन हेतु कविताएँ)
6. **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी** (पत्र) *संकलित*
- **दो कलाकार** (उपवाचक - कहानी) *मन्नू भंडारी*

इकाई-III

7. **भक्ति पद** (कविता) *रैदास, मीराबाई*
8. **स्वराज्य की नींव** (एकांकी) *विष्णु प्रभाकर*
- **माँ मुझे आने दे!** (पठन हेतु कविता) *मृदुल जोशी*
9. **दक्षिणी गंगा गोदावरी** (यात्रा-वृत्तांत) *काका कालेलकर*
- **अपने स्कूल को एक उपहार** (उपवाचक-कहानी) *ऋतु भूषण*

इकाई-IV

10. **नीति दोहे** (कविता) *रहीम, बिहारी*
11. **जल ही जीवन है** (कहानी) *श्री प्रकाश*
- **क्या आपको पता है?** (पठन हेतु पी.पी.टी. निबंध) *जेफ ब्रेनमन*
12. **धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब** (साक्षात्कार) *संकलित*
- **अनोखा उपाय** (उपवाचक-अनूदित कहानी) *डॉ. रावूरि भरद्वाज*

1) **अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड)**
2) **शैक्षिक मापदंड - संचालन**
3) **शैक्षिक मापदंड - मूल्यांकन**

शांति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है। – चाणक्य

इकाई - I

1. बरसते बादल

- सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण

यह कविता पाठ प्रकृति से संबंधित है। इसीलिए उन्मुखीकरण प्रसंग के अंतर्गत प्रकृति से संबंधित काव्यांश लिया गया है। इस उन्मुखीकरण का मुख्य उद्देश्य बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्य भाव को उत्पन्न करना है। इसके द्वारा वर्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

- प्रकृति से संबंधित कविताओं को पढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना।
- सौंदर्य बोध कराना।
- मनोरंजन की भावना जगाना।
- प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रेरित करना।

विधा विशेष

- यह गेय कविता पाठ है।
- कविता में लय, ताल, भाव का महत्व बतलाना चाहिए।

कवि परिचय

- सुमित्रानंदन पंत जी का जन्म 20 मई, 1900 को उत्तराखंड के कौसानी-अल्मोडा में हुआ। पिता का नाम पं. गंगादत्त और माता का नाम सरस्वती देवी है। सात वर्ष की उम्र में स्कूल में काव्य पाठ के लिए पुरस्कृत किये गये। साहित्य लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ और सोवियत रूस पुरस्कार दिया गया। इस तरह पंत जी के जीवन एवं साहित्य संबंधी विषयों की जानकारी बच्चों को दें।

विषय वस्तु

- वर्षा ऋतु में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन
- झम-झम-झम (बादल), छम-छम-छम (बूंदे)
  चम-चम-चम (बिजली), थम-थम (सपने) आदि ध्वन्यात्मक शब्दों का सुंदर प्रयोग।
- टर-टर (मेंढ़क), म्यव-म्यव (मोर)
  पीउ-पीउ (चातक), झन-झन (झिंगुर) की
  आवाज़ों का वर्णन।
- सोनबालक - एक प्रकार के जलपक्षी की प्रसन्नता का वर्णन। इस पक्षी की विशेषता यह है कि यह वातावरण में जल की आर्दता को भाँप लेता है। वर्षा की सबसे पहली सूचना इस पक्षी से मिलती है।
- रिमझिम-रिमझिम वर्षा की बूँदों की आवाज़ से धरती के कोने-कोने में प्रसन्नता व्याप्त हो जाती है।
- 'सावन' (श्रावण) के महीने का सुंदर वर्णन किया गया है।

विशेष सूचना :

इंटरनेट में यूट्यूब में जाकर **"scert hindi hyderabad - Baraste badal "** टंकण (टाइप) करने से आप इसका वीडियो व आडियो देख सकते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
1.	**बरसते बादल** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. प्रकृति से संबंधित किसी भी अंश के बारे में अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. वाक्य उचित क्रम में लिख सकेंगे। 2. भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे। 3. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. प्रकृति सौंदर्य पर एक छोटी सी कविता लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. दिये गये विषय पर अपने विचार बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 3. शब्दों के तत्सम रूप लिख सकेंगे। 4. शब्दों के तद्भव रूप लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 2. शब्द का पद परिचय दे सकेंगे। 3. समास पहचान सकेंगे। 4. क्रिया शब्दों का वाक्य प्रयोग करेंगे।

2. ईदगाह - *प्रेमचंद*

उन्मुखीकरण - यह कहानी विश्व की दस श्रेष्ठतम कहानियों में से एक है। इस कहानी में वयोवृद्धों के प्रति दर्शाया गया प्रेम अवर्णनीय है। छात्रों में भाषा विकास के लिए यहाँ तीन प्रश्न दिये गये हैं जिनके माध्यम से बालकों में नैतिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं।

उद्देश्य -
- कहानी विधा की भाषा शैली से परिचय करवाना।
- छात्रों में कहानी लेखन कला का विकास करना।
- बुजुर्गों के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना का विकास करना।

विधा विशेष - यह एक कहानी पाठ है। अतः कहानी के तत्व, प्रकार, लक्षण आदि से छात्रों को परिचय करवाना चाहिए। कथोपकथन, प्रभावशाली है, वातावरण का सजीव चित्रण है।

लेखक परिचय -
- प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 ई में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के लमही नामक गाँव में हुआ।
- इनका असली नाम धनपतराय श्रीवास्तव था।
- उर्दू में गुलाबराय और हिंदी में प्रेमचंद नाम से लेखन कार्य किया।
- प्रेमचंद का निधन 8 अक्तूबर, 1936 को हुआ।
- इनकी कहानियाँ 'मानस सरोवर' शीर्षक से 8 खंडों में संकलित हैं।
- इनकी भाषा मुहावरेदार, ग्रामीण व आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की ओर प्रेरित करने वाली है।

प्रेमचंद के जीवनकाल का परिचय और उनकी साहित्य सेवा संबंधी जानकारी दें।

विषय वस्तु
- ईद के सुनहरे दिन का वर्णन।
- त्यौहार के दिन बच्चों में उमड़े उमंग और उत्साह का वर्णन।
- हामिद की स्थिति का विश्लेषण।
- अमीना की निस्सहायता और अशक्तता का वर्णन।
- शहर का वातावरण, ईदगाह और इसके आस पास के मेले और बाज़ार का चित्रण।
- मेले में बिकनेवाली तरह-तरह की मिठाइयों का, खिलौनों का विवरण।
- मासूम बच्चे हामिद के दिल में दादी के प्रति प्रेम की भावना।
- बच्चों द्वारा हामिद का मज़ाक उड़ाना।
- दादी का क्रोध प्रेम में बदलना।
- बालक के त्याग, सद्भाव और विवेक की प्रशंसा।

विशेष सूचना :

दूरदर्शन चैनल द्वारा प्रेमचंद की कहानी ''ईदगाह'' का सीरियल के रूप में प्रसारण हो चुका है। इस सीरियल को आप इंटरनेट में यूट्यूब के माध्यम से **"Idgah"** टंकण (टाइप) करने से आप इसे देख सकते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
2.	**ईदगाह** (कहानी)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. कहानीकार के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. पाठ के पात्रों बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. ''हाँ'' या ''नहीं'' में उत्तर दे सकेंगे। 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कर सकेंगे। 3. अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. किसी घटना को संवाद रूप में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 3. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 4. वचन बदल सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. 'उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे। 2. भाववाचक संज्ञा रूप लिख सकेंगे। 3. कारक चिह्नों को पहचान सकेंगे। 4. काल के अनुसार वाक्य बदल सकेंगे। 5. मुहावरे पहचान कर अर्थ बता सकेंगे और वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

3. हम भारतवासी

- आर.पी. निशंक

उन्मुखीकरण

विभिन्नता में एकता भारत की एक विशेषता है। अनेक धर्म, जाति और वेश-भूषा के लोग रहते हैं। इसके बावज़ूद भी सब लोग मिलजुल कर रहते हैं। इस उन्मुखीकरण प्रसंग द्वारा विभिन्नता में एकता के भाव को जागृत करने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य

- बच्चों में नयी कविताओं और गीतों के सृजन की क्षमता का विकास करना।
- श्रद्धा, प्रेम, सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण, विश्वबंधुत्व और विश्वशांति जैसे सद्गुणों का विकास करना।
- 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना का विकास करना।

विधा विशेष

- यह गेय कविता है।
- इस कविता से छात्रों में देशभक्ति और विश्वबंधुत्व की भावना जागृत होती है।
- यह एक प्रेरणाप्रद गीत है।

कवि परिचयः-

- रमेश पोखरियाल ''निशंक'' का साहित्य अधुनिक काल से संबंधित है। वे उत्तराखंड के भूतपूर्व मूख्यमंत्री भी रह चुके हैं। इनकी रचनाओं में समर्पण, नवंकुर, मुझे विधाता बनना है आदि प्रसिद्ध हैं।

विषय वस्तु

- भारतवासियों में श्रद्धा और प्रेम जैसे अद्भुत गुण हैं।
- भारतवासी 'नफ़रत का कुहासा तोड़ना' अर्थात् घृणा जैसी भावनाओं को दूर करना चाहते हैं।
- भारतवासी ऊँच-नीच का भेद मिटाकर नफ़रत, निराशा आदि भावनाओं को दूर कर संसार को जागृत करते हैं।
- भारतवासी उलझन में उलझे लोगों को सही मार्गदर्शन कर उनके जीवन में खुशियाँ लाना चाहते हैं।
- संसार में व्याप्त सारे द्वेष मिटाकर सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि भावनाओं को विकसित कर इस दुनियाँ को स्वर्ग बनाना चाहते हैं।
- 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को स्थापित कर विश्वबंधुत्व की भावना का प्रसार करना चाहते हैं।

विशेष सूचना

यह गीत Internet के सहारे Youtube में वीडियों के रूप में देखा जा सकता है। Youtube में देखने के लिए कृपया टाइप करें- "rankers hum" ऐसा करने मात्र से आप आसानी से इस गीत का वीडियो व आडियो लुत्फ उठा सकते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
3.	**हम भारतवासी** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. गीत के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. दुनिया को पावन धाम बनाने के लिए हमें क्या करना है बता सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पद्यांश पढ़कर मुख्य शब्द पहचानकर लिख सकेंगे। 2. भाव से संबंधित पंक्तियाँ कविता में ढूँढ़कर लिख सकेंगे। 3. गद्यांश पढ़कर सही उत्तर पहचान सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. धरती को स्वर्ग बनाने में हम क्या सहयोग दे सकते हैं इसके बारे में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. साक्षात्कार में पूछे जानेवाले प्रश्नों की सूची तैयार कर सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. हमारे जीवन में सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का महत्व बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 3. वचन बदल सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. शब्दों के वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 4. क्रिया शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे। 5. मुहावरे पहचान कर अर्थ बता सकेंगे और वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

इकाई -II

4. कण-कण का अधिकारी

- डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'

उन्मुखीकरण

यह कविता पाठ में श्रमिकों का जीवन चित्रण है। श्रम ही गांधीजी के जीवन का मूल सूत्र रहा है। उनके जीवन के द्‌वारा श्रम का महत्व बताना चाहिए। श्रमिक जीवन के प्रति बालकों में आदर और सम्मान की भावनाओं को जगाना इस उन्मुखीकरण गीत का उद्‌देश्य है। यहाँ उन्मुखीकरण में तीन प्रश्न दिए गए हैं।

इन प्रश्नों के अलावा कुछ अन्य प्रश्न भी पूछते हुए बातचीत कर सकते हैं।

उद्‌देश्य

- बच्चों में सामाजिक समस्याओं के प्रति एक निश्चित धारणा पैदा करना।
- करुणा, उदारता, श्रम-सहिष्णुता आदि सद्‌भावों को जगाना।

विधा विशेष

- इस कविता पाठ में ओजपूर्ण और प्रेरणाप्रद भाषा का प्रयोग है।
- यथार्थवादी जीवन का विश्लेषण किया गया है।

कवि परिचय

- डॉ. रामधारी सिंह जी का जन्म बिहार के मुंगेर में हुआ था।
- दिनकर की भाषा ओजपूर्ण है।
- इनकी कविताओं में विचार और संवेदना का सुंदर समन्वय दिखायी देता है।
- इन विषयों के अलावा दिनकर जी के जीवन एवं साहित्यिक विशेषताओं की जानकारी दें।

विषयवस्तु

- भाग्यवाद की आड़ में कुछ लोग पाप से जमा किया हुआ धन भोगते हैं।
- मानव का निरंतर परिश्रम ही नर समाज का भाग्य है।
- सारा विश्व उसके भुजबल के सामने झुक गया है।
- श्रमिकों की उन्नति ही देश की उन्नति है।
- मेहनत करने वालों को ही सुख पाने का अधिकार है।
- इस प्रकृति में जो भी है वह प्रकृति का धन है।
- जन-जन ही कण-कण के अधिकारी हैं।

विशेष सूचना :

इंटरनेट में यूट्‌यूब में जाकर **"scert hindi hyderabad - Kan kan ka adhikari "** टंकण (टाइप) करने से आप इसका वीडियो व आडियो देख सकते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
4.	**कण-कण का अधिकारी** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. भाग्य और कर्म की श्रेष्ठता के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. श्रम के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 2. भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे। 3. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. 'श्रम ही जीवन की सफलता का मार्ग है। इस पर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्यायी शब्द लिख सकेंगे। 3. विलोम शब्द लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. पद परिचय दे सकेंगे। 4. कारक चिह्न पहचान सकेंगे। 5. संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग कर सकेंगे। 6. उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे। 7. लिंग बदलकर वाक्य लिख सकेंगे।

5. लोकगीत

- भगवतशरण उपाध्याय

उन्मुखीकरण - यह पाठ लोकगीतों की जानकारी से संबंधित है। इसमें छोटी सी कविता के माध्यम से लोकगीत का परिचय दिया गया है। लोकगीतों पर चर्चा के द्वारा पाठ की ओर अग्रसर होना चाहिए। इस संबंध में मेहंदी किन-किन अवसरों में लगाई जाती है विभिन्न धर्मावलंबियों के द्वारा उन पर कौन-कौन से गीत गाये जाते हैं - इन अंशों पर कक्षा में चर्चा करवायी जाय।

उद्देश्य -
- निबंध विधा से अवगत कराना।
- लोकगीतों के संग्रहण एवं सृजन के लिए बच्चों को प्रेरित करना।

विधा विशेष - यह पाठ निबंध विधा में है। निबंध का अर्थ है - ''बाँधना'' । सुंदर और उचित शब्दों के द्वारा भावों की प्रस्तुति ही निबंध है। निबंध लेखन शैली का ज्ञान देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

लेखक परिचय - इस निबंध के लेखक श्री भगवतशरण उपाध्याय हैं। इनका जन्म 1910 में हुआ। विश्व साहित्य की रूपरेखा, कालिदास का भारत, ठूँठा आम, गंगा गोदावरी आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

विषयवस्तु

- **शास्त्रीय संगीत -** किसी भी वाद्य (सितार, वीणा आदि) की सहायता से सुर और ताल में गीत।
- **लोकगीत -** जनता के द्वारा सामान्य बोलचाल की भाषा में गाये गये गीत।
- **बोली -** किसी क्षेत्र विशेष की सामान्य बोलचाल की क्षेत्रीय भाषा।
- **विवाह के मटकोड :** विवाह के समय सजने-सँवरने ने के तरीके।
- **चैता, कजरी, बारहमासा, सावन -** ऋतुओं पर आधारित लोकगीत।
- **सिरजती -** सृजन करती है।
- **अपने-अपने विद्यापति -** प्रत्येक प्रदेश के लोकगीत के रचयिता अलग-अलग हैं जैसे - पूरब के विद्यापति मैथिल - कोकिल हैं।
- **ज्यौनार -** दावत
- **उद्दम -** बंधन रहित, स्वतंत्र
- **झांझ -** गोलाकार पीतल के टुकडे का जोडा जिसके परस्पर प्रहार से ध्वनि निकलती है।
- **गढ़वाल, किन्नौर, काँगडा -** पहाडी प्रांत जो हिमाचल प्रदेश एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश से लगे हुए हैं।
- **कहरवा -** पाँच भाषाओं मात्राओं का एक ताल (नाच या गाना जो इस ताल पर होता है।)
- **बिरहा -** पूर्वी उत्तर प्रदेश में गाये जानेवाला एक प्रकार का गीत।
- **सारंग -** ओडव जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है।
- **बिदेशिया -** विदेशी
- **आल्हा -** 31 मात्राओं का एक छंद, पृथ्वीराज चौहान के समकालीन एक बुंदेल खंड वीर।
- **बखान -** वर्णन, प्रशंसा
- **कजरी -** एक प्रकार का गीत जो मुख्य रूप से बरसात के समय गाया जाता है।
- **उद्दाम जीवन -** बंधन रहित जीवन, निरंकुश जीवन

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
5.	**लोकगीत** (निबंध)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. विभिन्न मनोरंजन के साधनों पर चर्चा कर सकेंगे। 2. हिंदी या अपनी मातृभाषा का कोई लोकगीत सुना सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. वाक्य उचित क्रम में लिख सकेंगे। 2. गद्यांश पढ़कर मुख्य शब्द पहचान सकेंगे। 3. लोकगीत पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. किसी भी विषय वस्तु का हिंदी में अनुवाद कर सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. ग्रामीण जनता की मार्मिक भावनाओं को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्यायवाची शब्द लिख सकेंगे। 3. विलोम शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 4. वचन बदल कर लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. लिंग बदलकर वाक्य बना सकेंगे। 2. 'इक' प्रत्यय जोड़कर शब्द बना सकेंगे। 3. शब्दों के अर्थ में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 4. क्रिया का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे। 5. प्रश्नार्थक वाक्य बना सकेंगे।

6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

उन्मुखीकरण

यह पाठ हिंदी भाषा से संबंधित है। इस अनुच्छेद के द्वारा भाषा को परिभाषित करने का प्रयत्न किया गया है। पशु-पक्षी भी तरह-तरह की आवाज़ों के द्वारा अपनी भावनाओं को दर्शा सकते हैं। इसमें तीन प्रश्न दिए गए हैं जिनके माध्यम से भाषाओं को लेकर कक्षा-कक्ष में चर्चा आयोजित करें।

उद्देश्य

- भाषा का महत्व समझाना
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व बताना।
- हिंदी के प्रचार व प्रसार के द्वारा भारतीय सभ्यता एवं गरिमा को दुनिया में फैलाना।

विधा विशेष

- पत्र लेखन गद्य की एक प्रमुख विधा है।
- सरल, प्रवाहपूर्ण शब्दों के द्वारा भाव अभिव्यक्तिकरण इस विधा का प्रमुख उद्देश्य है।

विषय वस्तु

- 1975 ई. में महाराष्ट्र के नागपुर में 10 जनवरी से 14 जनवरी तक विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया था।
- हर वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- राज भाषा -

  किसी भी देश में प्रचलित वह भाषा जिसका उपयोग प्रायः सभी राजनैतिक कार्यों और न्यायालयों आदि में होता है। किसी भी भाषा को राजभाषा का स्थान पाने के लिए संविधान के द्वारा मान्यता मिलना ज़रूरी है।
- केंद्रीय हिंदी संस्थान का मुख्यालय आगरा में है।
- भारत में हिंदी के प्रचार व प्रसार में इस संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान है।
- अन्य हिंदी संस्थान - मुख्यालय

  1. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा - चेन्नै
  2. हिंदी प्रचार सभा - हैदराबाद
  3. केरल हिंदी प्रचार सभा - एर्नाकुलम
  4. हिंदी साहित्य सम्मेलन - इलाहाबाद
  5. नागरी प्रचारिणी सभा - वाराणसी
- **प्रथम भाषा हिंदी -**

  हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में अपनाना।
- **द्वितीय भाषा हिंदी -**

  हिंदी को वैकल्पिक भाषा के रूप में अपनाना।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
6.	**अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी** (पत्र लेखन)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. विश्व भाषाओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कर सकेंगे। 2. हिंदी के महत्व के बारे में अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दे सकेंगे। 2. पाठ के आधार पर उचित क्रम में वाक्य लिख सकेंगे। 3. विज्ञापन पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. हिंदी के बारे में अपने विचार लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. हिंदी भाषा पर निबंध लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. हिंदी के महत्व, हिंदी भाषा सीखने से लाभ बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. वाक्य प्रयोग करते हुए पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. उपसर्ग और प्रत्यय पहचान सकेंगे। 3. कारक चिह्न पहचानकर लिख सकेंगे। 4. लिंग पहचानकर लिख सकेंगे। 5. शब्द संक्षेप कर सकेंगे। 6. शब्द विश्लेषण कर सकेंगे। 7. वाक्य रचना समझ सकेंगे।

7. भक्ति पद

उन्मुखीकरण

यह पाठ भक्ति व शिक्षा महत्व संबंधित पदों का है। इन पदों से छात्रों में भक्ति भावना जागृत कर सकते हैं। निराडंबर भक्ति भावना के द्वारा बच्चों में सामाजिक एवं मानव मूल्यों के प्रति अवबोध कराने का प्रयास किया गया। इसमें तीन प्रश्न दिये गये हैं जिनके द्वारा बालकों को सोचने की प्रेरणा दे सकें। इनके अलावा इन्हीं प्रकार के अन्य प्रश्न भी पूछते हुए कक्षा में चर्चा चलाई जा सकती है।

उद्देश्य

- छात्रों में प्राचीन साहित्य के प्रति रुचि जगाना।
- गुरु के माध्यम से भगवान को प्राप्त करने की प्रेरणा देना।
- प्रकृति के हर एक अंग में भगवान के दर्शन करना।

विधा विशेष

- यह प्राचीन पद्य साहित्य है।
- इसमें रैदास की चौपाई, मीराबाई का एक भक्ति पद है।
- ये चौपाई और पद रागात्मक रूप में गाये जा सकते हैं।

कवि परिचय

रैदास -

- यह ज्ञान मार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं।
- मूर्ति पूजा, तीर्थ यात्रा जैसे बाह्य आडंबरों का खंडन करते थे।
- व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे।

मीराबाई -

- मीरा भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा है।
- मीरा के पद गुजरात, बिहार और बंगाल तक प्रचलित हैं।
- मीरा की भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है।
- मीरा रैदास की शिष्या हैं।

विषय वस्तु

रैदास

- कवि अपने आराध्य देवता को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करते हैं। उनके प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजते वरन् उनके अपने अंतस में सदा विद्यामान रहते हैं। इनकी दृष्टि में प्रभु हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है।

मीराबाई

- मीराबाई के इस पद में गुरु की महिमा का वर्णन मिलता है। राम नाम रूपी रतन गुरु के द्वारा ही प्राप्त हुआ। सांसारिक सुखों को त्यागने पर ही यह राम नाम रूपी पूंजी प्राप्त होती है। यह एक ऐसी पूंजी है जिसे न चोर लूट सकते हैं और ना ही खर्च करने पर घटती है। यह दिन-ब-दिन बढ़नेवाली पूँजी है। सत्य रूपी नाव को खेनेवाले गुरू की सहायता से ही इस भवसागर को पार कर सकते हैं। मीरा हर्ष के साथ भगवान श्रीकृष्ण का यश गाती है।

विशेष सूचना :

इंटरनेट में यूट्यूब में जाकर **"scert hindi hyderabad - Prabhuji"** टंकण (टाइप) करने से आप इसका वीडियो व आडियो देख सकते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
7.	**भक्ति पद** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. विभिन्न कवियों की भक्ति भावना में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 2. भक्ति भावना के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. दिये गये वाक्यों को पाठ के आधार पर उचित क्रम में लिख सकेंगे। 2. अपठित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. मीरा के पद का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. भक्ति भावना से संबंधित कविता का सृजन कर सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1. भक्ति साहित्य की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों के वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 3. वर्तनी शुद्ध कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों के तत्सम रूप लिख सकेंगे। 2. शब्दों के अर्थ लिख सकेंगे। 3. वचन बदलकर वाक्य फिर से लिख सकेंगे। 4. पाठ के आधार पर उचित शब्द लिख सकेंगे।

8. स्वराज्य की नींव

-विष्णु प्रभाकर

उन्मुखीकरण

यह एक एकांकी पाठ है। एक आदर्श नेता ही एक श्रेष्ठ शासक बन सकता है। सत्य, धर्म, अहिंसा जैसे उत्तम गुणों से पूर्ण राज्य की स्थापना करना शासक का मुख्य कर्तव्य है। इसके अंतर्गत कुल 3 प्रश्न दिये गये हैं। जिनके माध्यम से कक्षा में चर्चा का आयोजन किया जाए।

उद्देश्य

- इस पाठ के द्वारा छात्र में एकांकी भाषा व रचना शैली से अवगत कराना।
- छात्रों में देश भक्ति भावना का विकास करना।

विधा विशेष

- 'एकांकी' साहित्य की एक ऐसी विधा है जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है।
- एकांकी का अर्थ है एक अंकवाला।
- यह एकांकी पाठ एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है।

लेखक परिचय

- विष्णु प्रभाकर हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं।
- प्रेमचंद परंपरा के ''आदर्शोन्मुख यदार्थवादी'' लेखन में इनको मान्यता प्राप्त है।
- 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया है।

विषय वस्तु

- महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ रंग प्रवेश करती हैं।
- झांसी राज्य के लिए रानी अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार है।
- स्वराज्य प्राप्ति के लिए समाज में से छुआछूत और ऊँच-नीच की भेद-भावनाएँ मिटाने की आवश्यकता है।
- सफलता और असफलता दोनों भी भगवान पर निर्भर हैं।
- स्वराज्य की स्थापना के लिए ऐहिक सुखों का त्याग करना आवश्यक है।
- स्वराज्य प्राप्ति के लिए देशभक्तों की आवश्यकता है।
- आत्मविश्वास के साथ स्वराज्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होना चाहिए।

रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की कुछ विशेष जानकारी -

- रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19.11.1835 वाराणसी (भदोही) में हुआ।
- पति गंगाधर राव, पुत्र दामोदर राव, दत्तक पुत्र आनंद राव थे।
- माता - भगीरथी बाई, पिता मोरोपंत तांबे थे।
- अंग्रेज़ों से युद्ध करते हुए 18.6.1858 के दिन 'ग्वालियर' में वीर गति को प्राप्त हुई।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
8.	**स्वराज्य की नींव** (एकांकी)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. दिये गये वाक्य का भाव स्पष्ट कर सकेंगे। 2. स्वतंत्रता संग्राम के समय की परिस्थितियों के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 2. पाठ के आधार पर वाक्यों के आशय को स्पष्ट कर सकेंगे। 3. अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. स्वतंत्रता सेनानियों की देशभक्ति के बारे में अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त कर सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. एकांकी को कहानी के रूप में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1.साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 3. वचन बदल सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे। 2. कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदल सकेंगे। 3. जातिवाचक संज्ञाओं का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

9. दक्षिणी गंगा गोदावरी (यात्रा-वृत्तांत) *-काका कालेलकर*

उन्मुखीकरण - यह एक यात्रा-वृत्तांत पाठ है। एक छोटी सी कविता के माध्यम से उत्तुंग तरंगों वाली नदी का वर्णन किया गया है। स्कंद पुराण में नदियों की प्रशस्ति गायी गयी है।

उद्देश्य - छात्रों को यात्रा-वृत्तांत के बारे में बताना। नदियों के बारे में ज्ञान प्रदान करना। पुराणों पर आधारित कथाओं द्वारा नदियों के उद्गम का बोध कराना।

विधा विशेष- यह एक यात्रा-वृत्तांत है। इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने दर्शनीय स्थल संबंधित अपनी यात्रा की अनुभूतियों को रोचक एवं ज्ञानवर्धक ढंग से प्रस्तुत किया।

लेखक परिचय

- श्री काका कालेलकर ने गांधीजी के संपर्क में आने के बाद ही हिंदी लेखन का कार्य आरंभ किया।
- इन्होंने यायावार की तरह देश के कोने-कोने में भ्रमण किया।
- काका के लेखन की भाषा सरल, सरस, ओजस्वी और सारगर्भित है।
- विचार पूर्ण निबंध हो या यात्रा संस्मरण, सभी विषयों की तर्कपूर्ण व्याख्या काका की लेखन शैली की विशेषता रही है।

विषयवस्तु

- इस पाठ में पावन और पवित्र गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है।
- विशाल, सुंदर पाटवाली गोदावरी नदी का वर्णन।
- गोदावरी नदी की चंचलता का अद्भुत वर्णन किया गया।
- भँवरों का झूम-झूम मंडराना, खिल-खिलकर हँसने का वर्णन किया गया है।
- गोदावरी के टापू (चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थान - द्वीप) का वर्णन।
- गोदावरी धीर-गंभीर माता के रूप में प्रसिद्ध है। इसीलिए यह दक्षिणी गंगा कहलाती है।
- गोदावरी नदी के तट पर बनाये गए बाँधों का विवरण -

अ) काटन बैरेज - धवलेश्वरम् आ) श्रीरामसागर प्राजेक्ट - निज़ामाबाद

इ) बाबली प्राजेक्ट - निज़ामाबाद इ) त्रयंबकेश्वर बाँध - नासिक

- गोदावरी नदी के तट पर स्थित तीर्थस्थान -

अ) भद्राचलम - श्री राम मंदिर आ) कोटिपल्ली - सोमेश्वर मंदिर

इ) द्राक्षाराममम् - भीमेश्वर मंदिर ई) अमलापुरम - वेंकटेश्वर मंदिर

उ) अंतर्वेदी - लक्ष्मी नरसिंह मंदिर ऊ) बासरा - सरस्वती देवी मंदिर

- गोदावरी की लंबाई - 1465 कि.मी. है।
- गोदावरी का जन्म स्थान 'त्रियंबक-नासिक' जो महाराष्ट्र में है।
- आंध्र प्रदेश के उभय गोदावरी ज़िले से होते हुए अंतर्वेदी के समीप बंगाल की खाडी में विलीन हो जाती है।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
9.	**दक्षिणी गंगा गोदावरी** (यात्रावृत्तांत)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. विभिन्न नदियों के जल के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. किसी भी नदी का वर्णन अपने शब्दों में कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर हाँ या 'नहीं' में दे सकेंगे। 2. अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 3. एक अनुच्छेद के मुख्य शब्द पहचान सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. लेखक की भावनाओं को अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 3. 'गोदावरी को माता क्यों कहा गया'? इस बारे में अपने विचार लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1.लेखक की यात्रा-वृत्तांत के अनुभवों की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्द का वाक्य प्रयोग कर पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों का संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. कारक चिह्नों के बारे में समझ सकेंगे। 4. अकर्मक व सकर्मक क्रियाँए पहचान सकेंगे।

इकाई - IV

10. नीति दोहे

उन्मुखीकरण

नैतिक भावनाओं से संबंधित पाठ होने के कारण नैतिक भावना से ओत-प्रोत पंक्तियाँ ली गयी हैं। इनसे छात्रों को नैतिक गुणों की प्रेरणा देते हुए नम्रता व मधुरवाणी के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। नैतिक गुणों से संबंधित प्रश्न पूछते हुए छात्रों द्वारा दिये गये उत्तरों के द्वारा उनमें नैतिक गुणों का विकास और नीति संबंधी विषय जानने की जिज्ञासा जागृत करें। छात्रों में भाषा विकास के लिए यहाँ मुख्यतः तीन प्रकार के प्रश्न पूछे गये हैं। वे - संज्ञानात्मक, क्रियात्मक, विचारात्मक प्रश्न हैं। इनके अलावा इन्हीं प्रकार के अन्य प्रश्न भी पूछते हुए बातचीत कर सकते हैं।

उद्देश्य

- यहाँ छात्रों को केवल - दोहा किसे कहते हैं? उसके लक्षण क्या होते हैं? का परिचय मात्र देना है। छंद व उसके प्रकारों का संपूर्ण विवरण देना आवश्यक नहीं है।

विधा विशेष

- पद्य साहित्य में 'दोहा' शैली के बारे में बताते हुए हमारे जीवन में नीति दोहों के महत्व को स्पष्ट करना है।

विषय वस्तु

कवि : रहीम

- नीति कवि रहीम के परिचय में दिये गये मुख्य बिंदुओं को बताते हुए उनके नीति दोहों का महत्व बताना है।

  यहाँ पहले दोहे में विपत्ति में साथ देनेवाला ही सच्चा मित्र कहते हुए, दूसरे दोहे में जीवन में गौरव के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

  रहीम के दोहों से संबंधित मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए तीन प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों में सुनने-बोलने का विकास करने के साथ-साथ चिंतन कर सही उत्तर देने योग्य ज्ञान का विकास करें।

कवि : बिहारी

- कवि बिहारीलाल के परिचय में दिये गये मुख्य बिंदुओं को बताते हुए, 'गागर में सागर' भर देने योग्य उनके दोहों के महत्व पर प्रकाश डालना चाहिए।

  यहाँ बिहारी के पहले दोहे में 'कनक' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में हुआ है। एक 'धतूरा' (यह एक ऐसा पौधा है जिसके पत्ते और फूल नशीले होते हैं।) है तो दूसरा 'सोना। जहाँ धतूरे के सेवन से मनुष्य पागल हो जाता है तो वहीं सोना या धन-दौलत के लोभ से भी मनुष्य पागल हो जाता है।

  बिहारी के दूसरे दोहे में कहा गया है कि - जो व्यक्ति सूझ-बूझ से व्यवहार करता है वह हमेशा सफल होता है और समाज में ऊँचा दर्जा प्राप्त करता है।

विशेष सूचना :

इंटरनेट में यूट्यूब में जाकर **"scert hindi hyderabad - Neeti Dohe "** टंकण (टाइप) करने से आप इसका वीडियो व आडियो लुत्फ उठा सकते हैं।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
10.	**नीति दोहे** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. मानव जीवन पर नीति वचनों के प्रभाव के बारे में बता सकेंगे। 2. वस्तु विनियोग से संबंधित प्रश्नों के बारे में बता सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. ध्वनि साम्य वाले शब्दों को चुनकर लिख सकेंगे। 2. पानी के उपयोग के बारे में बता सकेंगे। 3. दोहा पढ़कर भाव लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. दोहों के भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. पाठ में दिये गये दोहों के आधार पर सूक्तियाँ लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1.दोहों की प्रशंसा कर सकेंगे। 2. कवि की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्द के अर्थानुसार बेमेल शब्द पहचान सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. शब्दों में प्रत्यय पहचानकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

11. जल ही जीवन है

-श्री प्रकाश

उन्मुखीकरण

मनुष्य चाहे जितना भी बुद्धिमान हो परंतु वह इस प्रकृति का ही एक अभिन्न अंग हैं। इस दुनिया में समस्त प्राणी कोटि को जल की आवश्यकता है। पेड़-पौधों से वर्षा और इसी के कारण जल प्राप्त होता है। जल की उपलब्धता और संरक्षण पर चर्चा से पहले बच्चों में वृक्षों की आवश्यकता पर ध्यान दिलाना इसका मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

- गद्य साहित्य में कहानी रचना शैली के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हमारे जीवन पर कहानियों के प्रभाव को स्पष्ट करना है। यहाँ पर जल के महत्व के बारे में 'कहानी' विधा के माध्यम से बताया गया है।

लेखक परिचय

- इस कहानी के लेखक श्री प्रकाश है इन्होंने विज्ञान विषय संबंधी ढेर सारे निबंध लिखे हैं। इनके निबंध विचारोत्तेजक हैं। प्रस्तुत रचना ''संचार माध्यमों के लिए विज्ञान'' नामक पुस्तक से ली गयी है।

विषयवस्तु

- इक्कीसवीं सदी का मानव सुख-सुविधाओं की लालसा में डूबकर सुनहरे भविष्य से वंचित हो रहा है, यह उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा रहा है।

  यहाँ पर जल संरक्षण के बारे में बताते हुए उसके नष्ट हो जाने पर समस्त मानव कोटि को होनेवाली क्षति से अवगत कराया गया है। ब्रह्मांड के बारे में सोचनेवाला मानव अपने पास हो रही क्षति पर नज़र नहीं डालेगा तो उसका सारा ज्ञान व्यर्थ हो जायेगा। इसी विषय को अध्यापक को पाठ के द्वारा छात्रों को समझाना है। जल संरक्षण और उसके सदुपयोग की ओर छात्रों को प्रेरित करना चाहिए।

  मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों में सुनने-बोलने का विकास करें। साथ ही साथ छात्रों में चिंतन कर सही उत्तर देने के ज्ञान का विकास करें।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
11.	**जल ही जीवन है** (कहानी)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. जल के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. जल के सदुपयोग के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। 2. पाठ के आधार पर पंक्तियों की व्याख्या कर सकेंगे। 3. अपठित अंश पढ़कर प्रश्न बना सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. जल की समस्या पर अपने विचार लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. किसी भी विषय पर पोस्टर बना सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1.जल संरक्षण करने वाले गाँवों की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. एक शब्द से कई शब्द बना सकेंगे। 2. विदेशज शब्दों को पहचान सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. काल के प्रकार जान सकेंगे। 2. प्रश्नार्थक वाक्य बना सकेंगे। 3. अर्थ के आधार पर वाक्य पहचान सकेंगे।

12. धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब

उन्मुखीकरण

प्रकृति में मानव का जो महत्व है उतना ही महत्व पशु-पक्षियों का भी है। किंतु मानव को अपने साथ-साथ पशु-पक्षियों के संरक्षण की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि मानव के कई आविष्कारों के पीछे पशु-पक्षियों की प्रेरणा छिपी हुई है। जैसे - पक्षी की उड़ान की प्रेरणा से हवाई जहाज़ का निर्माण करना आदि। छात्रों को विज्ञान की ओर अग्रसर करके विभिन्न आविष्कारों का परिचय दे सकते हैं।

उद्देश्य

- देश की सुरक्षा में वैज्ञानिक उपकरणों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन उपकरणों और उनके आविष्कर्ताओं का विवरण देना साथ ही साथ बच्चों में देश की सुरक्षा की भावना को जगाना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

- इस पाठ के द्वारा साक्षात्कार विधा का परिचय दिया गया है। इस विधा के अंतर्गत किसी भी श्रेष्ठ व्यक्ति के उत्तम विचारों, अनुभवों और उनकी भविष्य दृष्टि को प्रत्यक्ष रूप में लिया जा सकता है। ऐसे विभिन्न साक्षात्कारों की प्रेरणा से छात्रों में अपने आपको सक्षम बनाने की संभावना होती है।

विषयवस्तु

'भारत रत्न' अबुल फ़कीर जैनुलाबुद्दीन अब्दुल कलाम

- अब्दुल कलाम का जन्म 15-10-1931 में हुआ। 2002 से 2007 तक राष्ट्रपति के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। उनकी प्रमुख पुस्तकें :- Wings of Fire, Ignited Minds, India 2020 हैं।
- मनुष्य के लिए इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। वह निरंतर परिश्रम, लगन और प्रतिभा से सब कुछ हासिल कर सकता है। जैसे - समाचार पत्र बेचनेवाला एक निर्धन बालक एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और भारत के राष्ट्रपति के रूप में विख्यात होना कोई साधारण बात नहीं है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के इन जीवन विशेषताओं से छात्र प्रेरणा पायेंगे।
- बच्चों में नैतिक मूल्यों का बोध कराना।
- नैतिक मूल्यों के निर्माण कार्य में माता-पिता और शिक्षकों का उत्तरदायित्व।
- सामाजिक समस्याओं के बारे में चर्चा।

'मिज़ाइल वुमन' टेसी थॉमस

- लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर परिश्रम की आवश्यकता।
- सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक गुणों की चर्चा।
- लक्ष्य प्राप्ति में पुरुषों का भेद नहीं।
- टेसी थॉमस के जीवन पर अब्दुल कलाम के व्यक्तित्व और नेतृत्व क्षमता का प्रभाव - चर्चा।

अपेक्षित दक्षताएँ (शैक्षिक मापदंड) :-

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
12.	**धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब** (साक्षात्कार)	I **अर्थग्राह्यता प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और केवल **मौखिक रूप में** प्रतिक्रिया करना। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।	1. महापुरुषों के नाम बता सकेंगे। 2. अब्दुल कलाम और थॉमस के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और मौखिक व लिखित रूप में प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 2. पाठ से संबंधित पंक्तियों की व्याख्या कर सकेंगे। 3. अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. अच्छे नागरिक के गुण अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 3. अब्दुल कलाम के आदर्शों के बारे में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः विविध विधाओं का सृजन कर सकना।	1. साक्षात्कार को निबंध के रूप में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी **मौखिक रूप में** प्रशंसा कर सकना।	1.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आदर्शों की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. पर्याय शब्द, वाक्य प्रयोग, विलोम शब्द, वचन बदलना कर लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरणिक अंशों का मौखिक व लिखित प्रयोग कर सकेंगे।	1. संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. शब्दों के प्रयोग को समझ सकेंगे। 4. दिये गये शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बना सकेंगे।

पठन हेतु पाठ - पाठ्यपुस्तक में कुल चार पठन हेतु पाठ दिये गये हैं।

उद्देश्य - जिज्ञासा का विकास, ज्ञान का रचनात्मक निर्माण, पठन कौशल का विकास करना, साहित्यिक रचनाओं की ओर प्रेरित करना, पाठ्यपुस्तक की पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करना, मनोरंजन, सोचने-समझने व प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित करना, पठन आनंदानुभूति आदि के लिए ये पाठ सहायक हैं।

विषयवस्तु

- बाबू रामसिंह के द्वारा रचित पहले पठन हेतु पाठ में मनुष्य को अहंकार नहीं करना चाहिए, के बारे में बताया गया है। राजा भोज व उनके महाकवि माघ का रास्ता भटक जाना जहाँ नाटक में महत्वपूर्ण मोड़ है, वहीं बूढ़ी लकड़हारिन से रास्ता पूछने के माध्यम से दोनों के अहंकार को शून्य होते हुए देखा गया है। इसमें संवाद बड़े ही सुंदर बन पड़े हैं।
- दूसरे पठन हेतु पाठ में कुल दो कविताएँ दी गयी हैं। पहली कविता सुरेंद्र विक्रम द्वारा रचित है। इसमें घर के सभी सदस्य बालक पर अपनी-अपनी इच्छाएँ लादते हुए उसे डॉक्टर, इंजीनियर, कंप्यूटर जानकार, प्रोफ़ेसर, अफ़सर, कलेक्टर, सिपाही, उद्योगपति आदि बनने की सलाह देते हैं। किंतु घर का कोई भी सदस्य उससे यह जानने का प्रयास नहीं करता कि वह क्या करना चाहता है। बालक की इच्छाओं का सुंदर वर्णन दामोदर अग्रवाल की कविता से हुआ है।
- मृदुल जोशी द्वारा रचित तीसरे पठन हेतु पाठ में भ्रूण हत्या विषयक कविता में शिशु कन्या की कराह सुनायी देती है। वह अपनी बेबस माँ से उसे दुनिया में जन्म देने के लिए अनुरोध करती है। उसे पता है कि यह काम आसान नहीं है। फिर भी वह अपनी माँ से कई सारे वायदे करती है और कहती है कि वह इस दुनिया में आकर घर भर में खुशियाँ फैलाएगी।
- चौथे पठन हेतु पाठ में जल का महत्व बताने के लिए पी.पी.टी. का सहारा लिया गया है। पी.पी.टी. के निर्माता जेफ ब्रेनमन इसमें यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि आने वाले दिनों में जल की कमी के कारण मनुष्य को जल संकट का सामना करना पड़ेगा। इस समस्या के समाधान के लिए सुझाव भी दिये गये हैं। इस पाठ को पी.पी.टी. विधा में देने के कारण यह बहुत ही प्रभावोत्पादक है। आशा है कि छात्र इससे प्रेरणा पाकर इसी तरह के और पी.पी.टी. तैयार करेंगे।

विशेष सूचना :

- पठन हेतु छात्रों के पठन कौशल के विकास व मनोरंजन के लिए अतः इन पाठों का मूल्यांकन से कोई लेना-देना नहीं हैं। पी.पी.टी. के रूप में दिया गया पठन हेतु पाठ, छात्रों को कंप्यूटर का उपयोग करते हुए इसी तरह के पी.पी.टी. बनाने के लिए दिया गया है। अतः सभी अध्यापक इस बात का ध्यान अवश्य रखें। पी.पी.टी. पाठ इंटरनेट **"scert hindi hyderabad"** पर देख सकते हैं।

उपवाचक पाठ - पाठ्यपुस्तक में कुल चार उपवाचक पाठ दिये गये हैं।

उद्देश्य - मनोरंजन, पठन आनंदानुभूति, जिज्ञासा का विकास, ज्ञान का रचनात्मक निर्माण, पठन कौशल का विकास करना, साहित्यिक रचनाओं की ओर प्रेरित करना, पाठ्यपुस्तक की पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करना, सोचने-समझने व प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित करना, व्यापक अध्ययन करने के लिए प्रेरित करना, गूढ़ विषयों के प्रति तार्किक चिंतन का विकास करना आदि।

विषयवस्तु

- पहले उपवाचक पाठ में शांति की राह में आजीवन कार्य करने वाले मानवता के प्रतीक नल्सन मंडेला और मदर तेरेसा की जीवनी दी गयी है। इस पाठ का उद्देश्य छात्रों में आदर्श गुणों का विकास करना है।
- मन्नू भंडारी द्वारा रचित दूसरे उपवाचक पाठ में दो कलाकार में चित्रा और अरुणा नामक दो पात्रों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि मानवता से बढ़कर कोई दूसरा कार्य नहीं हो सकता है। अरुणा जहाँ चित्रों के माध्यम से दुनियाभर में नाम कमाती है, वहीं चित्रा अरुणा के द्वारा चित्रित मृत बुढ़िया व उसके दो बेबस बच्चों के चित्र में से दो बच्चों को माँ के समान प्रेम देकर वास्तविक जीवन में मानवता की मूर्ति के रूप में खड़ी होती है। यहाँ कथनी से कहीं अधिक करनी पर ज़ोर दिया गया है।
- ऋतु भूषण द्वारा रचित तीसरे उपवाचक पाठ अपने स्कूल को एक उपहार में राजू नामक बालक अपने पिता के तबादले के कारण शहर आता है। उसे शहर के स्कूल में पढ़ना पड़ता है। इस पाठशाला में कुछ बच्चे उसे चिढ़ाते हैं। यहाँ तक कि अध्यापक भी उस पर टीका टिप्पणी करते हैं। राजू इन सब बातों को सहता रहता है। आखिरकार वह अपनी मेहनत से कक्षा में प्रथम आता है, और अपने पुराने स्कूल को एक यह परिणाम उपहार के रूप में देता है। इस पाठ में रैगिंग जैसे दुष्कार्यों का विरोध किया गया है।
- डॉ. रावूरि भरद्वाज द्वारा रचित व श्री सय्यद मतीन अहमद द्वारा अनूदित चौथे उपवाचक पाठ अनोखा उपाय में राजा कुमारवर्मा अपने अकालग्रस्त राज्य की समस्या को दूर करने के उद्देश्य से पड़ोसी राज्य जाते हैं, जहाँ उन्हें यह सीख मिलती है कि जाने-अनजाने में भी कोई छोटी भूल नहीं करना चाहिए। इसी सूत्र को वह गाँठ बाँध लेते हैं और आगे चलकर अपने राज्य का विकास करते हैं।

विशेष सूचना :

- उपवाचक पाठ मूल्यांकन हेतु परीक्षा में पूछे जाएँगे। सारांशात्मक मूल्यांकन में अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया शैक्षिक मापदंड के अंतर्गत पहला प्रश्न उपवाचक पाठ का अनुच्छेद दिया जाएगा। इस अनुच्छेद के प्रश्न बहुविकल्पीय होंगे। इसके लिए पाँच अंक निर्धारित है। अतः उपवाचक पाठों के लिए अलग से कालांश दिये जाने चाहिए।

1) शैक्षिक मापदंड अवधारणा - संचालन - मूल्यांकन

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। बालक के इस विकास हेतु कुछ शैक्षिक मापदंडों का निर्धारण NCF – 2005, APSCF – 2011 और RTE - 2009 के मौलिक सूत्रों के आधार पर किया गया है। कक्षा-छठी, सातवीं, आठवीं और नवीं के शैक्षिक मापदंडों की जानकारी आप प्राप्त कर ही चुके हैं। अब हम दसवीं कक्षा के लिए निर्धारित शैक्षिक मापदंडों के बारे में जानेंगे। ये इस प्रकार हैं -

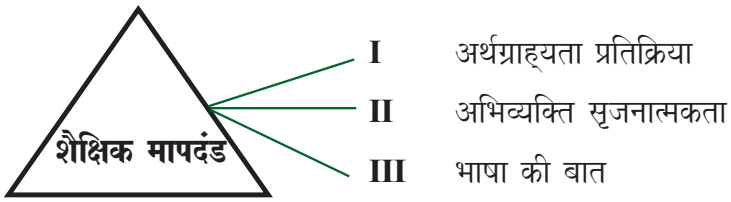

I अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

इसके अंतर्गत दो प्रकार के शैक्षिक मापदंडों का समावेश है।

''अ'' - **सुनना - बोलना**

''आ'', ''इ'', ''ई'' - **पढ़ना - लिखना**

''अ'' सुनना - बोलना

उद्देश्य :- सुनी हुई बात को समझना और प्रतिक्रिया कर सकना। अर्थात् बच्चे सुनी गयी बात को समझेंगे और उसके बारे में अपने स्वयं के विचार प्रकट कर सकेंगे। इसमें बालकों को स्वाभिव्यक्ति के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं।

स्वभाव :- 1. इस कौशल या मापदंड के अंतर्गत दिये जाने वाले प्रश्न विचारोत्तेजक हैं।

2. प्रश्न ऐसे हैं, जिससे कई अलग-अलग प्रकार के उत्तर प्राप्त होते हैं।

3. प्रश्न पाठ्य विषय से संबंधित तो हैं, किंतु पूर्णतः पाठ्य वस्तु पर आधारित नहीं हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :-

1. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (पृ.सं.-3)
2. हम 'भारतवासी' गीत आपको कैसा लगा? अपनी पसंद - ना पसंद का कारण बताइए। (पृ.सं.-15)
3. भाग्य और कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं और क्यों? (पृ.सं.-21)
4. 'हिंदी विश्वभाषा है।' इस कथन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए। (पृ.सं.-33)
5. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए। (पृ.सं.-41)
6. 'जल ही जीवन है।' शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है? (पृ.सं.-65)

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त कुछ प्रश्न :-

1. किसी एक ऋतु का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. अपने प्रिय त्यौहार के बारे में बताइए।
3. भारत देश की महानता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन	मूल्यांकन
- प्रश्न श्यामपट पर लिखें। - इन्हें छात्रों से पढ़वायें। - कम बोलने वाले छात्रों को पहले अवसर दें। - प्रश्नों पर सामूहिक चर्चा करवायें। - लगभग हर छात्र से प्रश्न का उत्तर पूछने का प्रयास करें। - बच्चे को बिना भय, झिझक के अपनी बात कहने दें।	- उच्चारण की शुद्धता - वाक्य - निर्माण का क्रम - अभिव्यक्ति का ढंग - विचारों की क्रमबद्धता - विचारों की स्पष्टता, सटीकता और समझ

''आ'' ''इ'' और ''ई'' पढ़ना - लिखना

उद्देश्य :- पढ़ी हुई बात या पढ़े गये अंशों को समझना और उस पर प्रतिक्रिया कर सकना। इसका मुख्य उद्देश्य है - पठित अंश की अर्थग्राह्यता। अर्थात् छात्र दिये गये पाठ्यांश को पढ़ेंगे, समझेंगे और प्रतिक्रिया कर सकेंगे।

स्वभाव :-

1. प्रश्न ऐसे हैं, जो छात्र को बार-बार पाठ्यांश पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।
2. प्रश्न पूर्णतः पाठ से संबंधित हैं।
3. प्रश्न अपठित गद्य/पद्य से भी संबंधित हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :-

1. वाक्य उचित क्रम में लिखिए। (पृ.सं.-26)
2. पद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचान कर लिखिए। (पृ.सं.-15)
3. पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए। (पृ.सं.-8)
4. नीचे दिये गये भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ से ढूँढ़कर लिखिए। (पृ.सं.-3)
5. अपठित पद्यांश/अपठित गद्यांश पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (पृ.सं.-3,8 आदि।)
6. पठित पद्यांश/पठित गद्यांश पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (पृ.सं.-3,8 आदि।)

उपर्युक्त पद्यांश/गद्यांश के अंतर्गत निम्न प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं -

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
2. 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए।
3. बहुविकल्पीय उत्तरों में सही उत्तर का चयन कीजिए।
4. गद्यांश या पद्यांश के मुख्य बिंदुओं को सुझाइए।
5. विज्ञापन पढ़िए, प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
6. विज्ञापन पढ़िए और उससे संबंधित चार प्रश्न बनाइए।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त कुछ प्रश्न :-

1. पाठ पढ़िए। दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
2. पाठ में से कुछ प्रश्नवाचक वाक्यों को चुनकर लिखिए।
3. वाक्य निर्माण का क्रम शुद्ध कीजिए।
4. पाठ के किसी एक अनुच्छेद से तीन प्रश्न तैयार कीजिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन	मूल्यांकन
छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।	वर्तनी की शुद्धता
प्रश्न की प्रकृति के अनुसार छात्रों को सूचनाएँ दें।	वाक्य निर्माण का क्रम
प्रत्येक अभ्यास व्यक्तिगत रूप से करवायें।	उत्तरों की सटीकता, स्पष्टता
इस अभ्यास से संबंधित कुछ प्रश्न 'गृहकार्य' में दिये जा सकते हैं।	विराम चिह्नों का पालन

2) अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

इसके अंतर्गत तीन प्रकार के शैक्षिक मापदंडों का समावेश है।

''अ'' ''आ'' स्वरचा - लिखना

''इ'' सृजनात्मक अभिव्यक्ति

''ई'' प्रशंसा

''अ'' ''आ'' लिखना (स्वरचना)

उद्देश्य :- पढ़े गये या सुने गये अंश को समझना और उसे अपने शब्दों में लिख सकना। यहाँ लिखने का अर्थ केवल देखकर लिखना नहीं है बल्कि अपने स्वयं के विचारों को जोड़कर लिखने अर्थात् स्व-अभिव्यक्ति से है। बच्चे पठित अंशों पर चर्चा करके अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

स्वभाव :-
1. क्यों, कब, कैसे से संबंधित प्रश्न हैं।
2. प्रश्न विश्लेषणयुक्त उत्तर लिखने के योग्य हैं।
3. स्वाभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने वाले हैं।
4. विचारोत्तेजक या विचारशील प्रश्न हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न

इसमें लघु प्रश्न और निबंधात्मक दोनों प्रकार के प्रश्न दिये गये हैं। दोनों प्रकार के प्रश्नों का उद्देश्य छात्रों को स्व-अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना है। ये प्रश्न इस प्रकार है -

''अ''लघु प्रश्न :-

1. वर्षा सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। कैसे? (पृ.सं.-3)
2. हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते और क्यों? (पृ.सं.-9)
3. निराशावादी और आशावादी के स्वभाव में क्या अंतर होता है? (पृ.सं.-16)
4. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या प्रभाव पड़ रहा है? (पृ.सं.-27)

''आ'' निबंधात्मक प्रश्न :-

1. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी? (पृ.सं.-55)
2. किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए। (पृ.सं.-60)
3. आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सब की क्या जिम्मेदारी है? (पृ.सं.-65)

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न

''अ'' लघु प्रश्न :-

1. हम ऊँच-नीच का भेद कैसे मिटा सकते हैं?
2. 'मेहनत ही सफलता की कुँजी है ।' इस पर अपने विचार बताइए।
3. आपको कौनसा लोकगीत पसंद है? क्यों?
4. काका कालेलकर जी ने गोदावरी को 'पावन' और 'पवित्र' क्यों माना होगा?

''आ'' निबंधात्मक प्रश्न :-

1. रहीम के दोहे नैतिक गुणों के विकास में सहायक है। कैसे?
2. गुरु का हमारे जीवन में क्या महत्व है? अपने विचार बताइए।
3. हामिद ने अन्य चीज़ें क्यों नहीं खरीदी होगी? अपने शब्दों में लिखिए।
4. 'हम भारतवासी' गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन	मूल्यांकन
छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।	मौलिकता
प्रश्न से संबंधित आवश्यक सूचनाएँ दें।	वर्तनी की शुद्धता, विराम चिह्नों का पालन
सामूहिक चर्चा करवायें।	वाक्य-निर्माण का क्रम
यक्तिगत रूप से सभी छात्रों को स्वरचना के लिए प्रेरित करें।	विचारों की सटीकता

''इ'' सृजनात्मक अभिव्यक्ति

उद्देश्य :- नयी-नयी विधाओं के सृजन की योग्यता का विकास करना। अर्थात् बच्चे नयी-नयी विधाओं का सृजन कर सकेंगे। ये सृजनात्मक अभिव्यक्ति मौखिक और लिखित दोनों रूपों में हो सकती है।

स्वभाव :-

1. प्रश्न किसी न किसी विधा के सृजन से संबंधित हैं।
2. हर प्रश्न एक अलग विधा से संबंधित हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. विश्वशांति की राह में समर्पित किस महान व्यक्ति का आप साक्षात्कार लेना चाहते हैं? साक्षात्कार में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार कीजिए। (पृ.सं.-16)
2. 'हिंदी भाषा' पर एक छोटा-सा निबंध लिखिए। (पृ.सं.-34)
3. भक्ति भावना से संबंधित छोटी-सी कविता का सृजन कीजिए। (पृ.सं.-42)

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न :

1. आपकी किसी एक दिन की यात्रा का वर्णन डायरी के रूप में लिखिए।
2. आपके विद्यालय में आयोजित होने वाले हिंदी दिवस कार्यक्रम के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।
3. जल की आवश्यकता से संबंधित कुछ नारे तैयार कीजिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन	मूल्यांकन
छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।	भावों और विचारों की मौलिकता
प्रश्न के बारे में आवश्यक सूचनाएँ दें। चर्चा करवायें।	हाव-भाव का प्रदर्शन
सामूहिक/वैयक्ति क्रियाकलाप करवायें। लिखे गये	विचारों की क्रमबद्धता
विषयों को पोर्टफोलियो में सुरक्षित रखें।	उच्चारण की स्पष्टता

''ई''प्रशंसा

उद्देश्य :- किसी भी तथ्य के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकने की योग्यता का विकास करना। अर्थात् बच्चे किसी भी तथ्य के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकेंगे। इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है, वह उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सकें।

स्वभाव :-

1. किसी भी विषय के महत्व को उजागर करने वाले प्रश्न हैं।
2. किसी व्यक्ति, वस्तु या तथ्य के गुणों को दर्शाने वाले प्रश्न हैं।
3. प्रशंसा का अवसर प्रदान करने वाले प्रश्न हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बताइए। (पृ.सं.-9)
2. सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व हैं? (पृ.सं.-16)
3. मनोरंजन की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालिए। (पृ.सं.-34)

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न :

1. नदियों का हमारे जीवन में क्या महत्व है? बताइए।
2. देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए हिंदी भाषा के योगदान के बारे में बताइए।
3. कर्म की श्रेष्ठता के बारे में बताइए।
4. पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों के लिए वर्षा किस प्रकार उपयोगी होती है?

संचालन	मूल्यांकन
छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।	भावों और विचारों की मौलिकता
प्रश्न से संबंधित सूचनाएँ दें।	उच्चारण की स्पष्टता
सामूहिक चर्चा करवायें।	वर्तनी की शुद्धता
व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवायें।	

3) भाषा की बात

इसके अंतर्गत दो प्रकार के मापदंड सम्मिलित हैं।

''अ'' शब्द भंडार **''आ'' ''इ'' ''ई''** भाषा की बात

''अ'' शब्द भंडार :-

उद्देश्य :- शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के संदर्भोचित प्रयोग की योग्यता का विकास करना। अर्थात् छात्र उपर्युक्त उल्लेखित अंशों (शब्द, मुहावरे, लोकोक्ति) के आधार पर अपने शब्द भंडार में वृद्धि कर, उनका अपने वाक्यों में संदर्भानुसार प्रयोग कर सकेंगे।

स्वभाव :-

1. ऐसे शब्द पूछे गये हैं जिससे छात्र के शब्दकोश में वृद्धि हो, जो उसके दैनिक जीवन में उपयोगी हो।
2. संदर्भानुसार प्रयोग किये जाने वाले शब्द हैं।
3. वाक्य - निर्माण से संबंधित हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. तरु, गगन, घन (एक-एक शब्द का पर्याय शब्द लिखिए और उनका वाक्य प्रयोग कीजिए।)(पृ.सं.-4)
2. अपराधी, प्रसन्न (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।) (पृ.सं.-9)

3. मिठाई, चिमटा, सड़क (एक-एक शब्द का वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।) (पृ.सं.-9)

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न :

1. बिजली, धरती, मन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. आवश्यक, लाभदायक (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)

संचालन	मूल्यांकन
प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों से प्रश्न पढ़वायें। आवश्यक सूचनाएँ दें। सामूहिक चर्चा करवायें। अधिक से अधिक उदाहरण देने के लिए प्रोत्साहित करें। वैयक्तिक रूप से उत्तर लिखवायें।	उचित शब्द प्रयोग उचित वाक्य प्रयोग वर्तनी की शुद्धता

''आ'' ''इ'' ''ई'' व्याकरण

उद्देश्य :- भाषा संबंधी जानकारी देते हुए, भाषिक संरचना की समझ का विकास करना। जिससे छात्र अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा व्याकरण के नियमों को समझ सकेंगे।

स्वभाव :-

1. ऐसे प्रश्न हैं, जिसके द्वारा बच्चे भाषा का प्रयोग कर सकें।
2. प्रश्न प्रायोगिक रूप में हैं।
3. भाषिक संरचना में सहायक हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. लौकिक, नैतिक, - प्रत्यय पहचानिए और वाक्य प्रयोग कीजिए। (पृ.सं.-60)
2. सोना, पढ़ना, पीना, हँसना, कहना, उठना- इन शब्दों में से सकर्मक - अकर्मक क्रियाएँ चुनिए। (पृ.सं.-55)
3. पवन, पावन, निराशा - (संधि विच्छेद कीजिए।) (पृ.सं.-16)
4. भारतवासी, जीवनज्योत - (समास पहचानिए।) (पृ.सं.-16)

पाठ्य-पुस्तक में दिये गये प्रश्नों से अतिरिक्ति प्रश्न

1. अपराधी, मार्मिक (प्रत्यय पहचानिए)
2. ऊँच-नीच, सुख-दुख (समास पहचानिए।)

संचालन	मूल्यांकन
प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों से प्रश्न पढ़वायें। आवश्यक सूचनाएँ दें। सामूहिक रूप से चर्चा करवायें। वैयक्ति रूप से लिखवायें।	सही शब्द चयन वाक्य - निर्माण का क्रम

4) छात्रों की अपेक्षित दक्षताएँ

(अ) अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया द्वारा छात्रों की अपेक्षित दक्षताएँ

- पद्य, गीत, कविता, वार्तालाप, निबंध कहानी, नाटक आदि सुनकर समझ सकेंगे। अपने शब्दों में कह सकेंगे।
- संबंधित अंशों के कारण बता सकेंगे।
- पद्य, गीत धाराप्रवाह के साथ गा सकेंगे।
- सारांश अथवा भाव अपने शब्दों में बता सकेंगे।
- किसी भी विषय पर चर्चा कर सकेंगे। पक्ष-विपक्ष में अपने विचार बता सकेंगे।
- किसी भी विषय पर अपने अभिप्राय प्रकट कर सकेंगे।
- पंक्तियाँ क्रमानुसार लिख सकेंगे।
- कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, निबंध - पढ़कर समझ सकेंगे।
- विभिन्न पुस्तिकाएँ, समाचार-पत्र, सूचनाएँ आदि पढ़कर समझ सकेंगे।
- अपठित/पठित अंशों को पढ़कर अर्थग्राह्यता के साथ उत्तर दे सकेंगे।
- भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे।
- पात्र के स्थान पर स्वयं को रखकर अपने विचार बता सकेंगे।

(आ) अभिव्यक्ति सृजनात्मकता से संबंधित अपेक्षित दक्षताएँ

- पाठ्यांश की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में समझकर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- पाठ का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- दिये गये विषय पर अपने विचार लिख सकेंगे।
- संदेश लिख सकेंगे।
- अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकेंगे।
- गद्य या पद्य को एक विधा से दूसरी विधा में बदल सकेंगे।
- साक्षात्कार के लिए प्रश्न लिख सकेंगे।

- निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार-पत्रिका, नारे, पोस्टर, पावर पाइंट प्रस्तुतीकरण तैयार कर सकेंगे।
- पद्य व गद्य के विविध रूपों व विधाओं की जानकारी रखते हुए उन्हें सृजनात्मक रूप दे सकेंगे।
- नयी कविता का सृजन कर सकेंगे।
- कवि या लेखकों की रचनाओं की प्रशंसा कर सकेंगे।
- प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की प्रशंसा लिंग, धर्म, वर्ग भेद के बिना कर सकेंगे।
- किसी भी तथ्य का महत्व बता सकेंगे।

(इ) भाषा की बात से संबंधित अपेक्षित दक्षताएँ

- व्याकरणांशों की पहचान कर सकेंगे।
- मुहावरों के अर्थ बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।
- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। - पर्यायवाची शब्द बता सकेंगे।
- शब्दार्थ बताकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- समुच्चय बोधक, संबंध बोधक, विस्मयादि बोधक शब्द जोड़ सकेंगे।
- पुनरुक्त शब्द समझ सकेंगे।
- विपरीतार्थक शब्द लिख सकेंगे।
- पद परिचय दे सकेंगे।
- तत्सम, तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय शब्द पहचान सकेंगे।
- संधि विच्छेद कर सकेंगे।
- समास विग्रह कर सकेंगे।
- कारक पहचान सकेंगे।
- संयुक्त क्रिया का प्रयोग कर सकेंगे।
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिख सकेंगे।
- अकर्मक, सकर्मक क्रिया पहचान सकेंगे।
- वाक्य के प्रकार बता सकेंगे।

विशेष सूचना : सभी अध्यापकों से अनुरोध है कि *अनुप्रास अलंकार, यमक अलंकार, दोहा छंद, चौपाई छंद* आदि केवल परिचय के रूप में मात्र दिये गये हैं। इस पर अधिक ज़ोर देकर छात्रों पर बोझ न डालें। मूल्यांकन या परीक्षा से भी इन्हें दूर रखें।

अध्याय–III

विधाएँ स्पष्टीकरण व शिक्षण व्यूह
(Discourses & Strategies)

विधाएँ स्पष्टीकरण	शिक्षण व्यूह
1) निबंध	1) KWL व्यूह
2) पत्र लेखन	2) मनोरेखा चित्रण (Mind Mapping)
3) कहानी आगे बढ़ाना	3) नृत्याभिनय (Choreography)
4) घटना वर्णन	4) एकल अभिनय (Mono Action)
5) नीति वाक्यों की व्याख्या : विषय वस्तु की जानकारी	5) मूकाभिनय (Mime)
6) विज्ञापन	6) सामूहिक कार्य (Group Work)
7) पोस्टर	7) परियोजना कार्य (Project Work)
8) नारे	8) चर्चा (Discussion)
9) साक्षात्कार	9) स्व - अवधारणा - प्रदर्शन (Self Understanding Expression)
10) नाटक	10) Zigsaw विधि
11) कविता	11) Cloze Test विधि
12) यात्रा-वृत्तांत	12) साहित्यिक कार्यक्रम (Literature Activities)
	13) पुस्तक की समीक्षा (Book Review Read & Reflect doubt)

I. विधाएँ - स्पष्टीकरण

निबंध

विषयवस्तु की समझ निबंध के सोपानों का क्रम।

वाक्य निर्माण का क्रम।

भावों की मौलिकता।

भाषा की शुद्धता।

कहानी आगे बढ़ाना

कहानी अर्थयुक्त तरीके से आगे बढ़ाना।

वाक्यों का निर्माण ठीक हो।

भाषा व्यावहारिक हो, सरल हो।

भाषा शुद्ध हो।

उपसंहार अर्थयुक्त हो।

नीति वाक्यों की व्याख्याःविषयवस्तु की जानकारी

वाक्य निर्माण नीति को प्रकट करने में प्रभावित हो।

व्याख्या जीवन से संबंधित हो।

वाक्य सरल, भाषा मधुर, तथा शुद्ध हो।

पोस्टर

प्रभावशाली हो।

चित्र स्पष्ट हो।

चित्रों के अनुसार रंगों का चयन हो।

शब्द प्रभावपूर्ण हो।

वाक्य की सटीकता हो।

साक्षात्कार : साक्षात्कार विधा की जानकारी

विषय का ज्ञान हो।

व्यक्तिगत विषयों की जानकारी प्राप्त करनेवाले प्रश्न हो।

विषयगत जानकारी प्राप्त करनेवाले प्रश्न हो।

प्रश्नों में क्रमबद्धता हो।

नाटक

पात्र विषय के अनुकूल हो।

भाषा पात्रोचित हो।

विषय संदेशात्मक हो।

भाषा सरल, अर्थयुक्त हो।

पत्र लेखन

विषय के अनुसार हो।

निर्माण क्रमबद्ध हो।

पत्र के प्रारूप का क्रम सही हो।

वर्तनी की शुद्धता

घटना वर्णन

घटना की जानकारी।

घटना वास्तविक हो।

वाक्य क्रम ठीक तरह से हो।

भाषा शुद्ध, व्यावहारिक हो।

घटना वर्णन की पूर्ति भी अर्थयुक्त हो।

विज्ञापन

विषय का ज्ञान हो।

शैली प्रभावपूर्ण हो।

प्रभावोत्पादक शब्दों का चयन हो।

नारे

विषय का ज्ञान हो।

वाक्य तुकांत हो।

वाक्य निर्माण शुद्ध और सरल भाषा में हो।

प्रभावोत्पादक हो।

भाव सीधा हो।

करपत्र की तैयारी

विषय का ज्ञान होना हो।

शीर्षक विषय के अनुकूल हो।

भाषा की शुद्धता हो।

विषय संदेशात्मक हो।

यात्रा-वृत्तांत

विषय ज्ञान की जानकारी हो।

वर्णन शैली हो।, विषय क्रमबद्ध हो।

प्रभावपूर्ण शब्दावली हो।

वाक्य निर्माण दर्शनीय स्थान के अनुरूप हो।

शिक्षण व्यूह

1) KWL व्यूह :

(मुझे क्या पता है? मुझे क्या पता लगाना चाहिए? मैने क्या सीखा?)

किसी एक विषय पर चर्चा करने से पहले छात्रों से पूछना चाहिए कि उन्हें क्या पता है? यह पहला सोपान है। इसके पश्चात वह क्या जानना चाहते हैं, उन के विचार सुनने चाहिए यह दूसरा सोपान है। पाठ-पठन, संदर्भ ग्रंथों को पढ़ाना, क्रियाकलापों में भाग लेना, सामूहिक कार्यों में भाग लेना तीसरा सोपान है। इस प्रकार - विषय बोध के द्वारा चर्चा के उपरांत छात्रों ने क्या सीखा है? यह पूछना चाहिए।

इस व्यूह में किसी एक अंश को छात्रों से परिचय कराते समय उन्हें इस अंश का पूर्व ज्ञान, रुचि, विषय बोध की जानकारी कहाँ तक है, इस विषय की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें बच्चों की कल्पनाशक्ति और पूर्व ज्ञान के आधार पर तथ्यों को जानने का अवसर प्राप्त होता है।

2) मनोरेखा चित्रण (Mind Mapping)

छात्र अपने आसपास की परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। वह अपने ढंग व शैली में प्रतिक्रिया करते हैं। Mind Mapping का अर्थ है, बालक अपने अनुभवों का पाठशाला के बाहर प्राप्त ज्ञान से समन्वय कर उस रचनात्मक ज्ञान का कक्षा में प्रदर्शन करता है।

इसके लिए उस अंश से संबंधित मूल शब्द को श्यामपट पर लिख कर उस शब्द के भावों पर चर्चा करवायी जाती है।

छात्र स्वयं सोचकर अपने भाव विचार व्यक्त करते हैं। अपनी भावाभिव्यक्ति लिखित रूप में व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता छात्र को मिलती है जिससे छात्र में स्वाभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकास होता है।

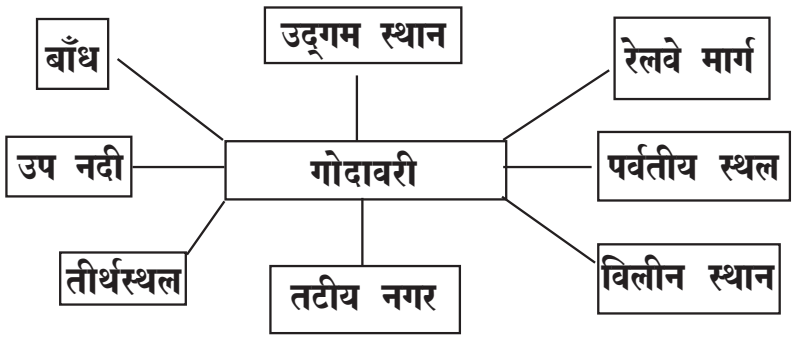

उपरोक्त मनोरेखा चित्र द्वारा छात्रों में निबंध, निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता बढ़ेगी।

3) नृत्याभिनय (Choreography)

छात्रों द्वारा सुनी हुई, पढ़ी हुई घटना/अंश को अभिनय/नृत्य के रूप प्रदर्शित करना ही नृत्याभिनय (Choreography) है। इसमें बच्चों को नृत्य रूपी पाठ्यांशों को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। इसके लिए पाठ्यांशों को पढ़कर अभिनय करने वाले पात्रों (छात्रों) का चुनाव करना चाहिए। प्राकृतिक दृश्य जैसे - वृक्ष, पौधों आदि दर्शाने के लिए भी छात्रों का चुनाव करना चाहिए।

छात्रों से अभ्यास करवाकर प्रदर्शन के लिए तैयार करना चाहिए। अभिनय के समय गीत को गाने वाले छात्रों का चुनाव कर उन्हें भी अभ्यास करवाना चाहिए।

जैसे :- हम भारतवासी कविता

जिस देश में गंगा बहती है....

इसके द्वारा छात्रों में कविता, गीत, नृत्य आदि की रचना शैली का विकास होता है।

4) एकल अभिनय :- (Mono Action)

पाठ्यांश या किसी एक अंश में आनेवाले पात्र द्वारा किये गये अभिनय को एकल अभिनय, कहते हैं।

जैसे :- स्वराज्य की नींव (एकांकी) X लक्ष्मीबाई, जूही जैसे पात्र

यक्ष-प्रश्न में युधिष्ठिर - IX

इससे पात्र के स्वभाव के बारे में अवगत करवाया जा सकता है।

5) मूकाभिनय (Mime) :

मौन रूप से अभिनय के द्वारा किसी घटना को जैसे के तैसे प्रेक्षकों के समझने लायक प्रस्तुत करना ही मूकाभिनय है। इसमें संभाषण (Dailogue) नहीं होता है।

जैसे - गुटर गूँ - गुटर गूँ (SAB TV Programme) , चार्ली चापलीन, मिस्टर बीन का मूकाभिनय।

6) **सामूहिक कार्य (Group work)**

सामूहिक कार्यों से बच्चों में मिलजुलकर काम करना, विचार-विनियम करना, प्रतिवेतन लिखना आदि को प्रोत्साहन मिलता है। इससे, बच्चे आपस में चर्चा करके प्रदर्शन के समय अपने-आप को सक्षम बनाते हैं। सामूहिक कार्य में परियोजना कार्य, प्रस्तुत कार्य, संगोष्ठी, पाठ पठन, शब्द-भंडार आदि समयानुकूल कर सकते हैं। समाचारों का अर्जन कर प्रतिवेदन बनाना आदि इसी के अंग हैं।

7) परियोजना कार्य (Project Work)

परियोजना कार्य विविध आकडों के संग्रहण का साधन है। इसे गृहकार्य के रूप में दे सकते हैं। गृहकार्य देते समय इसे व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य के रूप में दे सकते हैं। समूह में दिये गये कार्य में प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से निर्देश देना चाहिए। किये गये परियोजना कार्य का प्रस्तुतीकरण व प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए। प्रदर्शन या प्रस्तुतीकरण के दौरान उत्पन्न त्रुटियों के लिए आवश्यक सुझाव दें।

8) चर्चा (Discussion)

किसी अंश के संबंध में छात्रों के विचार जानना, जानकर चर्चा में भाग लेना।

जैसे :- 1. जल का संरक्षण कैसे करें?

2. पर्यावरण को कैसे संतुलित करें। पर्यावरण का संतुलन कैसे करें?

9) स्व-अवबोध - प्रदर्शन (Self understanding-Expression)

किसी एक अंश को छात्र स्वयं पढ़कर उसे समझकर उसे एकल अभिनय, नाटक के रूप में या कठपुतली किसी भी विधा में छात्र स्वयं निर्णय करके उसे प्रदर्शित करेंगे।

जैसे : लक्ष्मीबाई, गाने वाली चिड़िया

10) Zigsaw विधि

इस विधि में पाठ को विभाजित कर अनुच्छेदों में बाँटा जाता है। छात्रों को भी दलों में विभाजित कर एक-एक दल को एक एक अनुच्छेद दिया जाता है। फिर एक के पश्चात् एक समूह अपने द्वारा पढ़े गये अंश का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इसमें एक-दूसरे के द्वारा उठाये गये संदेहों का भी निवारण किया जाता है। समझकर अपने विचार प्रकट करते हैं। आपस में सभी दल मिलकर उत्पन्न समस्याओं या संदेहों का निवारण चर्चा के द्वारा करते हैं।

11) Cloze Test विधि

इस व्यूह से पढ़ना-अर्थग्राह्यता कौशलों का विकास होता है। इसमें एक अंश के हर पाँचवें शब्द को रिक्त स्थान के रूप में दिया जाता है। उस अंश को पढ़ व समझकर रिक्त स्थान वाले शब्द की पूर्ति करना होता है।

12) साहित्यिक कार्यक्रम :- (Literature Activities)

चार-चार बच्चों को चार दलों में विभाजित कर प्रत्येक दल को भाषाई क्षमताओं का विकास करने के लिए अभ्यास दिया जाता है। ऐसे पढ़े हुए अंश में से एक दल को शब्द-भंडार मुहावरे आदि दूसरे दल को पढ़े हुए अंश से भाषा की महानता के बारे में, तीसरे दल को पढ़े हुए अंश का चित्र बनाना तथा चौथे दल को पढ़े हुए अंश में प्रश्न बनाना या व्याख्या लिखने के लिए निर्देश दिये जाते हैं। अर्थात् एक ही अंश पर सभी समूह साहित्यिक रुप से कार्य करते हैं।

इससे सभी दल के छात्र भाषाई क्षमताओं के विकास का अभ्यास करेंगे इन सभी अंशों को कक्षा में प्रदर्शित कराना चाहिए।

13) पुस्तक की समीक्षा (Book Review)

छात्रों में पठन क्षमता विकास करने के लिए पुस्तक पठन का आयोजन किया जाता है। छात्रों को पुस्तकालय की विविध प्रकार की पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उन पुस्तकों पर समीक्षा करवानी चाहिए। समीक्षा में -

1) कौनसी पुस्तक पढ़ी?
2) पढ़ी हुई पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करना।
3) अपने अनुभव बताना।
4) पात्रों व घटनाओं का विवरण देना।
5) कवि ने किस उद्देश्य से उस अंश को लिखा होगा इस विषय पर चर्चा होनी चाहिए।

अध्याय–IV

अध्यापक की सन्नद्धता व योजनाएँ
(Teacher Readiness & Plans)

1) शिक्षण के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

2) आकलन के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

3) परीक्षाओं के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

4) वार्षिक योजना के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

5) पाठ-योजना के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

   (i) सोपानों का विवरण

   (ii) गद्य नमूना पाठ

   (iii) पद्य नमूना पाठ

I. अध्यापक की सन्नद्धता

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि उस कार्य को सर्वप्रथम योजनाबद्ध कर लिया जाय। उसकी पहले से ही तैयारी कर ली जाय तो कार्य आसानी से संपन्न हो सकता है। दसवीं कक्षा में भी द्वितीय/प्रथम भाषा अधिगम के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अध्यापक को निम्नलिखित तैयारियाँ करनी होगी।

I शिक्षण के लिए अध्यापक की सन्नद्धता :-

- दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक पूरी तरह से पढ़ें। पाठ्यांश पूरी तरह से समझें।
- वाक्य निर्माण, रचना शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
- वार्षिक, मासिक, पाठ योजना तैयार करें।
- पाठ्यक्रम नियमित रूप से पूर्ण करने की योजना बनायें।
- पद्य भाग के पाठ रागात्मकता के साथ गाने अथवा पढ़ने का अभ्यास करें।
- गद्य भाग के विभिन्न पाठों को स्वयं समझाने के बजाय बच्चों से चर्चा करवाने वाले अंशों को लिख लें।
- विषय सामग्री को एक विधा से दूसरी विधा में बदलवाने का कार्य करवायें। इसके लिए पहले स्वयं इसका अभ्यास करें।
- प्रश्न पत्र स्वयं तैयार करें। उत्तर-पुस्तिका जाँचने के लिए सूचक निर्धारित करें।
- भाषा अध्ययन में विचार व्यक्त करना मुख्य है इसीलिए पद्य भाग, गद्य भाग दोनों पर बच्चों से विचार प्रकट करवाने की योजना बनायें।
- बच्चों को पढ़ना, लिखना पूर्ण रूप से न आता हो तो, इस प्रकार के बच्चों को पढ़ना, लिखना सिखाने की योजना तैयार कर उसे अमल में लायें।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकालय-पुस्तकें, मैगज़ीन, पत्रिकाएँ आदि कक्षा-कक्ष में प्रचुर मात्रा में रखें। बच्चों से पढ़वायें।
- शिक्षण - अधिगम आकलन के लिए लिखने के अभ्यास देने के बदले, बच्चों द्वारा किसी अंश पर स्वयं लिखने वाले अभ्यासों की तैयारी कर लें।
- कक्षा -कक्ष में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए दीवार-पत्रिका लगानी चाहिए। बच्चों द्वारा लिखी गयी कविताएँ, कहानियाँ, गीत, चुटकुले आदि दीवार-पत्रिका पर प्रदर्शित करने के लिए दीवार-पत्रिका तैयार कर लें। बच्चों द्वारा किये गये कार्यों का संकलन करने के लिए पुस्तिका तैयार कर लें।
- पाठ से संबंधित संदर्भों को एकत्रित करना, लिखने से संबंधित परियोजना कार्य को मास में एक बार कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करने से संबंधित सामग्री एकत्रित कर लें।
- पाठ पढ़ाते समय उस पाठ से किन-किन दक्षताओं की प्राप्ति करना है, इससे संबंधित योजना बना लें।
- दक्षताओं के स्वभाव अनुरूप उचित आयोजन व्यूह अपनायें।
- अभ्यासों के आयोजन में सलाहकार की भूमिका निभायें।

शिक्षण के लिए आवश्यक संसाधन :- पुस्तकें, समाचार - पत्र, पत्रिकाएँ, संदर्भ पुस्तकें, बाल साहित्य, पाठ्य-पुस्तक, चार्ट, पी.पी.टी., आदि।

II आकलन के लिए अध्यापक की सन्नद्धता :-

- अध्यापक ने अपने शिक्षण कार्य में कहाँ तक सफलता प्राप्त की है या किन दक्षताओं को प्राप्त करने में छात्र में सुधार आवश्यक है, यह जानने के लिए आकलन की आवश्यकता होती है। इसके लिए अध्यापक को निम्न लिखित तैयारी करनी होगी।
- सतत् समग्र मूल्यांकन का निर्वहन करने की योजना बनायें।
- इसमें छात्रों द्वारा किये गये दत्त कार्यों, परियोजनाओं और उनके द्वारा लिखित सामग्री को ध्यान में रखकर उनका आकलन करने की योजना बनायें।
- इसमें छात्रों की मौखिक क्षमताओं के आकलन के साथ-साथ लिखित व सृजनात्मक अभिव्यक्ति संबंधी दक्षताओं के आकलन का ध्यान रखें।
- अब तक आकलन केवल परीक्षाओं पर ही निर्भर था। इससे बच्चों में हीन भावना और दबाव बढ़ रहा था। इससे परिवर्तन लाने के लिए ए.पी.एस.सी. एफ - 2011 ने निम्न बिंदुओं को प्रस्तावित किया है -
- मूल्यांकन व परीक्षाएँ बच्चों के लिए केवल आकलन तक सीमित न होकर बच्चों के सीखने में सहायक होनी चाहिए।
- बच्चों के आकलन के लिए केवल परीक्षाओं तक सीमित न रहकर परियोजना कार्य, प्रदत्त कार्य, पोर्टफोलियो, संगोष्ठी, प्रदर्शन, अनेक्डाट, पर्यवेक्षण आदि का भी प्रयोग करें। इन अंशों को वार्षिक परीक्षा में समुचित भार दिया जाय।
- इसके लिए मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समावेशित किया जाय।
- प्रश्नों के स्वभाव बदलना, पाठ्यपुस्तकों में निहित सूचनाओं के आधार पर बच्चे स्वयं सोचकर लिखें। अपने अनुभवों को व्यक्त कर सकें, विविध प्रकार के समाधान देने वाले प्रश्न, विषय को दैनिक जीवन से जोड़ने वाले प्रश्न होने चाहिए।

  उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर आकलन संबंधी अपनी पूर्व योजना तैयारी कर लें।

III परीक्षाओं के लिए अध्यापक की सन्नद्धता :-

- बच्चों को वार्षिक परीक्षा के लिए तैयार करना एक अध्यापक का दायित्व होता है। इसके लिए उसे निम्न तैयारी करनी चाहिए।
- नमूना (मॉडल) प्रश्न पत्र अच्छी तरह पढ़ लें। ब्लू प्रिंट भली-भाँति समझ लें।
- ब्लू प्रिंट के आधार पर परीक्षा उपयोगी प्रश्नों की सूची बना लें। व्याकरणांशों की सूची बना लें।
- नमूना प्रश्न पत्र को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्न भी तैयार करें।
- कक्षा के औसत और कम औसत वाले बच्चों के लिए विशेष तैयारी करें।
- प्रश्न-पत्र के आधार पर, वार्षिक परीक्षा से संबंधित तैयारी की मासवार योजना बना लें।
- पूर्व मासवार योजना के परिणामों के आधार पर आगामी मास की योजना में फेरबदल करने की तैयारी कर लें। समय-समय पर छात्रों की दक्षता की जाँच के लिए परीक्षा के आयोजन की भी योजना बना लें।

योजनाएँ

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक योजना (Plan) का होना आवश्यक है। भाषा - शिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति बालकों में शैक्षिक मापदंडों के विकास व अपनाये जाने वाले व्यूहों के लिए, एक अध्यापक को चाहिए कि निम्न योजनाएँ बनायें। ये योजनाएँ हैं :

(1) **वार्षिक योजना** (Year Plan) (2) **पाठ योजना** (Lesson Plan)

IV वार्षिक योजना के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

वर्तमान वार्षिक योजना में एक कक्षा से संबंधित, तत्संबंधी विषय में शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर बालक किन-किन शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति करें, एक-एक पाठ के लिए कितने कालांश चाहिए? इसका विवरण लिखना चाहिए।

शिक्षण प्रक्रिया सुचारु रूप से चलने के लिए किन-किन शिक्षण अधिगम सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है? प्रत्येक माह शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति के लिए किन-किन कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए? सी.सी.ई. से संबंधित किन-किन जानकारियों का अंकन करना चाहिए? जैसे अंशों को वार्षिक योजना में स्थान देना चाहिए। निम्नलिखित सोपानों के द्वारा वार्षिक योजना लिखनी चाहिए।

अ) वार्षिक योजना - नमूना

1. **कक्षा :**
2. **विषय :**
3. **आवश्यक कालांशों की संख्या :**

   अ) कुल कालांश :

   आ) शिक्षण अधिगम के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :
4. **वर्ष की समाप्ति पर अर्जित किये जाने वाले शैक्षिक मापदंड :**
   - अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया
   - अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता
   - भाषा की बात
5. **मासवार पाठों का विभाजन :**

महीना	शिक्षण हेतु पाठ का नाम	आवश्यक कालांशों की संख्या	संसाधन	आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम, सी.सी.ई.
जून	1 2			

6. **अध्यापक की प्रतिक्रिया :**
7. **प्रधानाध्यापक के सुझाव, निर्देश :**

आ) वार्षिक योजना के सोपानों का विवरण

I. कक्षा : जिस किसी कक्षा की वार्षिक योजना लिख रहे हैं, उस कक्षा की संख्या यहाँ लिखें।(उदाः 6वीं, 7वीं, 8वीं, 9वीं, 10वीं)

II. विषय : विषय लिखें।(उदाः हिंदी, तेलुगु, अंग्रेज़ी आदि।)

III. आवश्यक कालांशों की संख्या : पाठ्यपुस्तक के सभी पाठों को पूर्ण करने के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या यहाँ लिखें। इनमें-

अ) कुल कालांश : 110 (यानी इसमें वर्ष की कुल कालांशों की संख्या लिखेंगे।)

आ) शिक्षण के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या : 90 (यानी कुल शिक्षण कालांश 110 हैं, तो पाठ्यपुस्तक शिक्षण के लिए 90 कालांश निर्धारित हैं।)

IV. वर्ष की समाप्ति तक अर्जित किये जाने वाले शैक्षिक मापदंड :

शैक्षिक वर्ष की समाप्ति तक छात्रा का अपनी कक्षा के स्तरानुसार किन-किन शैक्षिक मापदंडों को अर्जित करना चाहिए इसके बारे में लिखना चाहिए। इन्हें लिखते समय पाठ्यपुस्तक को ध्यान में रखना चाहिए।

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :

   बालक किसके बारे में किस तरह बातचीत करें, के बारे में लिखें।

   बालक किसके बारे में पढ़कर व समझकर प्रतिक्रिया करें, के बारे में लिखें।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता :

   बालक किसके बारे में अपने शब्दों में लिखना है, के बारे में लिखें।

   सृजनात्मक रूप में किन-किन विधाओं में प्रस्तुतीकरण है, उसके बारे में लिखना है।

   किनकी प्रशंसा कर सकें, उन्हें लिखना है।

3. भाषा की बात : व्याकरणांश में किन अंशों की प्राप्ति करना है, उन्हें लिखना है।

4. परियोजना कार्य :

   पाठ के आधार पर बालक को किस तरह के परियोजना कार्य करना है, के बारे में लिखना है। इस तरह शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर बालक किन-किन दक्षताओं में क्या प्राप्त करना है, के बारे में उन-उन दक्षताओं के नीचे लिखना है।

V. माहवार पाठों का विभाजन - योजना :

पूरे साल भर में किस महीने में क्या पढाऩा है? उस पाठ की समाप्ति के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या कितनी होगी? (यहाँ पाठ का शिक्षण यानी प्रस्तावना चित्र से लेकर परियोजना कार्य तक के क्रियाकलाप करवाना है। अध्यापक को इन सबका ध्यान रखकर पाठ कालांशों का विभाजन करना चाहिए।)। उसी तरह पाठ शिक्षण के लिए अतिरिक्त सामग्री क्या चाहिए, आदि के बारे में लिखना चाहिए। शैक्षिक मापदंडवार विकास के लिए प्रति महीने किन कार्यक्रमों का आयोजन करने वाले हैं, आदि के बारे में विवरण देने चाहिए। (उदा : निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, कविता वाचन, नाटक मंचन आदि।)

तालिका को निम्नलिखित ढंग से लिखना चाहिए।

माह	पाठ का नाम	आवश्यक कालांशों की संख्या	सामग्री	आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम, सी.सी.ई.
जून	जिस देश में गंगा बहती है	7	चित्र, वीडियो आदि।	गायन प्रतियोगिता

इस तरह सभी पाठों के लिए लिखना चाहिए। इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कालांशों का विभाजन पाठ के स्वभाव को ध्यान में रखकर करना चाहिए। इस तरह एक पाठ के लिए औसत छह कालांश प्राप्त होते हैं।

शिक्षण के लिए संसाधन एवं शिक्षण अधिगम सामग्री (Resources for teaching & TLM) :

प्रत्येक अध्यापक को चाहिए कि वह शिक्षण करने वाले पाठ के लिए संसाधन इकट्ठा कर लें। यहाँ संसाधन का अर्थ है- उपयुक्त ग्रंथः (reference books), अध्यापक सहायक पुस्तिका, शिक्षण में उपयोगी सामग्री, शब्दकोश, सी.डी., वीडियो, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र के मुख्यांश, शिक्षण टिप्पणियाँ आदि। अध्यापक इनके अतिरिक्त अन्य सामग्रियों का उपयोग भी कर सकते हैं।

आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम (Activities / Programmes to be performed) :

अपेक्षित दक्षताओं की प्राप्ति के लिए संबंधित विषय में कुछ कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। इनका आयोजन स्थानीय परिवेश का उपयोग करते हुए करना चाहिए। इसके अंतर्गत कुछ कार्यक्रम कक्षा में तो कुछ कार्यक्रम बाहर आयोजित करने चाहिए। इनमें क्षेत्र पर्यटन (field visit), सांस्कृतिक कार्यक्रम (cultural activities), विज्ञान यात्राएँ (educational tours), सामाजिक संस्थाओं का पर्यटन (visiting of social institutions), समाज सेवा (social service), कूटप्रश्न प्रतियोगिता (quiz),सेमिनार (seminars), विविध तरह की कविताएँ, कहानियाँ, करपत्र, पोस्टर आदि बनाने के लिए कार्यशालाएँ (workshops for material development), समाचार पत्र के लिए लेख लिखना (writing articles / case studies to newspapers), कवि सम्मेलन, विषय विशेषज्ञों द्वारा भाषण (lecturers from experts), पद्य वाचन, निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, चित्रलेखन, कविता लेखन, कहानी लेखन आदि सृजनात्मक क्रियाकलापों (creative activities) का आयोजन करना चाहिए। इन्हें वार्षिक योजना में दर्शाना तथा अमल में लाना चाहिए। इन कार्यक्रमों से छात्रों में विविध दक्षताओं, रुचियों का विकास होता है तथा पाठशाला मनोरंजन का केंद्र बनता है। इसके लिए प्रत्येक अध्यापक, प्रधानाध्यापक को व्यावसायिक ढंग से सोचते हुए अपने व्यवसाय के प्रति न्याय करना चाहिए। उसी तरह सी.सी.ई से संबंधित किस महीने में रचनात्मक मूल्यांकन आयोजित व दर्ज करना है तथा सारांशात्मक मूल्यांकन के लिए प्रश्न पत्र तैयार करना है, आदि वार्षिक योजना में दर्शाना चाहिए।

VI. अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ :

वर्ष समाप्त होने तक अध्यापक शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति के लिए किन-किन क्रियाकलापों का आयोजन किया है? छात्रों की भागीदारी कैसी है? किन शैक्षिक मापदंडों में छात्रों ने प्रगति की है? किनमें पिछड़े हैं? सृजनात्मक, प्रशंसापूर्वक कार्य, परियोजना कार्य किस तरह किये? शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति के लिए वह और क्या कर सकता है? आदि के बारे में अध्यापक को अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखनी चाहिए। इसके लिए कुछ पृष्ठ रखने चाहिए। वार्षिक योजना के सोपान एक से पाँच तक कोई बड़े परिवर्तन देखने को नहीं मिलेंगे। किंतु अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ पाठवार बदलती रहती हैं। इसीलिए माहवार प्रतिक्रियाएँ

लिखनी चाहिए। प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश भी माहवार होते हैं, जिन्हें वार्षिक योजना के सोपान संख्या सात में दर्ज करने होते हैं। इस तरह अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ, प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश लिखने के उपरांत अगले वर्ष के लिए एक नया पृष्ठ रखना चाहिए। अतः वार्षिक योजना के इन सोपानों के लिए अलग से पृष्ठ रखने चाहिए।

VII. प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश :

प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह मासवार अपने सुझाव व निर्देश दर्ज करें। इस तरह वर्ष समाप्त होने पर अगले वर्ष के लिए एक और पृष्ठ आबंटित करना चाहिए।

वार्षिक योजना

I **कक्षा : दसवीं**

II **विषय : हिंदी**

III **आवश्यक कालांशों की संख्या :**

अ) कुल कालांश : 220

आ) शिक्षण के लिए आवश्यक कालांश : 110

IV **शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर छात्र द्वारा प्राप्त की जाने वाली दक्षताएँ**

I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया :-**

- दिये गये विषय पर चर्चा कर सकेंगे।
- पंक्तियाँ क्रमानुसार लिख सकेंगे।
- भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे।
- पाठ पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- गद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- किसी एक विषय पर अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।
- दिये गये विषय के महत्व के बारे में बता सकेंगे।
- पाठ के आधार पर वाक्य जोड़कर सही वाक्य लिख सकेंगे।
- पात्र के स्थान पर स्वयं को रखकर अपने विचार बता सकेंगे।
- कवियों के नाम बता सकेंगे।
- कवियों के बारे में बता सकेंगे।
- रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकेंगे।
- पाठ पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- पद्य, गीत, कविता, वार्तालाप आदि सुनकर समझ सकेंगे। अपने शब्दों में कह सकेंगे।
- संबंधित अंशों के कारण बता सकेंगे।
- पद्य, गीत धारा प्रवाह के साथ गा सकेंगे। अपने शब्दों में कह सकेंगे।
- छात्र समाज के प्रति संवेदनशील बन सकेंगे।

II **अभिव्यक्ति सृजनात्मकता :-**

- पाठ्यांशों की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- अधूरे विषय, कहानी, कविता, संवाद आदि आगे बढ़ा सकेंगे।
- अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकेंगे।
- शब्दों का विविध संदर्भों में सही पद्धति में वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्याय शब्दों के अर्थग्रहण कर दैनिक जीवन में उपयोग कर सकेंगे।
- पद्य या गद्य को एक विधा से दूसरी विधा में बदल सकेंगे।
- निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार पत्रिका, पोस्टर, पावर पाइंट प्रस्तुतीकरण तैयार कर सकेंगे।
- पाठ का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- दिये गये विषय पर अपने विचार लिख सकेंगे, संदेश लिख सकेंगे।
- साक्षात्कार के लिए प्रश्न लिख सकेंगे।
- दिये गये विषय का महत्व लिख सकेंगे।
- किसी पात्र, लेखक या कवि, व्यक्ति, मित्र आदि की प्रशंसा लिख सकेंगे।
- प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की प्रशंसा लिंग, धर्म, वर्ग और भेद के बिना कर सकेंगे।
- भिन्न संस्कृति, संप्रदायों की प्रशंसा कर सकेंगे।

III **भाषा की बात :-**

- व्याकरणांशों को पहचान सकेंगे।
- मुहावरों के अर्थ बताकर उनका वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।
- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- शब्दार्थ बताकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्यायवाची शब्द बता सकेंगे।
- समुच्चय बोधक, संबंध बोधक, विस्मयादि बोधक शब्द जोड़ सकेंगे।
- पुनरुक्त शब्द समझ सकेंगे।
- विपरीतार्थक शब्द लिख सकेंगे।, पद-परिचय बता सकेंगे।
- तत्सम, तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय शब्द पहचान सकेंगे। लिख सकेंगे।
- संधि-विग्रह कर सकेंगे।, समास पहचान सकेंगे।
- कारक शब्द पहचान सकेंगे।
- संयुक्त क्रिया का प्रयोग समझ सकेंगे।
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिख सकेंगे।
- अकर्मक, सकर्मक क्रिया पहचान सकेंगे।
- वाक्य के प्रकार बता सकेंगे।

V माहवार पाठ योजना का विभाजन :-

इकाई	मास	पढ़ानेवाले पाठ का नाम	आवश्यक कालांशों की संख्या	संसाधन	आयोजित किये जानेवाले कार्यक्रम
	जून	1. बरसते बादल	8	वर्षा से संबंधित कुछ चित्र।	• हावभाव के साथ कविता का प्रदर्शन। • वर्षा से संबंधित कविताओं का संग्रहण।
I	जुलाई	2. ईदगाह	8	कुछ त्यौहारों से संबंधित संदर्भों के चित्र, रमज़ान से संबंधित चित्र, किसी मेले का चित्र।	• कहानी का नाटकीकरण। पाठशाला में मेले का आयोजन छात्रों से करवाना।
		• यह रास्ता कहाँ जाता है? (पठन हेतु नाटक)	1		
		3. हम भारतवासी	8	महान व्यक्तियों के चित्र, देश भक्तों के चित्र	• हावभाव के साथ कविता का प्रदर्शन • देश भक्ति से संबंधित कविता, गीत का संग्रहण।
		• शांति की राह में			
II	अगस्त	4. कण-कण का अधिकारी	8	गाँधीजी का चरखा चलाते हुए चित्र, कुछ मेहनती व्यक्तियों के चित्र।	• हावभाव के साथ कविता का प्रदर्शन • छात्रों से श्रम दान करवाना। • श्रम से संबंधित प्रेरणा दायक कविताओं का संग्रहण।
		5. लोकगीत	8	कई प्रकार के लोकगीतों का आडियो सुनवाना जिस संदर्भों में लोकगीत गाये जाते हैं उनके चित्र।	• हावभाव के साथ कुछ लोकगीतों का प्रदर्शन • एक अंश देकर उस विषय पर निबंध लिखाना।
		• उलझन (पठन हेतु)	1		

II	सितंबर	6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी दो कलाकार (उपवाचक)	8 2	महान व्यक्तियों द्वारा लिखे पत्र। प्रतियोगिता का	• हिंदी दिवस का आयोजन भाषण चर्चा आयोजन
III	सितंबर /अक्तूबर	भक्ति पद	8	रैदास, मीराबाई के चित्र, हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई देवताओं के चित्र। संबंधित लोक कथाएँ	• भजन प्रतियोगिता का आयोजन। हाव-भाव के साथ पद, चौपाइयों का गायन
	अक्तूबर	स्वराज्य की नींव	8	लक्ष्मीबाई से संबंधित कहानियाँ। तात्या, लक्ष्मीबाई के चित्र, तोप, नूपुर के चित्र	नाटकीकरण
	अक्तूबर /नवंबर	माँ मुझे आने दे!	1		चर्चा
		दक्षिणी गंगा गोदावरी	8	गोदावरी नदी पी.पी.टी., भारत के मानचित्र में गोदावरी को दर्शाना	यात्रा - वर्णन चर्चा
		अपने स्कूल को एक उपहार (उपवाचक)	2		चर्चा
IV	दिसंबर	नीति दोहे	8	रहीम, बिहारी के चित्र, दोहों का चार्ट	• राग व हाव-भाव के साथ दोहों का गायन पाठशाला में नीति संबंधी सूक्तियों के चार्ट लगाना।
	दिसंबर	जल ही जीवन है	8	जल के विभिन्न उपयोगों को दर्शाता चार्ट	सरकार की ओर से जल संरक्षण के लिए किये जाने वाले कार्यों की सूची बनवाना।
	दिसंबर /जनवरी	क्या आपको पता है? (पठन हेतु)	1		चर्चा
	जनवरी	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	8	दो, तीन विशिष्ट व्यक्तियों से लिये गये साक्षात्कार	साक्षात्कार का आयोजन।
	जनवरी	अनोखा उपाय (उपवाचक)	2		चर्चा

VI अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ (Teacher's reflections) :

VII प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश :

V पाठ - योजना के लिए अध्यापक की सन्नद्धता

पहले पाठ-योजना के अंतर्गत पाठ के उद्देश्य - स्पष्टीकरण, विषय ज्ञान, साहित्य ज्ञान, भाषा ज्ञान, रुचि, अभिप्राय, शिक्षण पद्धतियाँ, शिक्षण सामग्री आदि लिखा करते थे। उसी तरह एक पाठ शिक्षण का अर्थ था - एक पाठ को तीन-चार हिस्सों में विभाजित कर उसी में शीर्षक की घोषणा, कवि परिचय, व्याकरणांश बताना, गृहकार्य देना आदि कार्य किया करते थे। इसके कारण छात्र पाठ के बारे में जान लेना ही ज्ञान समझते थे। पाठ के अभ्यासों का अधिक महत्व नहीं था। उन अभ्यासों के उत्तर भी पाठ से संबंधित होते थे। उन पर किसी भी प्रकार की चर्चा नहीं होती थी।

अब नवीन पाठ्य पुस्तकों की भाषाई दक्षताओं का अनुसरण करते हुए उनके अनुरूप पाठ योजना लिखनी पड़ती है। अब पाठ योजना में अध्यापक कार्य, छात्र कार्य, श्यामपट कार्य जैसे कार्य नहीं होंगे। पूरे पाठ के लिए एक ही बार यानी उन्मुखीकरण से लेकर परियोजना कार्य तक के लिए पाठ योजना बनानी होगी। वार्षिक योजना में तत्संबंधी पाठ की पूर्ति के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या लिखनी चाहिए। उसका अनुसरण करते हुए एक कालांश में क्या करना चाहिए? कैसी रणनीतियों को अपनाना चाहिए? के बारे मं बताते हुए पाठ योजना का निर्माण करना चाहिए।

अ) पाठ योजना - नमूना

I. पाठ का नाम :

II. पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :

III. पाठ के द्वारा अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ :

1. **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** : .....
2. **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** : .....
3. **भाषा की बात** : .....

IV. कालांशवार विभाजन - योजना :

कालांश संख्या	शिक्षण बिंदु	शिक्षण रणनीतियाँ	सामग्री	मूल्यांकन

V. अतिरिक्त जानकारी का संग्रहण :

VI. अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ :

आ) हिंदी पाठ योजना के सोपानों का विवरण

I. पाठ का नाम : जिस किसी पाठ की पाठ योजना लिखनी है, उस पाठ का नाम लिखें। जैसेः जिस देश में गंगा बहती है...

II. पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या : वार्षिक योजना में इस पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या लिखें। इस पाठ के लिए 7 कालांश हैं।

III. पाठ के द्वारा अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ :

1. छात्र इस पाठ की समाप्ति पर अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया शैक्षिक मापदंड में जो दक्षताएँ अर्जित करेंगे, वे यहाँ पर लिखें।

   .....

   .....

2. छात्र इस पाठ की समाप्ति पर अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता शैक्षिक मापदंड में जो दक्षताएँ अर्जित करेंगे, वे यहाँ पर लिखें।

   .....

   .....

3. छात्र इस पाठ की समाप्ति पर भाषा की बात शैक्षिक मापदंड में जो दक्षताएँ अर्जित करेंगे, वे यहाँ पर लिखें।

   .....

   .....

ऊपर दर्शाये गये शैक्षिक मापदंड छात्रों द्वारा अर्जित करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

IV. कालांशवार विभाजन - योजना :

पूरे पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या ध्यान में रखकर किस शिक्षण अंश के लिए कितने कालांश आबंटित किये गये, के बारे में लिखना चाहिए। इसमें उस कालांश की संख्या लिखकर शिक्षण अंश, शिक्षण रणनीति, सामग्री, मूल्यांकन आदि लिखना चाहिए।

कालांश संख्या	शिक्षण अंश	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया/ अधिगम अनुभव	सामग्री	मूल्यांकन
1	प्रस्तावना	प्रत्येक से प्रश्न पूछते हुए पूर्ण कक्षा-कक्ष क्रियाकलाप आयोजित करना चाहिए।	अतिरिक्त सामग्री	इस कालांश में संपन्न शिक्षण अंश का मूल्यांकन

अब तालिका में दी गयी जानकारी के बारे में पता लगाते हैं।

कालांश संख्या : जिस किसी कालांश का आयोजन हो रहा है, उसकी संख्या लिखनी चाहिए। (जैसेः 1ला, 2रा, 3रा आदि।)

शिक्षण अंश : पाठ में उन्मुखीकरण चित्र से लेकर परियोजना तक के सभी अंश शिक्षण अंश ही हैं। जिस शिक्षण अंश का आप शिक्षण कर रहे हैं, उसका शीर्षक यहाँ लिखना चाहिए। (जैसेः उन्मुखीकरण, उद्देश्य, संदर्भ, कवि परिचय, पाठ शिक्षण, अभ्यास आदि।)

शिक्षण रणनीतिः पूर्व में शिक्षण अध्यापक केंद्रित था। वर्तमान में यह छात्र केंद्रित है। इसीलिए छात्रों की भागीदारी, स्वाध्ययन के अवसर बढ़ गये हैं। अतः शिक्षण इसके अनुरूप होना चाहिए। यानी शिक्षण अंश द्वारा अपेक्षित शैक्षिक मापदंड के लिए किस तरह की रणनीति अपनानी चाहिए, के बारे में लिखना चाहिए। (जैसेः व्यक्तिगत क्रियाकलाप, समूहिक क्रियाकलाप, पूर्ण कक्षाकक्ष क्रियाकलाप।) अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता, भाषा की बात शैक्षिक मापदंड के क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनानी चाहिए। वे हैं-

- समूह क्रियाकलाप, व्यक्तिगत क्रियाकलाप, पूर्ण कक्षाकक्ष क्रियाकलाप (पठन, लेखन, सृजनात्मक, श्रवण-संवाद संबंधित क्रियाकलाप आदि।)
- परस्पर चर्चाएँ, परियोजना कार्य, अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, प्रदर्शन-चर्चा, प्रतिवेदन की तैयारी चर्चा, भाषाई विकास के कार्यक्रम आदि।

भाषा शिक्षण निम्नलिखित सोपानों के अनुसार होना चाहिए। वे हैं-

- प्रस्तावनाः उन्मुखीकरण, शीर्षक घोषणा, कवि परिचय, उद्देश्य आदि।
- अर्थसंग्रहण / पठन क्रियाकलापः सस्वर वाचन, मौन वाचन, शब्दकोश में ढूँढ़ना।
- पाठ्यांश विषय पर चर्चा, अवगत कराना, पाठ के मुख्य शब्द, मुहावरे-कहावतें, संदेशात्मक वाक्य, शैली, निगूढ़ अर्थ, कवि का उद्देश्य, समकालीन अंशों के साथ जोड़ते हुए चर्चा।

सामग्री : शिक्षण अंश से अवगत कराने व सुदृढ़ बनाने के लिए पाठ से जुड़े अभ्यासों के लिए किन अतिरिक्त सामग्रियों का उपयोग करते हैं, के बारे में लिखना चाहिए। (जैसेः कवि का चित्र, शब्दकोश, अंतरजाल, संदर्भ ग्रंथ, नमूने आदि।)

मूल्यांकन : शिक्षण अंश की पूर्ति के बाद छात्रों को दक्षतावार निपुणता प्राप्त करने के लिए उन्हें सोच-समझ कर बातचीत करने योग्य प्रश्न पूछने चाहिए। अभ्यास के प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

V. अतिरिक्त जानकारी संकलन :

पाठ शिक्षण के लिए आवश्यक अतिरिक्त जानकारी संकलन, समाचार, विवरण, क्रियाकलाप से जुड़ी पुस्तकों से जानकारी इकट्ठा कर लिखना चाहिए।

VI. अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ :

पाठ की समाप्ति के बाद अपने अनुभव, प्रतिक्रियाएँ, छात्रों के अधिगम के बारे में लिखना चाहिए।

पाठ योजना (पद्य पाठ)

I **पाठ का नाम : कण-कण का अधिकारी**

II **पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :** 8

III **पाठ द्वारा अपेक्षित उपलब्धियाँ / दक्षताएँ :**

I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया :-**

- भाग्य और कर्म के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
- श्रम के महत्व पर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
- कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के बारे में बता सकेंगे।
- कविता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- दिये गये भाव से संबंधित पंक्तियाँ कविता में से चुनकर लिख सकेंगे।
- दिये गये पद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

II. **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :-**

- अनुचित तरीके से धन कमाने व मेहनत से कमाये गये धन में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- मेहनती व्यक्ति की श्रेष्ठता के बारे में लिख सकेंगे।
- श्रम करने वालों के अधिकारों के बारे में लिख सकेंगे।
- 'समानता' का अर्थ जानकर उससे संबंधित कहानी लिख सकेंगे।
- 'जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है।' इस पर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।

III. **भाषा की बात :-**

- दिये गये शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के पुनरुक्ति शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के वचन बदल कर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के भाववाचक संज्ञा रूप लिख सकेंगे।
- दिये गये शब्दों का संधि विग्रह कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों का समास पहचान सकेंगे।, दिये गये शब्दों का पद परिचय दे सकेंगे।
- रेखांकित शब्दों का पद परिचय दे सकेंगे।, कारक पहचान सकेंगे।
- संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग कर सकेंगे।, दिये गये शब्दों में अंतर बता सकेंगे।
- उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे।, वाक्य का रूप बदलकर लिख सकेंगे।

कालांश संख्या	पाठ्यांश/ शिक्षण बिंदु	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
1.	उन्मुखीकरण अंश पर बातचीत, उद्देश्य, कवि परिचय।	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● उन्मुखीकरण अंश पर बातचीत ● कक्षा के सभी बच्चों से बातचीत ● शीर्षक घोषणा (कण-कण का अधिकारी) ● उद्देश्य (पाठ में दिया गया उद्देश्य छात्रों से पढ़वाना।) ● कवि परिचय (रामधारी सिंह दिनकर) का परिचय छात्रों से पढ़वाना।)	गाँधी जी का चार्ट (विभिन्न कार्य करते हुए) रामधारी सिंह दिनकर का चार्ट	1. आप कौन-कौन से कार्य करते हैं? 2. बच्चों को कौन-कौन से कार्य स्वयं करने चाहिए?
2.	पाठ-पठन अर्थग्रहण कविता पाठ के अन्य चित्रों के बारे में चर्चा काठिन्य निवारण	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (उन्मुखीकरण प्रसंग व कवि के बारे में पुनरावृत्ति करना) 2. पठन-पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन - अध्यापक द्वारा ● सस्वर वाचन - छात्रों द्वारा ● मौन वाचन - छात्रों द्वारा ● कठिन शब्दों का रेखांकन ● शब्दकोश का प्रयोग ● सामूहिक चर्चा ● शब्दों के अर्थ चर्चा द्वारा श्यामपट पर लिखना। जैसे - (मनुज, संचित, छल, विनीत, विजीत, न्यास्त)	शब्द कोश	1. सीखे गये नवीन शब्द लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3.	पाठ-पठन कविता की प्रथम 8 पंक्तियाँ	1. परिचय ● बच्चों से बातचीत ● पुनरावृत्ति 2. पठन-पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन - अध्यापक द्वारा ● सस्वर वाचन - छात्रों द्वारा ● मौन वाचन - छात्रों द्वारा ● कविता का विवरण, चर्चा, अवधारणा (विचारोत्तेजक प्रश्न द्वारा जैसे :- मनुष्य किन-किन तरीकों से धन का अर्जन करता है?	पाठ्यपुस्तक	क्या हमें भाग्य पर निर्भर रहना चाहिए? क्यों?
4.	पाठ पठन पाठ्यांश पर चर्चा कविता की अंतिम 8 पंक्तियाँ	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (सीखे गये प्रश्नों के बारे में पुनरावृत्ति करना।) 2. पठन-पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन - अध्यापक द्वारा ● सस्वर वाचन - छात्रों द्वारा ● मौन वाचन - छात्रों द्वारा ● कविता की अंतिम 8 पंक्तियों पर विचारोत्तेजक प्रश्नों द्वारा चर्चा जैसे :- ● कैसे व्यक्ति का सम्मान किया जाना चाहिए? ● परियोजना कार्य पर निर्देश	पाठ्यपुस्तक	प्रकृति की वस्तुओं पर पहला अधिकार किसका है? क्यों? विश्व श्रम दिवस (मई दिवस) के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए

5.	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया अ,आ,इ,ई	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास (अ) छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● कक्षा के प्रत्येक छात्र से प्रश्न पूछना। ● चर्चा करना। ● उपसंहार बताना। (आ) छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● पाठ पढ़ने के लिए कहना। ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवाना ● अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहना। ● प्रश्नोत्तरों का आयोजन ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवाना (पूर्ण रूप से कक्षा क्रियाकलाप)	पाठ्यपुस्तक समाचार-पत्र की कतरन, लेख आदि	1. अभिव्यक्ति सृजनात्मकता में 'अ' शीर्षकीय लघु प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहना।
6.	अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता अ, आ	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (उदाः श्रम का क्या महत्व है? अपने विचार बताइए।) 2. आप किस प्रकार धन अर्जित करना चाहेंगे और क्यों? II. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास ● अभ्यास मे 'आ', 'इ', 'ई' के प्रश्न श्यामपट पर लिखना।	छात्रों द्वारा लिखे गये उत्तरों के चार्ट, कविता	(ई) 'नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है। जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है', अपने विचार व्यक्त कीजिए।

		कवि ने मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए। ● पूरी कक्षा के प्रत्येक छात्र से चर्चा करवाना। ● व्यक्तिगत या समूह में उत्तर लिखवाना। लिखी हुई सामग्री पढ़वाना। ● भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर, त्रुटियों का संशोधन ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन - चर्चा - संशोधन		
7,8	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास भाषा की बात व पुनरावृत्ति सुनना - बोलना	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास ● भाषा की बात के अंश पढ़वाना, समझाना, संशोधन करना। ● उदाहरण देना। (जन, पृथ्वी, धन, पर्याय शब्द) ● चर्चा- अर्थग्राह्यता सूत्रीकरण ● पाठ में पिछड़े छात्रों के लिए पुनरावृत्ति करना।	पाठ्यपुस्तक	1. सीखे गये शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

पाठ योजना (गद्य पाठ)

I **पाठ का नाम :** **ईदगाह**

II **पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :** 9

III **पाठ द्वारा अपेक्षित उपलब्धियाँ / दक्षताएँ :**

1.
- पात्र के बारे में अपने विचार बता सकेंगे।
- पाठ के कहानीकार प्रेमचंद के बारे में बता सकेंगे।
- पाठ पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकेंगे।
- पाठ के आधार पर हाँ या नहीं में उत्तर दे सकेंगे।
- अनुच्छेद पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

II.
- पाठ के आधार पर क्यों, कैसे प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- पाठ की किसी घटना को संवाद रूप में लिख सकेंगे।
- बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर, स्नेह आदि की भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

III.
- दिये गये शब्दों के पर्यायवाची लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के उपसर्ग पहचान सकेंगे।
- प्रत्यय पहचान सकेंगे।
- दिये गये शब्दों को भाववाचक संज्ञा रूप में लिख सकेंगे।
- दिये गये क्रिया शब्द का प्रयोग करते हुए उसके विभिन्न रूप बता सकेंगे।
- मुहावरे पहचानकर उनका अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
1.	उन्मुखीकरण अंश पर बातचीत, उद्देश्य, लेखक परिचय।	1. प्रस्तावना • संबोधन • उन्मुखीकरण अंश के बारे में कक्षा के सभी बच्चों से बातचीत। • शीर्षक की घोषणा (श्यामपट पर लिखना) • उद्देश्य (छात्रों के द्वारा उद्देश्य पढ़ाना चाहिए) 2. पाठ शिक्षण - चर्चा - अर्थग्राह्यता • लेखक परिचय (छात्रों से पढ़वाना चाहिए।)	पेड़, फूल का चित्र, प्रेमचंद का चित्र	चित्र के आधार पर शब्द वाक्य लिखना
2.	पाठ-पठन अर्थ ग्रहण काठिन्य निवारण	1. प्रस्तावना • संबोधन • पुनरावृत्ति (लेखक के बारे में पुनरावृत्ति करना।) 2. पठन - पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता • पाठ के चित्र के बारे में बातचीत करवाना। • व्यक्तिगत वाचन • आदर्श वाचन • मौन वाचन • कठिन शब्दों का रेखांकन • शब्दकोश का प्रयोग • सामूहिक चर्चा • शब्दों के अर्थ चर्चा द्वारा श्यामपट पर लिखना	शब्दकोश, पाठ्यपुस्तक	शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
3. 4.	पाठ-पठन पाठ्यांश पर चर्चा	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (सीखे गये नवीन शब्दों के बारे में पुनरावृत्ति करना।) 2. पठन-पाठन - चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन ● मौन वाचन पाठ्यांश पर चर्चा (विचारोत्तेजक प्रश्न पूछना। जैसे :-) ● बच्चे कौन-कौनसी दुकान पर गये? ● हामिद ने क्या खरीदा? ● प्रशंसा	खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद आदि का चार्ट। ईद का चार्ट	1. हामिद किसके साथ रहता था? 2. बच्चे कहाँ जा रहे थे? 3. हामिद ने चिमटा ही क्यों खरीदा? 4. रमज़ान के महीने में कितने रोज़े होते हैं?
5.	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (सीखे गये प्रश्नों के बारे में पुनरावृत्ति) 2. दक्षता की प्राप्ति अभ्यास ● अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया प्रश्न श्यामपट पर लिखना। ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● कक्षा के हर छात्र से प्रश्न पूछना ● उपसंहार बताना (आ) छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● पाठ पढ़ने के लिए कहना। ● समूह कार्यके रूप में अर्थग्राह्यता के प्रश्नों के उत्तर लिखवाना। ● प्रदर्शन-चर्चा-उपसंहार परियोजना के अभ्यास के बारे में निर्देश देना।	समाचार पत्र, अन्य पुस्तकें	अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता में 'अ' शीर्षकीय लघु प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहना।

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
6.	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास- अभिव्यक्ति सृजनात्मकता, प्रशंसा, परियोजना कार्य	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास ● श्यामपट पर आ, प्रश्न लिखना। ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● सामूहिक रूप से छात्रों को अलग-अलग समूहों में बाँटकर प्रश्न के उत्तर पर चर्चा करवाना। ● प्रश्न के उत्तर पर चर्चा करवायें। ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवायें ● भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर, त्रुटियों का संशोधन ● प्रशंसा कार्य का प्रदर्शन - चर्चा संशोधन करना। ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन - चर्चा, संशोधन	पाठ्य पुस्तक	हामिद ने अन्य बच्चों की तरह मिठाई और खिलौने क्यों नहीं खरीदे? वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कहानी ढूँढ़कर लाइए।
7.	अभिव्यक्ति- सृजनात्मकता इ, ई	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षता की प्राप्ति अभ्यास ● श्यामपट पर प्रश्न लिखना। ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● छात्रों को समूह में बाँटकर चर्चा करवाना। ● व्यक्तिगत या समूह रूप से उत्तर लिखवायें। 3. अर्थग्राह्यता की जाँच ● भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर त्रुटियों का संशोधन ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन-चर्चा-संशोधन करना।) ●व्यक्तिगत तौर पर प्रतिवेदन लिखना।	पाठ्य-पुस्तक	हामिद की प्रशंसा में चार वाक्य लिखिए।

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
8.	भाषा की बात अ, आ, इ, ई	1. परिचय • संबोधन • पुनरावृत्ति 2. दक्षता की प्राप्ति हेतु अभ्यास • छात्रों से प्रश्न पढ़वाना • चर्चा करवाना • अन्य उदाहरणों पर चर्चा करना। • व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखने के लिए कहना। 3. अर्थग्राह्यता की जाँच	व्याकरण की पुस्तक	(ई) अभ्यास कार्य करने के लिए कहना
9.	भाषा की बात परियोजना कार्य	1. परिचय • संबोधन • पुनरावृत्ति 2. पठन - पाठन • छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। • अन्य उदाहरणों पर चर्चा करना जैसे मुहावरे कहने के लिए कहना। • व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखने के लिए कहना। • परियोजना कार्य का प्रदर्शन करवाना। 3. अर्थग्राह्यता की जाँच।	व्याकरण पुस्तक	पाठ की पुनरावृत्ति हेतु अभ्यास संबंधी प्रश्न

अध्याय–V

सतत् समग्र मूल्यांकन
(Continuous Comprehensive Evalution)

1) G.O. 17

2) सतत् समग्र मूल्यांकन

3) रचनात्मक आकलन

4) सारांशात्मक आकलन

5) प्रश्नों का भारपात

6) प्रश्नों के प्रकार

7) प्रश्नों का स्वभाव

8) नमूना प्रश्न पत्र (कक्षा - IX द्वितीय भाषा)

9) नमूना प्रश्न पत्र (कक्षा - X द्वितीय भाषा)

10) नमूना प्रश्न पत्र (कक्षा X प्रथम भाषा)

11) नमूना उत्तर पुस्तिका

12) उत्तर पुस्तकों की जाँच-सूचनाएँ व मार्गदर्शन

13) रचनात्मक मूल्यांकन-I

14) सारांशात्मक मूल्यांकन-III (द्वितीय भाषा हिंदी)

15) सारांशात्मक मूल्यांकन उत्तर पुस्तिका

16) प्रश्नवार अंक वितरण विवरण

17) सारांशात्मक मूल्यांकन-III (प्रथम भाषा हिंदी)

18) सारांशात्मक मूल्यांकन-III (कांपोजिट हिंदी)

आंध्र प्रदेश सरकार

सारांश (ABSTRACT)

विद्यालयीन शिक्षा विभाग - एस.सी.ई.आर.टी., आं.प्र., हैदराबाद - शैक्षिक वर्ष 2014-15 से IX और X कक्षाओं के लिए सुधार - एकमत से सहमति - आदेश जारी।

विद्यालयीन शिक्षा (पी.ई. - कार्यक्रम II) विभाग

G.O.Ms.No. 17 दिनांक : 14.05.2014

निम्नलिखित को पढ़िए:-

1. G.O.Ms.No.169, School Education (PE-Prog II) Dept. Dt. 29.12.2011
2. G.O.Ms.No.62, School Education (PE-Prog II) Dept. Dt. 23.07.2012
3. G.O.Ms.No.60, School Education (PE-SSA) Dept. Dt. 24.12.2013
4. From the C&DSE Lr. RC.No. 302/E1-1/2009, Dt. 17.04.2013
5. From the Director, SCERT, AP, Hyderabad Lr.No.185/D1/C&T/SCERT/2013 Dt. 08.05.2014.

आदेश :

RTE अधिनियम - 2009 और NCF-2005 की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए I से X कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम संशोधन और पाठ्यचर्या में सुधार के कार्यो के लिए ऊपर दिए गए संदर्भ। 1 और 2 में आदेश जारी किए गए हैं। संदर्भ 3 में राज्य में सतत् और समग्र मूल्यांकन लागू करने के आदेश जारी किए गए हैं। इसके अनुसार एस.सी.ई.आर.टी. निदेशक ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के आधार पर विस्तृत रूप से पाठ्यचर्या में सुधार का कार्यभार संभाला और 1 से 10 कक्षाओं के पाठ्यक्रम संशोधन किया और साथ ही 1 से 10 कक्षाओं की सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों का विभिन्न चरणों में संशोधन किया। X कक्षा की पाठ्यपुस्तक आगामी शैक्षिक वर्ष अर्थात 2014-15 से आरंभ की जाएगी। जैसे नयी पुस्तकें आरंभ हुई वैसे ही मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवर्तन करने की भी आवश्यकता हुई। यह 1 से VIII कक्षाओं के लिए पहले से ही किया जा चुका है।

2. ऊपर दिए गए 5 संदर्भ के अनुसार एस.सी.ई.आर.टी., निदेशक, ने IX और X कक्षाओं के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया और परीक्षा योजना में परिवर्तन के लिए सुझाव प्रस्तुत किये हैं और बताया है कि प्रस्ताविक परीक्षा सुधार, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन के लाने में सहायक होंगे और नयी पाठ्यपुस्तकों के कार्यान्वयन में सुधान होना। क्रियाकलापों, परियोजनाओं, सवाल और चर्चाओं, प्रयोगों आदि के द्वारा अधिगम के कार्य में सुधार होना। इसीलिए उन्होंने निम्नलिखित अंशों के आधार पर राज्य के सभी आध्यामिक विद्यालयों जैसे :- सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, पंचायतराज निकायों, मान्यताप्राप्त निजी विद्यालयों में परीक्षा सुधारों के क्रियान्वन के आदेश जारी करने का निवेदन किया है।

(अ) प्रत्येक विषय के पेपरों की संख्या :-

- तेलुगु, अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू आदि भाषा के विषयों के लिए एक पेपर होगा।
- भाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों जैसे :- विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और गणित के लिए दो-दो पेपर होंगे। उदाहरण :- विज्ञान - पेपर 1 जीव विज्ञान, पेपर - 2 भौतिक विज्ञान, सामाजिक अध्ययन - पेपर 1 भूगोल और अर्थशास्त्र, पेपर - 2 इतिहास और नागरिक शास्त्र, गणित - पेपर 1 - संख्याएँ, समुच्चय, एलजेब्रा, प्रोग्रेशन, को आर्डिनेट ज्योमेट्री और पेपर - 2 ज्यामेट्री, ट्रिगनोमेट्री, मेन्सुरेशन, सांख्यिकी, प्रोबेविलीटी आदि।

(आ)पेपर और अंकः

विषय	कुल अंक	अंतिम पब्लिक परीक्षा के लिए अंक	आंतरिक आकलन अंक (FA)
प्रथम भाषा (तेलुगु/हिंदी/उर्दू आदी)	100 अंक	80	20
द्वितीय भाषा (तेलुगु/हिंदी)	100 अंक	80	20
तृतीय भाषा (अंग्रेज़ी)	100 अंक	80	20
गणित पेपर - 1	50 अंक	40	10
गणित पेपर - 2	50 अंक	40	10
भौतिक विज्ञान	50 अंक	40	10
जीव विज्ञान	50 अंक	40	10
सामाजिक अध्यायन - पेपर - 1 (भूगोल और अर्थशास्त्र)	50 अंक	40	10
सामाजिक अध्यायन - पेपर - 2 (इतिहास और नागरिक शास्त्र)	50 अंक	40	10
कुल	600 अंक	480	120

(इ) अंक भार और परीक्षा की अवधि :

- भाषा विषय - प्रत्येय पेपर के लिए 100 अंक होंगे और परीक्षा की अवधि 3.00 घंटे होगी। प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए अतिरिक्त 15 मिनट दिए जाएँगे।
- गैर भाषा विषय - गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन - हर विषय के लिए दो पेपर हर पेपर के लिए 50 अंक तथा परीक्षा की अवधि 2 घंटे, 30 मिनट होगी। प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए अतिरिक्त 15 मिनट दिए जाएँगे।
- IX कक्षा के लिए सारांशात्मक परीक्षा विद्यालय आधारित होगी। X कक्षा की अंतिम पब्लिक परीक्षा निदेशक (Director), सरकारी परीक्षा के द्वारा आयोजित की जायेगी। प्रत्येक विषय के लिए परीक्षा 80% अंकों के लिए आयोजित की जायेगी। शेष 20% अंक आंतरिक आकलन

अर्थात् रचनात्मक आकलन (FA) के लिए होंगे।

- एक शैक्षिक वर्ष में आयोजित किए गए चार रचनात्मक आकलनों का औसत 20% अंकों के लिए लिया जायेगा अर्थात् X कक्षा की पब्लिक परीक्षा में चार रचनात्मक आकलनों का औसत 20% अंकों के लिए लिया जायेगा।
- सामान्य अवकाश (General Holidays) के दिनों को छोड़कर प्रत्येक दिन एक पेपर आयोजित किया जायेगा।

सारांशात्मक आकलन :

- IX और X कक्षाओं के लिए प्रत्येक शैक्षिक वर्ष में तीन सारांशात्मक परीक्षाओं आयोजित की जायेगी। X कक्षा के लिए तीसरी सारांशात्मक परीक्षा बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन के द्वारा आयोजित की जायेगी।
- पहली और दूसरी सारांशात्मक परीक्षाएँ विद्यालय द्वारा आयोजित की जायेगी। इनके लिए 80% अंकों के लिए प्रश्न तैयार करने होंगे। इससे पब्लिक परीक्षा के लिए छात्रों कीतैयारी सुनिश्चित होती है। शेष 20% अंक रचनात्मक आकलन के आधार पर दिए जायेंगे।
- कक्षा IX का सारांशात्मक आकलन तथा कक्षा X का 1 और 2 का सारांशात्मक आकलन, पब्लिक परीक्षा के निर्देशों के आधार पर होगा। शैक्षिक मापदंडों को दर्शाने वाले ब्लूप्रिंट के आधार पर प्रश्नों को तैयार करना होगा।

(ई) आंतरिक और बाह्य भार - रचनात्मक और सारांशात्मक :

प्रत्येक विषय के लिए 80% अंक सारांशात्मक/बाह्य परीक्षा और 20% अंक रचनात्मक आकलन के अंतर्गत ली जाने वाली आंतरिक परीक्षाओं के लिए निर्धारित हैं। निम्न तालिका में रचनात्मक आकलन के क्षेत्र और अंक दिये गये हैं।

क्र.सं.	रचनात्मक आकलन के साधन	अंक
1.	भाषा विषय - कहानियों की पुस्तकें, बाल-साहित्य, समाचार-पत्र आदि पढ़ना तथा लिखना और प्रस्तुतीकरण के माध्यम से कक्षा में प्रतिक्रिया करना।	5
	विज्ञान - प्रयोग करना और रिकार्ड लिखना	5
	गणित - विभिन्न अवधारणाओं के अंतर्गत आने वाले गणितीय प्रश्नों का निर्वहण - लिखना और कक्षा कक्ष में प्रस्तुतीकरण	5
	सामाजिक अध्ययन - विषय - वस्तु पढ़ना तथा लेखन के द्वारा समकालीन सामाजिक मुद्दों पर विश्लेषण और प्रतिक्रिया - कक्षाकक्ष में प्रदर्शन	5
2.	बच्चों के लिखित कार्य-उनकी पुस्तकों में (स्व अभिव्यक्ति/प्रत्येक इकाई/ पाठ के अंतर्गत दिये गये अभ्यासों के प्रश्न/कार्य के उत्तर लिखना/करना) बच्चों को इनके उत्तर गाइड। स्टडी मेटेरियल से बिल्कुल नहीं लिखना चाहिए।) उन्हें स्वयं सोचकर अपने शब्दों में लिखना चाहिए।	5
3.	परियोजना कार्य	5
4.	लघु या पर्ची परीक्षा	5
	कुल	20

- प्रत्येक छात्र को उपर्युक्त तालिका में रचनात्मक आकलन से संबंधित क्रम संख्या 1,2,3 के लिए हर विषय के लिए एक पृथक पुस्तिका बनानी होगी। क्रमसंख्या - 2 के लिए प्रत्येक बालक एक अलग पुस्तिका रख सकता है। बच्चों के कार्यों को दर्शाने वाली इन पुस्तकों को सुरक्षित रखना चाहिए क्योंकि इन्हीं के आधार पर अध्यापक अंक प्रदान कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर पर्यवेक्षक अधिकारी भी इनकी जाँच कर सकते हैं।
- प्रत्येक विषय में, पब्लिक परीक्षाओं में, चार रचनात्मक आकलनों के औसत के 20% अंक लिए जायेंगे।

आंतरिक अंकों की जाँच तथा निदेशक कार्यालय (O/o Director) **सरकारी परीक्षा** (Govt. Exams) **को सौपना :-**

- चौथे रचनात्मक आकलन के पूर्ण होने के पश्चात्, प्रधानाध्यापक को उपर्युक्त आंतरिक परीक्षाओं से संबंधित रिकार्डो की जाँच करनी चाहिए तथा बाह्य सुधार समिति (External Moderation Committee) के लिए तैयार रखना चाहिए। समिति की जाँच और अनुमोदन के पश्चात् निश्चित प्रारूप (Fixed Format) से ऑन लाईन के द्वारा अंकों का विस्तृत विवरण भेजना चाहिए। विद्यालयों द्वारा भेजे जाने वाले अंकों से संबंधित कार्यक्रम कासंचालन निदेशक (Director) सरकारी परीक्षा द्वारा किया जायेगा।
- दो या तीन मंडलों के 10 से 15 विद्यालयों को जाँच और सुधार की एक इकाई केरूप में माना जायेगा। DEO के द्वारा निर्मित सुधार समिति, दिये गये मंडलों के सरकारी और निजी पाठशालाओं में आंतरिक और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों के लिए दिए गए अंकों और ग्रेड़ों की जाँच करेगी।

(उ) उत्तीर्णता अंक और उत्तीर्णता के लिए निम्नतम अंकः

- सभी भाषा और गैर भाषा विषयों के लिए उत्तीर्णता अंक 35% होंगे। छात्रों को आंतरिक (FA) और सारांशात्मक दोनो परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना आवश्यक है।
- गैर भाषिक विषयों में, प्रत्येक छात्र को दोनों पेपरों में उत्तीर्ण होना आवश्चक है।
- रचनात्मक आकलन (आंतरिक) विज्ञान के विषय को छोड़कर सभी विषयों में 20 अंक निर्धारित हैं। विज्ञान में - 10 अंक जीव विज्ञान और 10 अंक भौतिक विज्ञान के लिए हैं। प्रत्येक छात्र को आंतरिक परीक्षा में 10 में से 3.5 अंक लाना अनिवार्य है।
- प्रत्येक छात्र को, हर विषय में आंतरिक और बाह्य परीक्षा के अंकों को मिलाकर 35% अंक लाना अनिवार्य है। इसके लिए उसे बाह्य पब्लिक परीक्षा में 28 अंक और आंतरिक परीक्षामें 7 अंक लाने होंगे।

द्वितीय भाषा के उत्तीर्णता अंकः

- अन्य भाषा विषयों के समान ही द्वितीय भाषा - हिंदी और तेलुगु के लिए उत्तीर्णत्ता अंक .. होंगे।

(ऊ) ग्रेडिंग

- IX और X कक्षाओं के लिए अंक आधारित ग्रेडिंग और उनकी श्रेणी नीचेदी गयीहै।

ग्रेड	भाषा विषयों में अंक (100अंक)	गैर भाषिक विषयों में अंक (50)	ग्रेड अंक
A1	91 से 100 अंक	46 से 50 अंक	10
A2	81 से 90 अंक	41 से 45 अंक	9
B1	71 से 80 अंक	36 से 40 अंक	8
B2	61 से 70 अंक	31 से 35 अंक	7
C1	51 से 60 अंक	26 से 30 अंक	6
C2	41 से 50 अंक	21 से 25 अंक	5
D1	35 से 40 अंक	18 से 20 अंक	4
D2	0 से 34 अंक	0 से 17 अंक	3

ग्रेड अंकों के अंकगणितीय औसत द्वारा एकीकृत ग्रेड अंक औसत (CGPA) की गणना की जायेगी।

ए) अन्य पाठ्यक्रमीय विषय (पाठ्यक्रम सहगामी क्षेत्र) - मूल्यांकन

- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलाप जैसे :- शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा, कला और सांस्कृतिक शिक्षा, कार्य और कंप्यूटर शिक्षा, मूल्य शिक्षा और जीवन कौशल आदि विद्यालय पाठ्यक्रम के भाग हैं। इन विषयों के निर्वहण के लिए विद्यालय की समय-सारिणी में कालांशों का निर्धारण किया गया है। IX और X कक्षाओं के आकलन के लिए इन विषयों (क्षेत्रों) को भी जोड़ा गया है। हर विषय (क्षेत्र) के लिए 50 अंक होंगे।
- कक्षा IX और X के अंक प्रमाण पत्रों में इन विषयों के ग्रेड विवरणको दर्ज करना होगा। इन क्षेत्रों के लिए A+, A, B, C, D जैसे 5 अंकीय ग्रेड पैमाने को लागू किया जायेगा।
- इन विषयों के लिए बोर्ड परीक्षा नहीं ली जायेगी। किंतु एक शैक्षिक वर्ष में तीन बार अर्थात् त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक के लिए इन क्षेत्रों का मूल्यांकन किया जायेगा। अध्यापक को इनकी जाँच के पश्चात् अंक प्रदान करने होंगे। औसत को मान्यता दी जायेगी और सुधार समिति की जाँच के पश्चात् ग्रेड का विवरण प्रधानाध्यापक द्वारा ऑनलाइन से निदेशक (Director) सरकारी परीक्षा को भेजा जायेगा।
- प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह इन पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों के आयोजन और उनके आकलन संबंधी कार्यों का दायित्व शिक्षाओं को सौंपे। शिक्षकों को उनकी रुचि के आधार पर क्षेत्रों के चयन का अवसर दिया जा सकता है। यदि यह संभव न हो तो प्रथानाध्यापक को चाहिए कि वह नीचे दिए गए सुझावों के आधार पर कार्यवाहक शिक्षाओं को इन पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों का कार्य सौंपे।

उदाहरण :-

- भाषा अध्यापकों/सामाजिक अध्ययन के अध्यापकों को मूल्य शिक्षा या जीवन कौशल

- सामाजिक अध्ययन के अध्यापकों / भाषा अध्यापकों को कला और सांस्कृतिक शिक्षा
- भौतिक निदेशक (Physical Director)/शारीरिक शिक्षा अध्यापक (Physical Education Teacher) के द्वारा शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा आयोजित की जायेगी। यदि किसी कारणवश DD/PET उपलब्ध न हो तो जीव विज्ञान के अध्यापक को यह कार्य सौंपा जा सकता है।

  पाठ्यक्रम सहगामी क्षेत्रों को अलग से दर्शाया जायेगा और पाठ्यक्रम के क्षेत्रों की ग्रेडिंग के लिए इन्हें जोड़ा नहीं जायेगा।

गुणात्मक पहलू :

(ऐ) प्रश्न - पत्र और प्रश्नों की प्रकृति :

प्रश्न विचारात्मक, विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक होने चाहिए जो बच्चों की चिंतन, तार्किक विश्लेषण और निर्णय की क्षमता की जाँच करें तथा उन्हें स्व-अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित कर रटंत स्मृति से दूर कर सकें। बच्चों को तर्क पूर्ण ढंग से सोचनै और स्वरचना (अपने शब्दों में उत्तर लिखने) के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। रटने के तरीकों, स्मृति आधारित गतिविधियों (उत्तरों को कण्ठस्थ करना), गाईड के उपयोग आदि के स्थान पर स्व. अभिव्यक्ति को केन्द्र बनाना चाहिए।

- प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को सोचकर लिखने के लिए प्रेरित करें। प्रश्न विश्लेषणात्मक, विचारात्मक और प्रयोगात्मक होने चाहिए।
- पब्लिक परीक्षा में एक बार जो प्रश्न दिए जा चुके हैं उन्हें दुहराना नहीं चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक इकाई और पाठ के अभ्यासों के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रश्नों को परीक्षा में जैसे के तैसे नहीं दिया जाना चाहिए। प्रश्न शैक्षिक मापदंडों को दर्शाने वाले होने चाहिए।

शैक्षिक मापदंड/अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ

- पब्लिक परीक्षा में दिए जाने वाले प्रश्नों का संबंध, संबंधित विषय में अर्जित की जाने वाली दक्षताओं/शैक्षिक मापदंडों से होना चाहिए।
- प्रत्येक विषय की दक्षताओं के लिए दिए जाने वाले भार को तय किया जानाचाहिए, ब्लू प्रिंट। भार तालिका का निर्माण कर उसके अनुसार प्रश्न पत्र तैयार किए जाने चाहिए।

परीक्षा अंशों के प्रकारः-

- परीक्षा अंशों की प्रकृति निम्नलिखित प्रकार की होगी -

A) **गैर - भाषिक विषय (विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययन)**

- निबंधात्मक प्रश्न
- लघु उत्तरात्मक प्रश्न
- अति लघु प्रश्न
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न - बहुविकल्पीय प्रश्न

B) **भाषा-विषय - तेलुगु और अन्य भारतीय भाषाएँ**

- पठन समग्रता
- लेखन
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति
- शब्द भंडार
- व्याकरण

C) **भाषा - अंग्रेज़ी**

- पठन समग्रता
- शब्द भंडार
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति
- व्याकरण

j) **प्रश्न - विकल्प**

- प्रत्येक प्रश्न पत्र में केवल निबंधात्मक प्रकार के प्रश्नों के लिए आंतरिक विकल्प हो सकता है।

k) **प्रश्न - भार**

- अपेक्षिक दक्षताओं और प्रश्नों की प्रकृति पर अंक भार दर्शाते हुए ब्लू प्रिंट बनाया जाएगा। पाठ/इकाई को विशेष भार नहीं दिया जाएगा। प्रश्न किसी भी पाठ/पाठ्यपुस्तक के किसी भी भाग के दिये जा सकेत हैं।
- प्रश्न पत्र बनाते समय अंक भार तालिका को ध्यान में रखना होगा। प्रश्न का प्रकार (निबंधात्मक, लघु, अति लघु उत्तर और वस्तुनिष्ठ प्रश्न) तथा अपेक्षित दक्षतानुसार प्रश्न (प्रत्येक अपेक्षित दक्षताओं आदि को कितने अंक तथा प्रश्न)

l) **एक ही उत्तर पुस्तिका तथा अतिरिक्त पेपर नहीं दिया जाएगा**

- अनुच्छेद/वाक्य/शब्दों के रूप उत्तर के विस्तार का सुझाव देने के पश्चात यह प्रस्ताव रखा गया है कि छात्रों को उत्तर लिखने के लिए केवल एक उत्तर दी जाएगी। अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका या पेपर नहीं दिये जाएँगे।

m) **उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच और पुनःजाँच की सुविधा**

- चूँकि प्रश्न विचारोत्तेजक तथा ओपन एंडेड हैं तो जाँच सावधानि पूर्वक होनी चाहिए। उत्तर पुस्तिकाओंकी उचित जाँच के लिए जाँच कुँजी के साथ SCERT के द्वारा अध्यापिकाओं को उचित निर्देश भी दिए जाएँगे।
- यदि छात्र चाहेतो उसे उत्तर पुस्तिकाओं की पुनःजाँच की सुविधा प्रान की जाय इससे उत्तर पुस्तिका जाँच में पारदर्शकता आएगी।
- SCERT के द्वारा परीक्षा सुधार और पुस्तिका की जाँच केलिए निर्देश दिये जाय। छात्रों की स्वाभिव्यक्ति, विश्लेषण की शक्ति, स्वरचना, प्रयोग और व्याख्या, चर्चा और विचारों का प्रदर्शन आदि को भी विषय वस्तु के साथ-साथ जाँच के आधार बनाये जाय।

n) SSC अंकों के प्रमाण पत्र

- X कक्षा की सार्वजनिक परीक्षा के अंकों के प्रमाण पत्र में निम्न लिखित बातें दर्शायी गयी हैः

भाग - I : छात्र के बारे में सामान्य जानकारी

भाग - II : पाठ्यक्रम क्षेत्र का ग्रेड जैसे :- भाषाएँ और गैर भाषीक विषय - आंतरिक और बाह्य दोनों तथा अंतिम (कुल) ग्रेड

भाग - IIIः गुणवत्ता पूर्ण - व्याख्या के साथ पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के लिए ग्रेड

ग्रेड और औसत ग्रेड पॉइंट की जानकारी अंकों के प्रमाणपत्र के दूसरी ओर भी दी जा सकती है।

O) **प्रशिक्षण कार्यक्रम**

- पर्यवेक्षण स्टाफ के साथ IX और X कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए SCERT प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारूप तैयार करेगी। नवीन पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा सुधारों की संपूर्ण प्रक्रिया पर SCERT अध्यापक मार्गदर्शिका तैयार करेगी तथा RMSA के साथ मिलकर पर्यवेक्षक स्टाफ के साथ-साथ IX और X वी कक्षाओंको पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए प्रत्येक विषय में जिला स्तर पर संसाधकों को प्रशिक्षण देगी। अध्यापकों के लिए मार्गदर्शिका तैयार करने, ज़िला संसाधकों को प्रशिक्षण देने तथा अध्यापको को प्रशिक्षण देने का खर्च RMSA वहन करेगा।
- नियमित अंतराल पर टेलिकांफ्रेंस द्वारा भी प्रशिक्षण दिये जा सकते हैं तथा संदेहो और अच्छे कार्यों आदि की चर्चा भी की जा सकती है।

(P) D.C.E.B. **के उत्तरदायित्व**

- IX और X कक्षाओं के लिए प्रश्न पत्र तैयार करना (सार्वजनिक परीक्षा के अलावा) और उन्हें पाठशालाओं को भेजना D.C.E.B. का उत्तरदायित्व है।
- उत्तम शैक्षिक पृष्ठभूमि और कुशलता से काम करने वाले एक अध्यापक को D.C.E.B. का इंचार्ज बानाना चाहिए। D.C.E.B. के अंताति प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए 10 से 15 कुशल अध्यापकों की विषयानुसार जिला टीम तैयार करनी चाहिए। टीम सदस्यों में जिला के पाठ्यपुस्तक लेखकगण, SRG सदस्य, विषय निपुण, अध्यापक प्रशिक्षक, अनुभवी अध्यापकों आदि को सम्मिलित करना चाहिए।
- DCEB की टीम प्रश्न पत्र बनायेगी तथा पाठशालाओं और अध्यापकों द्वारा बनाये गये अच्छे प्रश्नों का परीक्षण भी करेगी। ये टीम जिलों में विषयानुसार प्रशिक्षण भी देगी तथा पाठशालाओं में दल कार्यों का निरीक्षण भी करेगी। ये सुधार समिति के सदस्य माने जायेंगे।
- नियमित अंतरालों में SCERT DCEB सेक्रेटरीयों और विषय दल के लिए ओरियंटेशन और प्रशिक्षण कार्यों द्वारा उनकी क्षमताओं का विकास करेगी तथा DCEB के कार्यकारी पहलुओं का निरीक्षण करेगी। DIET, CTE और IASE, DCEB के कार्यों का पर्यवेक्षण कर उसकी सहायता करेगी।

(q) **भूमिका और उत्तरदायित्व**

SCERT :

- सरकारी परीक्षाओं के निदेशक के साथ परामर्श करके, SCERT निदेशक से प्रस्ताव तैयारकर सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए।
- अध्यापक व पर्यवेक्षक स्टाफ के लिए मार्गदर्शिका के रूप में परीक्षा सुधार के सभी पहलुओं पर दिशा निर्देश तैयार किए। साथ ही विषयानुसार नमूना प्रश्न पत्र तैयार किया गया है।
- पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए पाठशालाओं में आवश्यक सुविधाओं के प्रस्ताव सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए गए हैं। ताकि परीक्षा स्तर तक पहुँचा जा सके।

- आंतरिक स्तरों पर SSC परीक्षाओं के सुधार के लागू करने का अध्ययन तथा निरीक्षण और उसके आधार पर पुनः कार्यान्वयन

निदेशक, सरकारी परीक्षाः

- SCERT के साथ मिलकर प्रस्तावों पर अंतिम निर्णय लेना और आदेशों के लिए सरकार को सौंपना।
- सरकारी परीक्षाओं के अंक ऑन लाइन भेजने के लिए कार्यक्रम का निर्धारण करना और अंक प्रमाणपत्र/सर्टिफिकेट का डिज़ाइन बनाना।
- आंतरिक अंकों और अन्य नॉमिनल रोल्स को सौंपने का निरीक्षण करना।
- उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच और परिणामों की घोषणा।
- पूर्व और पश्च परीक्षा कार्य, पुनः आकलन आदि।

आर.जे.डी. SEs **और जिला शैक्षिक अधिकारी :**

- नवीन मूल्यांकन प्रक्रियाओं पर निरीक्षक स्टाफ और अध्यापकों के लिए ओरियंटेशन कार्यक्रम रखना। इसके अंतर्गत निजी पाठशालाओं के शिक्षक और प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षण भी शामिल है।
- DCEB की एक इंचार्ज अर्थात सेक्रेटरी के द्वारा पुनःसंरचना और सशक्त करना और प्रति विषय 10 से 15 निपुण अध्यापकों को मिलाकर विशेष विषय गुण का निर्माण करना।
- दो या तीन मंडलों के लिए 1 दो सदस्यीय सुधार समिति का निर्माण करना। SCERT और DIETs/CTEs/IAEs की सहायता से इन सुधार समिति के सदस्यों की क्षमताओं के विकास के लिए कदम उठाना।
- X कक्षा सार्वजनिक परीक्षा के अतिरिक्त IX और X कक्षाओं के लिए प्रश्न पत्र प्रिंटिंग और निरीक्षण का कार्यान्वयन करना।
- बच्चों के द्वारा सोच-विचार और स्वाभिव्यक्ति वाले उत्तरों को बढ़ावा देना और पाठ्य पुस्तकों और गाइड के उत्तर रटने की पद्धति को दूर करना।
- केवल X कक्षा पर बल देने की अपेक्षा कक्षा से स्वाभिव्यक्ति का क्रमशः विकास करना और गुणवत्तापूर्ण पाठ्यचर्या तथा छात्र अधिगम आऊटकम पर बल देना।

Dy. Education Officer:

डिप्टी शैक्षिक अधिकारी :

- अपने विभाग में परीक्षा सुधारों को 100% लागू करने और आंतरिक परीक्षाओं का निरीक्षण करने में डिप्टी शैक्षिक अधिकारी उत्तरदायित्व है। यह सरकारी और निजी विद्यालयों दोनों के लिए है।
- सभी विषयों के निपुण अध्यापकों की पहचान करना और उनकी सूची DCEB के लिए DEO तक पहुँचाना।

- आंतरिक परीक्षाओं के सही कार्य और पाठ्यचर्या और सहगामी क्रियाओं को लागू करने के नीरीक्षण कार्य में प्रथानाध्यापक के कार्य का निरीक्षण करना।
- प्रत्येक सरकारी और निजी पाठशाला की जाँच पुस्तिका में परीक्षा कार्य और पाठ्यचर्या लागू करने की प्रकृति का रिकार्ड लिखना।
- परिवर्तन समिति के पाठशाला आने के पूर्व रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन प्रक्रिया को लागू करना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और नयी पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के कार्य का निरीक्षण डिप्टी.ई.ओ. को करना चाहिए।
- परीक्षा सुधार, पाठ्यचर्या कार्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रबंध का उत्तरदायित्व डिप्टी. ई.ओ. का है।
- अध्यापक मार्गदर्शिका को पढ़ना, SCERT की स्त्रोत पुस्तकों और अन्य स्त्रोतों/ इंटरनेट की पुस्तकों के आधार पर पाठ्यचर्या, पेडोगाजी और आकलन के आधार भूत ज्ञान का विकास करना।

प्रधानाध्यापक :

- पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को लागू करने, अध्यापक की तैयारी, पाठ योजना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और सभी अध्यापकों द्वारा उचित ढंग से परीक्षाओं का कार्यान्वयन के लिए प्रधानाध्यापक प्रथम स्तर का पर्यवेक्षक अधिकारी है।
- अध्यापकों और छात्रों को उनके उत्तम प्रयासों और कौशलों के लिए पहचानना और बढ़ावा देना तथा उसे SCERT व उच्च अधिकारियों की दृष्टि में लाना।
- गाइड्स और स्टडी मटीरियल के उपयोग और उत्तरों को रटने से छात्रों की विचारात्मक क्षमताओं और स्वाभिव्यक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है अतः गाइड और स्टडी मटीरियल का उपयोग न हो। प्रधानाध्यापक इसे सुनिश्चित करें।
- उपलब्ध अध्यापकों में पाठ्यक्रम व सहगामी विषयों को सौंपना और यह देखना की इन सभी क्षेत्रों में कार्यान्वयन हो रहा है
- प्रधानाध्यापक पाठशाला स्तर पर आंतरिक परीक्षाओं जैसे :- रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन का उचित निर्वहन का निरीक्षण करे और अध्यापकों और छात्रों द्वारा तैयार किये गये रिकार्ड और रजिस्टर पर अपने सुझाव दें। वह FA और SA से संबंधित छात्रों और अध्यापकों के सभी रिकार्डों की जाँच करें और सुधार समिति के समक्ष प्रस्तुत करने से पहले स्वयं को संतुष्ट कर लें।
- सरकारी परीक्षाओं के निदेशक द्वारा दी गयी सारिणी के आधार पर प्रधानाध्यापक को आंतरिक परीक्षाओं के अंक तथा सहगामी क्रियाओं के ग्रेड सरकारी परीक्षाओं के निदेशक को ऑन-लाइन भेजना होगा।
- प्रधानाध्यापक आंतरिक व अन्य परीक्षाओं का निर्वहन समय सारिणी के आधार पर करें तथा छात्रों को संचित रिकार्ड का रखरखाव करें तथा नियमित अंतरालों पर अभिभावकों/मता-पिता को छात्र की प्रगति से अवगत करायें।

- प्रधानाध्यापक यह सुनिश्चित करें की पाठशाला में उपलब्ध TLM, उपकरण तथा पुस्तकालय पुस्तकों के उपयोग द्वारा कक्षा में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण हो।
- प्रधानाध्यापक, छात्रों और अध्यापकों के प्रदर्शन का मासिक पुनरावलोकन करें तथा, प्रत्येक अध्यापक के लिए सुझावों के साथ मिनट बुक में रिकार्ड करें। तथा पूर्व मीटिंग के मिनट्स पर की गयी पुनश्चर्या का पुनरावलोकन करें।
- छात्रों के प्रदर्शन और विद्यालय क्रियाकलाप पर छात्रों और उनके अभिभावकों/माता-पिता को उचित प्रतिपुष्ठित (feed back) का प्रबंध करें।
- प्रधानाध्यापक, पहले शिक्षक है। उसे अध्यापकों की हैंडबुक, नवीन पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य स्त्रोतों को पढ़कर शैक्षिक ज्ञान का पूर्ण जानकार होना चाहिए। उसे अध्यापकों के पठन और अन्य शैक्षिक मामलों और अवधारणाओं पर विद्यालय में समय-समय पर कार्यशालाओं (workshop) का आयोजन करना चाहिए।
- प्रधानाध्यापक को प्रत्येक अध्यापक के कक्षाकक्ष क्रियाकलाप का निरीक्षण करना चाहिए तथा सुधार के लिए सुझाव देकर मार्गदर्शन करना चाहिए।

अध्यापक :

- नयी पाठ्यपुस्तकों को उचित रूप से लागू करने अर्थात् क्रियाकलाप, परियोजना प्रयोग, क्षेत्रीय जाँच पड़ताल, सूचना संबंधी कार्य आदि के लिए अध्यापक उत्तरदायी है।
- प्रत्येक इकाई/पाठ के अंतर्गत दिए गए अभ्यास कार्य विश्लेषणात्मक व विचारोत्तेजक प्रकृति के हैं। बच्चे सोच विचार कर स्वयं उन्हें लिखें/गाइड, स्टडी मटिरियल या अन्य छात्रों की नोटबुक आदि से उत्तरों की नकल न की जाय। यह रचनात्मक आकलन का एक तत्व है जिसे सावधानीपूर्वक किया जाय। अध्यापक गाइड, स्टडी मटिरियल के उपयोग को बढ़ावा न दें।
- बक्से में दिए गए प्रश्न कक्षा में चर्चा के लिए हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्र अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे और बाँट सकेंगे। बक्से की विषय वस्तु तत्कालीन मुद्दों व परिस्थितियों पर आधारित है जिसके द्वारा यह आशा की जाती है कि बच्चे अपने अनुभव व उपाय प्रस्तुत करें। यह उनके दैनिक जीवन में पाठ्य पुस्तक के ज्ञान का उपयोग करने में सहायक होगा।
- दिए गए पाठ्यक्रम और सहगामी क्रियाओं की तैयारी करें तथा उसे कक्षा में गुणवत्ता तरीके से इस प्रकार लागू करें की छात्र चर्चाओं में क्रियात्मक रूप से सहगामी बने। अवधारणों की अधिक जानकारी के लिए अतिरिक्त संदर्भ सामग्री और स्त्रोत पुस्तकें पढ़े और प्रत्येक पाट के लिए शिक्षण बिंदु तैयार करें। इस प्रकार, पाठ्यपुस्तक की सक्षरता बढ़ायें।
- नियमित रूप से छात्रों की नोटबुक व अन्य रिकार्डों की जाँच केरं तथा रचनात्मक आकलन (आंतरिक) और सारांशात्मक आकलन करें। छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर अंक और ग्रेड दें तथा छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर अंक और ग्रेड दें तथा छात्रों की नोटबुक, रिकार्ड आदि के रूप में छात्र के प्रदर्शन के प्रमाण का रखरखाव करें। इसे प्रधआनाध्यापक और सुधार समिति के अवलोकन के लिए तैयार रखें। अध्यापक उपचारात्मक (Remedial) शिक्षण की कक्षाएँ

आयोजित करें तथा रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन के द्वारा पहचानी गयी कमियों के आधार पर छात्रों की सहायता करें।

- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अवसर पर उपलब्ध कराये गये अध्यापक हैंडबुक, मॉड्युल पढ़े और उसके आधार पर कार्य करें। शिक्षण एक व्यवसाय (Profession) है और अध्यापक एक व्यावसायी (professional) है। तथा किसी भी व्यवसाय के लिए ज्ञान और कौशलों का निरंतर सामजिक विकास होना अनिवार्य है।

  इस प्रकार अध्यापक सभाओं में चर्चा, विषय विशेष वेबसाइट पर जाना, संगोष्ठियों/प्रशिक्षण कार्यो में भाग लेने, मैगज़ीन, जर्नल, स्त्रोत पुस्तकों को पढ़ने से अध्यापक स्व विकास का प्रयत्न करते है।

- वार्षिक और पाठ/ईकाई योजना का उपयोग कर समयानुसार प्रगति करना।
- FA और SA के संदर्भ में HM की जाँच और उनके सुझाव व निर्देश के लिए छात्र और शिक्षक रिकार्ड पूर्ण करना।
- प्रगति के प्राथमिक प्रयासों में छात्रों को बढावा देना और उनका समर्थन करना।

3. तथ्यों की जाँच के पश्चात सरकार ने ऊपर Para 2 में SCERT, A.P., Hyderabad के निदेशक के प्रस्तावों को मान लिया है और आ.प्र. में विद्यालयीन शिक्षा के कमीशनर और निदेशक और SCERT के निदेशक को ऊपर बताये गये IX और X कक्षाओं के लिए परीक्षा सुधारों को लागू करने की अनुमति प्रदान की। इसे राज्य के सभी विद्यालयों अर्थात सरकारी, सामान्य निकाय, सहायता प्राप्त व निजी सभी पाठशालाओं में लागू किया जाय।
4. इसके आदार पर आवश्यक कार्यकरने का अनुरोध विद्यालयी शिक्षा के कमीशनर और निदेशक, SCERT निदेशक और सरकारी परीक्षाओं के निदेशक सभी से किया जाता है।

(आंध्र प्रदेश के गवर्नर के नाम और आदेश द्वारा)

पूनम मालकोंडय्या

प्रिंसीपल सेक्रेटरी टू गवर्नमेंट (पी.ई)

को

पाठशालायी शिक्षा के कमीशनर और निदेशक और ई.ओ. SPD. RMSA.AP., Hyderabad

निदेशक, SCERT, A.P., Hyderabad

निदेशक सरकारी परीक्षाओं, A.P., Hyderabad.

Copy to P.S. to Principal Secretary to Government (PE)

SF/Sc Copy to P.S. to principal secretary to Government (SE)

***(सूचना** : उक्त सरकारी आदेश संख्या 17 के कुछ निर्देशों को एक अन्य सरकारी आदेश संख्या 2 के माध्यम से फेरबदल किये गये हैं।)*

1) सतत् समग्र मूल्यांकन - IX और X कक्षाओं के लिए

हमारे राज्य में शिक्षा का अधिकार अधिनियम वर्ष 2010 में लागू हुआ। इस कानून के अनुसार शिक्षण में मूल्यांकन के लिए सतत् समग्र मूल्यांकन प्रविधि का प्रयोग करना अनिवार्य है। यह अधिनियम इस बात पर बल देता है कि शिक्षा प्रणाली बालक के शारीरिक और मानसिक विकास में किसी प्रकार भी बाधक न बनें। इसी पृष्ठभूमि के आधार पर पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया और उनमें सतत् समग्र मूल्यांकन के भरपूर अवसर देने के प्रयास किये गये हैं।

स्वरूप :-

- सतत् समग्र मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को बोझरहित बनाना है। इसका मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत लाना है। अर्थात् शिक्षण अधिगम क्रियाकलाप के समय ही छात्र का आकलन हो जाना चाहिए। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहनी चाहिए।
- छात्र के आकलन के लिए किसी एक पक्ष को आधार नहीं बनाना चाहिए। अपेक्षित दक्षताओं और उनकी समग्रता के आधार पर आकलन करना चाहिए।

अपेक्षित परिणाम :-

- इससे छात्र का समग्र या व्यापक आकलन होता है।
- परंपरागत रटने की प्रवृत्ति में कमी आती है।
- अर्जित ज्ञान के उपयोग के अवसर प्राप्त होते हैं।
- छात्र ज्ञान का सोच-समझकर विविध परिस्थितियों में उपयोग करने की क्षमता का विकास करते हैं।
- इसके कारण सीखने-सिखाने के लिए अधिक समय मिलता है।

हमारे राज्य में I से लेकर VIII कक्षा तक सतत् समग्र मूल्यांकन अमल में है। IX और X कक्षाओं के लिए इसका प्रारूप इस प्रकार है -

जैसे कि आप जानते हैं कि यह आकलन दो प्रकार का होता है।

I रचनात्मक आकलन (Formative Assessment)

II सारांशात्मक आकलन (Summative Assessment)

2) रचनात्मक आकलन

IX और X कक्षाओं के लिए यह आंतरिक आकलन (Internal Assessment के रूप में होगा।)

बालक कैसे सीखते हैं? क्या सीखते हैं? कहाँ पिछड़ रहे हैं? इसके लिए शिक्षक को क्या करना चाहिए? जैसी बातों का उत्तर और समाधान आप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान पाते हैं तो इसका अर्थ है कि आप कक्षाकक्ष गतिविधियों के दौरान रचनात्मक आकलन का निर्वहण कर रहे हैं। हमारी पाठ्यपुस्तकों में रचनात्मक आकलन के समुचित अवसर उपलब्ध हैं। पाठ्यपुस्तक में रखे गये पाठों का इकाइयों में विभाजन इसका उदाहरण है। रचनात्मक आकलन के कुछ मुख्य सूचक निम्नलिखित हैं:-

- इसका आयोजन वर्ष में चार बार (जुलाई, अगस्त, नवंबर और फरवरी) में किया जायेगा।

- यह पूरे शैक्षिक वर्ष में औपचारिक और अनौपचारिक तरीके से चलता रहेगा।
- इसका आयोजन स्वाभाविक परिस्थिति में होना चाहिए अर्थात् बच्चों को इस बात का आभास नहीं होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है।
- इसका आयोजन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (कक्षाकक्ष क्रियाकलाप) के अंतर्गत होना चाहिए।
- यह परीक्षा 20 अंकों के लिए आयोजित की जायेगी।

साधन

1. पुस्तक पठन प्रतिक्रिया (Book Reading - Reflection)
2. लिखित कार्य (Written Works)
3. परियोजना कार्य (Project Work)
4. पर्ची या लघु परीक्षा (Slip Test)

आयोजन

रचनात्मक आकलन कुल 20 अंकों के लिए आयोजित किया जायेगा। इसमें अंकों का विभाजन इस प्रकार होगा-

क्र.सं.	अंश	निर्धारित अंक	साधन
1	पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया	05	विभिन्न कहानियों की पुस्तकें, बाल-साहित्य, समाचार-पत्र आदि।
2	लिखित कार्य	05	कक्षा-कार्य, गृहकार्य, दत्तकार्य, अभ्यास कार्य, (मुख्य रूप से स्वलेखन पर बल)
3	परियोजना कार्य	05	परियोजना कार्य
4	पर्ची या लघु परीक्षा	05	बालकों की उत्तर पुस्तिकाएँ (नोट बुक्स)
	कुल अंक	20	

1. पुस्तक पठन - प्रतिक्रिया :-

इसके अंतर्गत बालकों को कहानी की पुस्तकों में से कहानी बाल-साहित्य या समाचार-पत्र के किसी अंश को पढ़ने के लिए कहना चाहिए। पढ़ने के पश्चात् बालक से पठित अंश पर लिखित प्रतिक्रिया (प्रतिवेदन के रूप में) करवानी चाहिए। कक्षा में इसका प्रस्तुतीकरण भी होना चाहिए। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

इसके आकलन के लिए अध्यापक को चाहिए कि वह निम्न बातों पर ध्यान दें-

- पठन अंशों का चयन (बालक द्वारा) - एक अंक
- लिखित अभिव्यक्ति - दो अंक
- प्रस्तुतीकरण का ढंग (मौखिक व लिखित रूप में) - दो अंक

रचनात्मक मूल्यांकन - I नमूना पुस्तक पठन-प्रतिवेदन-प्रस्तुतीकरण

छात्र का नाम : बशीर अहमद

कक्षा : 10वीं

क्रम संख्या : 11

विषय : हिंदी

पाठशाला का नाम : जेड.पी.एच.एस बी. वेल्लमला, नलगोंडा

पुस्तक का नाम : अकबर - बीरबल की कहानियाँ पढ़ी गयी

कहनी का नाम : बीरबल की समझदारी

दिनांक : 02.07.2014

प्रतिवेदन

- "अकबर - बीरबल की कहानियाँ" बहुत अच्छी पुस्तक है।
- इसमें मुझे "बीरबल की समझदारी" कहानी पसंद आयी।
- इसमें अकबर, बीरबल, कैजी, ख्वजासरा पात्र हैं।
- बीरबल अपनी चतुराई से अकबर का दिल जीत लेते हैं।
- कहानी के कथन सुंदर हैं।

प्रस्तुतीकरण

3.7.2014 के दिन

- अध्यापक जी को पुस्तक पठन प्रतिवेदन दिया।
- प्रतिवेदन का शीर्षक "बीरबल की समझदारी।" बोर्ड पर लिखा।
- कक्षा में सभी बच्चों के सामने कहानी - के बारे में बताया।

2. लिखित कार्य :-

बालकों को पाठों के प्रश्न और अभ्यास लिखने के लिए देने चाहिए। उन्हें अपने शब्दों में (स्वरचना) लिखने के लिए कहना चाहिए। बालक को गाइड या क्वश्चन बैंक का सहारा लेने के लिए मना करना चाहिए। उन्हें स्वयं सोचकर लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

आकलन - शुद्ध वर्तनी - एक अंक, वाक्य निर्माण का क्रम - दो अंक, भावों की मौलिकता - दो अंक

3. परियोजना कार्य :-

पाठ्यपुस्तक के हर पाठ के अंत में एक परियोजना कार्य दिया गया है। बालकों को परियोजना कार्य से संबंधित निर्देश देना चाहिए। किये गये परियोजना कार्य का प्रस्तुतीकरण प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

आकलन - सामग्री का संकलन - एक अंक, जानकारी का संग्रहण, प्रतिवेदन लिखना - दो अंक, प्रस्तुतीकरण/प्रदर्शन (मौखिक व लिखित रूप में)- दो अंक

रचनात्मक मूल्यांकन - I (नमूना परियोजना कार्य)

छात्रा का नाम: बशीर अहमद
कक्षा : 10वीं
क्रम संख्या : 11
विषय : हिंदी
पाठशाला का नाम : जेड.पी. एच.एस बी. केल्लमला, नलगोंडा

संकलन जानकारी

स्रोत : पुस्तकालय
पुस्तक का नाम : चंदामामा प्रा.लि.
संकलन करनेका दिनांक : 07.07.2014

चंदामामा - परियोजना कार्य

चंदा मामा चंदा मामा
हम सबके भोले मामा
अच्छे मामा सच्चे मामा
सब बच्चों के प्यारे मामा

प्रस्तुतीकरण

- दिनंक 8.7.2014 के दिन अध्यापक जी को 'चँद' शीर्षकीय कविता दिया।
- कविता अशीर्ष का शीर्षक बोर्ड पर लिखा
- समूह में कविता पढ़कर सुनाया।

4. पर्ची या लघु परीक्षा

इस परीक्षा का आयोजन अनौपचारिक रूप से किया जा सकता है। इसमें बहुत बड़े-बड़े प्रश्नों के उत्तर लिखवाने के स्थान पर छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर, शब्दार्थ, व्याकरणांश या पठित/अपठित गद्यांश/पद्यांश देकर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहा जा सकता है। इसके लिए 5 अंक निर्धारित है। लघु परीक्षाओं की कोई निश्चित संख्या नहीं रखी गयी है। हर रचनात्मक परीक्षा में दो या तीन लघु परीक्षाएँ ले सकते हैं। हर लघु परीक्षा में किसी एक शैक्षिक मापदंड पर प्रकाश डाला जाय। इस तरह तीन लघु परीक्षाओं में तीनों शैक्षिक मापदंडों का आकलन कर प्राप्तांक का तीन से विभाजन करना चाहिए।

आकलन

जैसेः रचनात्मक परीक्षा - एक की लघु परीक्षाएँ

लघु परीक्षा एक - पठित गद्य, पद्य या अपठित गद्य, पद्य - 5 अंक

लघु परीक्षा दो - स्वरचना या सृजनात्मकता - पत्र, निबंध आदि - 5 अंक

लघु परीक्षा तीन - व्याकरणांश - 5 अंक

कुल इन तीन लघु परीक्षाओं के कुल पंद्रह अंक हैं। इसलिए प्राप्तांकों को तीन से विभाजन कर पंजिका में लिखना चाहिए। जैसेः किसी छात्र को पहली लघु परीक्षा में चार अंक, दूसरी लघु परीक्षा में तीन अंक और तीसरी लघु परीक्षा में पाँच अंक प्राप्त होते हैं, तो कुल प्राप्तांक बारह होते हैं। इसका विभाजन तीन से करने पर छात्र को चार प्राप्तांक होते हैं। इस तरह उस छात्र को पहली रचनात्मक परीक्षा में लघु परीक्षा के चार अंक जुड़ते हैं। इसी तरह रचनात्मक दो, रचनात्मक तीन व रचनात्मक चार का आकलन में लघु परीक्षाओं का निर्वाहण करना चाहिए।

रचनात्मक मूल्यांकन - I
नमूना प्रश्न - पत्र- लघु परीक्षा - 1

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **अंक : 05**

कक्षा : दसवीं **समय : 45 मिनट**

अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया

अ) नीचे दिये गये गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5 x 1 = 5**

एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से, और भोगता उसे दूसरा, भाग्यवाद के छल से, नर-समाज का भाग्य एक है,वह श्रम, वह भुजबल है, जिसके सम्मुख झुकी हुई, पृथ्वी विनीत नभ तल है।

1. मनुष्य क्या संचित करता है?
   1. पाप 2. धन 3. पुण्य 4. सोना
2. नर समाज का भाग्य क्या है?
   1. श्रम 2. भुजबल 3. नींद 4. छल
3. किसके सम्मुख पृथ्वी और आसमान झुके हैं?
   1. समाज 2. गरीब 3. श्रमिक 4. सरकार
4. पद्यांश में आया युग्म शब्द क्या है?
   1. नभ-तल 2. विनीत नभ 3. भुजबल 4. भाग्य
5. मनुष्य अर्थ किसके बल से संचित करता है?
   1. मनुष्य 2. अर्थ 3. बल 4. भव्य

रचनात्मक मूल्यांकन - I

नमूना प्रश्न - पत्र लघु परीक्षा - 2

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **अंक : 05**

कक्षा : दसवीं **समय : 45 मिनट**

अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

नीचे दिये गये प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में दीजिए। अंक-5

अ) आपके गाँव में जल संरक्षण कैसे किया जा रहा है? इसके बारे में बताते हुए कुछ सुझाव दीजिए।

(अथवा)

आ) राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। अपने विचार व्यक्त कीजिए।

रचनात्मक मूल्यांकन - I

नमूना प्रश्न - पत्र लघु परीक्षा - 3

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **अंक : 05**

कक्षा : दसवीं **समय : 45 मिनट**

भाषा की बात

नीचे दिये गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए। **5 x 1 = 5**

1. वह गा रहा है। भूतकाल में बदलने पर

   1. वह गायेगा। 2. वह गा रहा था। 3. वे गायेगा। 4. वह गाये जायेगा।

2. निम्नलिखित में से किस विकल्प के साथ 'अधि' उपसर्ग जुड़ता है?

   1. गत 2. विभक्त 3. समर्थ 4. कार

3. वह दौड़ रहा है। क्रिया का रूप पहचानिए।

   1. अकर्मक 2. संयुक्त 3. सकर्मक 4. सरल

4. जो बच्चे अच्छे होते हैं उनको सभी प्यार करते हैं। वाक्य का रूप पहचानिए।

   1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. कर्मवाच्य 4. मिश्र वाक्य

5. कुएँ में फेंक। नकारात्मक वाक्य बनाने पर-

   1. कुएँ में फेंक न 2. कुएँ में मत फेंक

   3. कुएँ में नहीं फेंक 4. कुएँ में फेंक नहीं

विशेष सूचना- 1 लघु परीक्षा अभिव्यक्ति सृजनात्मकता शैक्षिक मापदंड पर आयोजित करते समय उसका आकलन निम्न बिंदुओं के आधार पर करना चाहिए।

आकलन - शुद्ध वर्तनी - एक अंक, वाक्य निर्माण का क्रम - दो अंक, भावों की मौलिकता - दो अंक

विशेष सूचना- 2

हर छात्र को-

1) पुस्तक पठन - प्रतिक्रिया 2) लिखित कार्य के लिए

3) परियोजना कार्य के लिए एक पृथक पुस्तिका रखनी होगी 4) लघु परीक्षा के लिए

एक उत्तर पुस्तिका रखनी होगी। 1,3,4, के लिए एक पुस्तिका व 2 (लिखित कार्य) के लिए एक उत्तर पुस्तिका रखी जानी चाहिए। इन उत्तर पुस्तिकाओं द्वारा जहाँ छात्रों के किये गये कार्यों को दर्शाया जा सकेगा वही समय-समय पर यह जाँच अधिकारियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

- चार रचनात्मक आकलनों का औसत 20% के रूप में बोर्ड परीक्षा में लिया जायेगा। हर छात्र को रचनात्मक आकलन के 20% में कम से कम 7 अंक प्राप्त करना होगा।
- अध्यापकों को आंतरिक परीक्षाओं से संबंधित उत्तर पुस्तिकाओं को रिकार्ड के रूप में सुरक्षित रखना होगा। जैसे-

FA–1

	नाम	पुस्तक पठन	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	3	2	3	2	10
2.	रवि	4	3	3	4	14

FA–2

	नाम	पुस्तक पठन	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	4	2	3	3	12
2.	रवि	3	3	4	3	13

FA–3

	नाम	पुस्तक पठन	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	3	4	4	2	13
2.	रवि	4	2	3	2	11

FA–4

	नाम	पुस्तक पठन	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	2	4	3	3	12
2.	रवि	3	4	3	2	12

राजू के चार FA के कुल अंक : 10+12+13+12 = 47

रवि के चार FA के कुल अंक : 14+13+11+12 = 50 हैं।

आंतरिक परीक्षा के 20 अंकों के लिए 4 रचनात्मक आकलनों के कुल अंकों को 4 परीक्षाओं के हिसाब से विभाजित करने पर इनके औसत अंक प्राप्त होंगे।

राजू के अंक होंगे -11.8 (12) और रवि के अंक होंगे -12.2 (12) अर्थात् राजू को 20 में से 12 और रवि को भी 20 में से 12 अंक प्राप्त हुए हैं।

रचनात्मक आकलन दर्ज करने का प्रारूप

क्रम. संख्या	छात्र का नाम	FA 1				FA 2				FA 3				FA 4				कुल (4 FA)				औसत - 5 अंक करने पर				कुल
		R	W	P	S	R	W	P	S	R	W	P	S	R	W	P	S	R	W	P	S	R	W	P	S	
	राजू	4	3	2	4	4	3	4	3	4	2	2	4	3	5	4	4	15	13	12	15	3.5	3.2	3.0	3.5	13.20 = 13
	सीता																									

सूचना 1: R-पुस्तक पठन-प्रतिवेदन लेखन-प्रस्तुतीकरण; W-लिखित कार्य; P-परियोजना कार्य; S-लघु परीक्षा।

सारांशात्मक मूल्यांकन (बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन)

A. दक्षताओं के आधार पर भारपात

हिंदी द्वितीय भाषा - कक्षा 9 वीं व 10 वीं

दक्षता	अंक विभाजन	दिये गये अंक	पूर्णांक
I	अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया	20 अंक	20
II	अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता अ) स्वरचना आ) सृजनात्मकता	 32 अंक 08 अंक	40
III	सामान्य हिंदी व व्याकरण अ) शब्द आ) वाक्य	 10 अंक 10 अंक	20
	कुल	80	80

द्वितीय भाषा हिंदी, कक्षाः दसवीं - सारांशात्मक मूल्यांकन

शैक्षिक मापदंड	प्रश्न संख्या	स्रोत	अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	लघु प्रश्न	निबंध प्रश्न	विकल्प	भागवार अंक
अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया	1 (1-5)	उपवाचक-पठित गद्यांश (5-6 पंक्तियाँ)	5	5	-	-	बहुविकल्पीय प्रश्न	20
	2 (1-5)	बालसहित्य - अपठित गद्य (5-6 पंक्तियाँ)	5	5	-	-	बहुविकल्पीय प्रश्न	
	3 (1-5)	आधुनिक कविता - - पठित पद्यांश। जैसेः बरसते बादल, हम भारतवासी, कण कण का अधिकारी (5-6पंक्तियाँ)	5	5	-	-	बहुविकल्पीय प्रश्न	
	4 (1-5)	आधुनिक कविता - - अपठित पद्यांश। (5-6पंक्तियाँ)	5	5	-	-	बहुविकल्पीय प्रश्न	
अभिव्यक्ति सृजनात्मकता	5-8 (4 प्रश्न)	स्वरचना के प्रश्न। पद्य पाठ से दो और गद्य पाठ से दो प्रश्न। इनके उत्तर दो या तीन वाक्यों में लिखने होंगे।	16	-	4	-	नहीं है	40
	9-12 (4 प्रश्न)	स्वरचना के प्रश्न। पद्य सारांश से एक, गद्य सारांश से एक और कवि या लेखक परिचय में से एक के उत्तर लिखने होंगे। इनके उत्तर पाँच या छह पंक्तियों में लिखने होंगे।	16	-	-	2	आंतरिक (दो में से एक)	20
	13-15 (3 प्रश्न)	पत्र, निबंध, नारे, पोस्टर, कविता सृजन, विधा परिवर्तन के तीन में से एक प्रश्न का उत्तर लिखना हागा।	8	-	-	1	आंतरिक (तीन में से एक)	
भाषा की बात	16-35 (20 प्रश्न)	शब्द भंडार से संबंधित प्रश्न व्याकरण से संबंधित प्रश्न	20	20	-	- -		
		कुल	80	40	04	03		80

4) दक्षताओं के आधार पर प्रश्नों के प्रकार, प्रश्नों की संख्या, प्रश्नों का स्वभाव व अंक

दक्षता	प्रश्न-प्रकार	दिये गये प्रश्नों की संख्या	लिखने वाले प्रश्नों की संख्या	दिये गये अंक	कुल अंक	दक्षता के लिए निर्धारित पूर्णांक	प्रश्नों का स्वभाव	प्रश्नों का चयन
I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया	पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता की जाँच	4 (1,2,3,4)	4 (1,2,3,4)	1 - 5 2 - 5 3 - 5 4 - 5	4x5 = 20	20	- द्वितीय भाषा हिंदी के लिए सभी प्रश्न बहुविकल्पीय होंगे।	पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता की जाँच के लिए प्रश्न पूछ जाने चाहिए। 1. परिचित/पठित गद्य इसे उपवाचक पाठों से लिया जाय। यहाँ उपवाचक के किसी पाठ का एक अनुच्छेद या पाँच, छः पंक्तियाँ दी जाती हैं। 2. अपिरिचित/अपठित गद्य इस गद्यांश को किसी कहानी, संवाद, नाटक, या निबंध से लिया जाय। इसकी भाषा, वाक्य सरल हो, जो 9 वीं या 10 वीं कक्षा के स्तरानुकूल हो, जिसमें सरल व सामान्य शब्दावली हो।

दक्षता	प्रश्न-प्रकार	दिये गये प्रश्नों की संख्या	लिखने वाले प्रश्नों की संख्या	दिये गये अंक	कुल अंक	दक्षता के लिए निर्धारित पूर्णांक	प्रश्नों का स्वभाव	प्रश्नों का चयन
I) अभिव्यक्ति सृजनात्मकता II व III) स्वलेखन	लघु उत्तरीय प्रश्न (4 वाक्यों में उत्तर हो।)	4	4	4	4x4= 16	32		पद्य पाठों से दो प्रश्न गद्य पाठों से दो प्रश्नों का चयन करें। प्रश्न विषय से संबंधित हो लेकिन पुस्तक में से जैसे के वैसे वही प्रश्न न हो।
	8 वाक्यों में उत्तरानुकूल प्रश्न	4	2	8	8x2= 16		• विश्लेषणात्मक • विचार व्यक्तिकरण • व्याख्या • सारांश • कारण विश्लेषण • पाठ के प्रतिभागी के रूप में अपने विचार	पद्य, गद्य पाठों से संबंधित प्रश्न हो, पाठ व अभ्यासों में प्रश्नों को कुछ बदलकर दिया जा सकता है।/साहित्यकार का परिचय दिया जायेगा।
IV) सृजनात्मकता	भाषा व्यावहारिक रूप	3	1	8	1x8= 8	8	पत्रलेखन, निबंध लेखन रूप से हो। एक प्रश्न पाठ्य पुस्तक में दिये गये सृजनात्मक प्रश्नों से संबंधित हो।	पाठ्यपुस्तक से संबंधित हो, लेकिन जैसे के वैसे प्रश्न न हो।

दक्षता	प्रश्न-प्रकार	दिये गये प्रश्नों की संख्या	लिखने वाले प्रश्नों की संख्या	दिये गये अंक	कुल अंक	दक्षता के लिए निर्धारित पूर्णांक	प्रश्नों का स्वभाव	प्रश्नों का चयन
V. भाषा की बात	लक्ष्यात्मक प्रश्न	20	20	1	20x1=20	20	शब्दार्थ/पर्याय/ उपसर्ग/प्रत्यय/संधि/ समास/लिंग/वचन/ विलोम/शब्द संक्षेप/ कारक शुद्ध-अशुद्ध वाक्य, वाक्य क्रम, काल, वाच्य, मुहावरा, कहावत, सरल संयुक्त, मिश्र वाक्य, अर्थ की दृष्टि से वाक्य सकारात्मक नकारात्मक वाक्य विराम चिह्न	पाठ्यपुस्तक में से पाठों से और भाषा की बात से ये प्रश्न लिये जा सकते हैं।

SSC MODEL EXAMINATION PAPER
सारांशात्मक मूल्यांकन - III
नमूना प्रश्न - पत्र

कक्षा : दसवीं **अंक : 80**

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **समय : 3 घंटे**

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	**(प्रश्न-**1 **से** 4**)**	**20 अंक (5 + 5 +5 + 5)**
अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता	**(प्रश्न-**5 **से** 15**)**	**40 अंक (16 + 16 + 8)**
भाषा की बात	**(प्रश्न-**16 **से** 35**)**	**20 अंक (20)**

निर्देश :

1. प्रश्न पत्र के उत्तर लिखने के लिए तीन घंटे निर्धारित हैं। इसके अतिरिक्त प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए 15 मिनट दिये जाएँगे।
2. सभी प्रश्नों के उत्तर उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
3. छात्र यदि रफ कार्य करना चाहते हैं, तो वे उत्तर-पुस्तिका के अंत में करें।
4. अंतिम परिणाम के लिए सारांशात्मक आकलन **(80)** और रचनात्मक आकलन **(20)** के अंक जोड़ें।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

I. 1) नीचे दिए गए पठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5 x 1 = 5**

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हरितनगर था। हरितनगर का राजा कुमार वर्मा था। वह अच्छा शासक था। कुमार वर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फसलें सूख गयीं। तालाब, गड्ढ़े सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थीं, जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

1. हरितनगर राज्य के राजा कौन थे?
   अ) सत्य सिंह आ) कुमार वर्मा इ) हरिश्चंद्र ई) सम्राट वर्मा
2. हरित नगर राज्य कैसा था?
   अ) हरा-भरा आ) सूखा-सूखा इ) सूखा-हरा ई) भरा-हरा
3. राज्य में क्या सूख गया?
   अ) फसलें आ) तालाब इ) कुएँ ई) ये सभी
4. कितनी जीव नदियाँ बची हुई थी?
   अ) एक आ) दो इ) तीन ई) चार
5. इस गद्यांश में आए पुनरूक्ति शब्द पहचानिए?
   अ) हरा-भरा आ) छोटी-छोटी इ) तालाब-कुएँ ई) ये सभी

2) नीचे दिए गए अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 5 x 1 = 5

कन्नौज का राजा हर्षवर्धन कट्टर बौद्ध था। उनका महायान संप्रदाय अनेक रूपों में हिंदूवाद से मिलता - जुलता था। उन्होंने बौद्ध और हिंदू दोनों धर्मों को बढ़ावा दिया। हर्षवर्धन कवि और नाटककार थे। कन्नौज की राजधानी उज्जायनी को सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रसिद्ध केंद्र बनाया था। इनकी मृत्यु 648 ई.में. हुई थी।

1. कन्नौज के राजा कौन थे?
   अ) अशोक आ) हर्षवर्धन इ) चंद्रगुप्त ई) गौतम बुद्ध
2. महायान संप्रदाय किससे मिलता-जुलता था?
   अ) हिंदूवाद आ) इसाईवाद इ) बहुजनवाद ई) समाजवाद
3. हर्षवर्धन ने किन धर्मों को बढ़ावा दिया?
   अ) हिंदू, मुस्लिम आ) हिंदू, जैन इ) मुस्लिम, बौद्ध ई) हिंदू, बौद्ध
4. सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रसिद्ध केंद्र कौनसा था?
   अ) कौशांबी आ) उज्जयिनी इ) वाराणसी ई) ओरुगल्लू
5. हर्षवर्धन की मृत्यु कब हुई?
   अ) 648 ई. आ) 864 ई. इ) 468 ई. ई) 684 ई.

3) नीचे दिए गए पठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5 x 1 = 5

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, दिल में प्यार बसायेंगे।
नफ़रत का हम तोड़ कुहासा, अमृत रस सरसायेंगे।।
हम निराशा दूर भगाकर, फिर विश्वास जगायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

1. यहाँ किस भेद को मिटाने की बात कही गयी है?
   अ) ऊँच-नीच आ) समानता इ) नस्ल भेद ई) मतभेद
2. यहाँ किस कुहासे को तोड़ने के बारे में कहा गया है?
   अ) भाईचारा आ) मानवता इ) नफ़रत ई) कुदरत
3. निराशा भगाने के लिए क्या फैलाना होगा?
   अ) प्रेम आ) शांति इ) भय ई) विश्वास
4. भारतवासी दुनिया को क्या बनाना चाहते हैं?
   अ) विशाल आ) सरल इ) पावन ई) स्वर्ग
5. इस कविता के कवि कौन हैं?
   अ) रामधारी सिंह आ) सुमित्रानंदन इ) रैदास ई) आर.पी.निशंक

4) निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर सही उत्तर दीजिए - 5 x 1 = 5

कुछ लगते हैं तूफ़ानी,
कुछ रह-रह करते हैं शैतानी।
कुछ अपने थैलों से चुपके,

झर-झर-झर बरसाते पानी।।
नहीं किसी की सुनते कुछ भी,
ढोलक-ढोल बजाते बादल।

1. यह पद्यांश किसके बारे में है?
   अ) आकाश आ) पतंग इ) बादल ई) चिड़िया
2. ये रह-रह कर क्या करते हैं?
   अ) शैतानी आ) नादानी इ) मनमानी ई) लाभ-हानि
3. ढोलक ..... का नाम है।
   अ) अनाज आ) फल इ) खेल ई) वाद्य यंत्र
4. पानी किस तरह बरस रहा है?
   अ) छम-छम आ) झर-झर इ) धम-धम ई) घन-घन
5. इस कविता का उचित शीर्षक है-
   अ) बादल आ) हेमंत इ) गगन ई) विहंग

भाग - II : अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

II) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 4 पंक्तियों में लिखिए। 4 x 4 = 16

5. रैदास व मीरबाई की भक्ति भावना में आप क्या अंतर देखते हैं?
6. सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक परिचय दीजिए।
7. जूही का कौनसा कथन तुम्हें अच्छा लगा और क्यों?
8. ''हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते?

III) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 8 पंक्तियों में लिखिए। 2 x 8 = 16

9. कवि ने मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

या

10. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।
11. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भुत मिसाल थीं - अपने शब्दों में लिखिए।

या

12. गोदावरी नदी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

IV) नीचे दिए गए प्रश्नों में से एक का उत्तर दीजिए। 1 x 8 = 8

13. किसी रोचक घटना का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

या

14. 'पर्यावरण व प्रदूषण' विषय पर एक निबंध लिखिए।

या

15. आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके उत्तर के लिए एक पोस्टर बनाइए।

भाषा की बात

V) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प से दीजिए। 20 x 1 = 20

16. हम सब <u>भारत</u> हैं। रेखांकित शब्द में उचित प्रत्यय जोड़िए।

अ) इय आ) ईय इ) ई ई) इ

17. अच्छे काम करने से <u>प्रसन्नता</u> मिलती है। रेखांकित शब्द के पर्याय शब्द पहचानिए-

अ) संतोष, हर्ष आ) मोद, मोहक

इ) संतोष, संपर्क ई) हर्ष, पय

18. नारी मंगल की ..... है। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द से कीजिए।

अ) मूर्ति आ) मुर्ति इ) मूर्ती ई) मुर्ती

19. जीवन में <u>सुख</u> और ..... आते जाते रहते हैं। रेखांकित शब्द के विलोम शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

अ) प्रेम आ) स्नेह इ) संतोष ई) दु:ख

20. <u>सर्वोत्तम</u> व्यक्तित्व परोपकार के विचार रखता है। रेखांकित शब्द किन दो शब्दों से बना है-

अ) सर्वो + तम आ) सव + उत्तम

इ) सर्व + उत्तम ई) स्व + उत्तम

21. हमें <u>मानवता</u> के मार्ग पर चलना चाहिए। रेखांकित शब्द प्रत्यय पहचानिए।

अ) वता आ) मा इ) नवता ई) ता

22. <u>माता-पिता</u> का आदर करना चाहिए। रेखांकित शब्द का विग्रह पहचानिए।

अ) माता और पिता आ) माता या पिता

इ) माता पिता ई) इनमें कुछ नहीं

23. हमारे यहाँ जल होता ..... हम पृथ्वी पर न आते। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द से कीजिए।

अ) तो आ) तुम इ) न ई) नही

24. घोड़ा <u>तेज़</u> दौड़ता है। रेखांकित शब्द का शब्द भेद पहचानिए।

अ) संज्ञा आ) विशेषण इ) क्रिया विशेषण ई) समुच्चय बोधक

25. देश को एकता .....सूत्र में बांधने के लिए भाषा की आवश्यकता हुई। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित कारक से कीजिए।

अ) के आ) में इ) से ई) पर

26. हामिद अमीना की <u>आंखो का तारा</u> है। रेखांकित वाक्यांश क्या है?

अ) मुहावरा आ) कहावत इ) सूक्ति ई) लोकोक्ति

27. <u>बालकों ने</u> कलाम जी से कई प्रश्न पूछे। रेखांकित शब्द का लिंग बदलिए।

अ) बालिकाओं ने आ) बालिकाएँ ने इ) बालिका ने ई) इनमें से कुछ नहीं

28. राजू पुस्तक पढ़ता है। वाक्य भूतकाल में बदलने पर-

अ) राजू पुस्तक पढ़ा। आ) राजू ने पुस्तक पढ़ा।

इ) राजू ने पुस्तक पढ़ी। ई) राजू पुस्तक पढ़ेगा।

29. पुस्तकालय में तरह-तरह की पुस्तकें .....। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द से कीजिए।

अ) मिलती हैं। आ) मिलती है। इ) मिलते हैं। ई) मिलते है।

30. राम ने रोटी खायी। कर्मवाच्य में बदलिए।

अ) राम से रोटी खाया गया। आ) राम से रोटी खायी गयी।

इ) राम रोटी खाया। ई) राम रोटी खाया जाएगा।

31. हम मेहनत से पढ़ेंगे। हम देश का नाम ऊँचा करेंगे। इन दो वाक्यों को जोड़कर संयुक्त रूप में बताइए।

अ) हम मेहनत से पढ़ेंगे और देश का नाम ऊँचा करेंगे।

आ) हम मेहनत से पढ़ेंगे कि देश का नाम ऊँचा करेंगे।

इ) हम मेहनत से पढ़ेंगे तो देश का नाम ऊँचा करेंगे।

ई) यदि हम मेहनत से पढ़ेंगे तो देश का नाम ऊँचा करेंगे।

32. लड़के मैदान में खेलते हैं। इस वाक्य को प्रश्न वाचक में बदलने के लिए रेखांकित शब्द के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग कर सकते हैं?

अ) कहाँ आ) क्यों इ) क्या ई) कैसे

33. पाठशाला में बच्चों के लिए खेल, संगीत, चित्र लेखन आदि मनोरंजन कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस वाक्य में प्रयुक्त विरामचिह्न हैं-

अ) अल्पविराम, पूर्णविराम आ) आश्चर्यार्थक, पूर्णविराम

इ) अल्पविराम, आश्चर्यार्थक ई) आश्चर्यार्थक, प्रश्नवाचक

34. लोकगीतों में ग्रामीण जनता का मनोरंजन..... है। इसे नकारात्मक में बदलने के लिए रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द से कीजिए।

अ) मत आ) मना इ) नहीं ई) न

35. यह तो कोई यान है। (भूत काल में बदलकर लिखिए।)

अ) यह तो कोई यान होगा आ) यह तो कोई यान था

इ) यह तो कोई यान हुआ होगा ई) इनमें कुछ भी नहीं

सारांशात्मक मूल्यांकन - III
नमूना उत्तर पुस्तिका

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **अंक : 80**

कक्षा : दसवीं **समय : 3 घंटे**

I. **1)**
1. आ) राजा कुमार वर्मा
2. अ) हरा-भरा
3. ई) ये सभी
4. आ) दो
5. आ) छोटी-छोटी

2)
1. आ) हर्षवर्धन
2. अ) हिंदूवाद
3. ई) बौद्ध और हिंदू
4. आ) उज्जयिनी
5. अ) 648 ई.

3)
1. अ) ऊँच-नीच
2. इ) नफ़रत
3. ई) विश्वास
4. इ) पावन
5. ई) आर.पी.निशंक

4)
1. इ) बादल
2. ई) वाद्य यंत्र
3. अ) शैतानी
4. आ) झर-झर
5. अ) बादल

अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

II. 5. रैदास की भक्ति भावना निर्गुण है। इनका भगवान निराकार निर्गुण ब्रह्म हैं। इन्होंने भगवान की तुलना अनेक रूपों में की जबकि मीराबाई की भक्ति भावना सगुण हैं। इनकी माधुर्य की भक्ति है। इनके भगवान श्रीकृष्ण हैं। इन्होंने राम का कृष्ण का अभेद बताया।

6. प्रकृति के बेजोड़ कवि माने जाने बाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 अल्मोड़ा में हुआ। साहित्य लेखन के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' 'सोवियत रूस और ज्ञानपीठ

पुरस्कार' दिया गया इनकी प्रमुख रचनाएँ है - वीणा, ग्रंथि, पल्लव गुंजन, युगांत, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, कला और बूढ़ा चाँद तथा चिदंबरा आदि। इनका निधन सन् 1977 में हुआ।

7. ''हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ। और मानती रहूँगी। लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ। जूही का कथन मुझे इसलिए अच्छा लगा क्योंकि वह देश की रक्षा के लिए अपने प्रिय व्यक्ति को भी छोड़ना चाहती है इसलिए देश की रक्षा में अपने स्वामी सरदार को भी ठुकराना चाहती है।

8. हामिद को उम्मीद है कि उसके अब्बाजान रूपये कमाकर लाएँगे। अम्मीजी बहुत सी अच्छी चीजें लाएँगी। उसके दिल में पूरा विश्वास है, यही प्रकाश पुँज है। उसके भीतर से विश्वास रूपी प्रकाश-पुँज से बाहर आशा रूपी किरण फूट पड़ती है।

III. नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर 8 पंक्तियों में लिखिए।

9. कवि कवितांश में भीष्म पितामह के माध्यम से कुरूक्षेत्र युद्ध से विचलित धर्मराज को समुचित उपदेश देते हैं। कहते है - हे धर्मराज! कुछ लोग पाप से कुछ लोग भाग्यवाद की आड़ में अनुचित तरीके से धनार्जन करते हैं। प्राकृतिक संपदा सबकी है, न कि मुट्ठी भर लोगों की। मानव समाज का भाग्य परिश्रम भुजबल ही है। श्रमिक को सभी नर और सुर गौरव देते हैं। वही प्राकृतिक संपदा का सर्व प्रथम अधिकारी है। भाग्यवादी शोषक श्रमशक्ति का महत्व, संपत्ति पर श्रम जीवी का समान अधिकार सहज संपदा पर समान अधिकार आदि भी भीष्म के मुँह से कहलाते हैं।

या

10. हमारे जीवन में भक्ति का बड़ा महत्व है। तुलसीदास के अनुसार संतों की संगति, भगवान की कथा में अनुराग, गुरूसेवा, भगवान का गुणगान, निष्काम कर्म, विश्व को ईश्वरमय समझना, दूसरों के अपगुणों पर दृष्टिपात नहीं करना और निष्कपट रहना सद्गुण देती है। वह संकल्प की दृढता देती है। वह शांति और आनंद देती है।

11. भारत के राज्यों के राजा विलासित में डूबे जाते हैं, लेकिन वीरांगना लक्ष्मीबाई स्वराज्य प्राप्ति के लिए जूझती है। वे कहते है - देशभक्तों की आवश्यकता है। नूपूरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है। सीधी युद्ध भूमि में जाते समय अंत में कहती है कि स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव के पत्थर बनेंगे। वे सचमुच देशभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की अद्भुत मिसाल थी।

या

12. मैंने कई नदियों के दर्शन किए। गोदावरी नदी के दर्शनार्थ उसका जन्मस्थान नासिक त्रयंबक से निकल पड़ा। इसके दौरान रेल से, बस से, पैदल यात्रा करनी पड़ी। नासिक

चंबक में गोदावरी का नवजात शिशुरूप है। कालेश्वरम पहुँची तो उसका बाला रूप है। भद्राचलम में उसका कुमारी रूप है। राजमहेंद्री में नवयुवती रूप है। उसका विराट रूप उसकी छटा का वर्णन कैसे कर सकते है। मैं एकटक देखता ही रहा। उसकी चाल अजगर की तरह और कहीं - कहीं कोडे सांप सी होती है। गोदावरी हमें उपदेश देती है। चैखति-चैखति चलते-रहना चलते रहना। चलते समय गिर जाय तो भी अच्छी तरह चलना सीख लेते हैं - और आगे विकसित होते हैं।

IV. 13.

दिनांक .....

हैदराबाद।

प्रिय मित्र,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। मैं एक रोचक घटना के बारे में लिख रहा हूँ। मैं एक छोटे बच्चे को नाले में से निकालकर उनके माँ-बाप को सौंप दिया। इस तरह मैंने एक छोटे बच्चे की जान बचायी। वह एक कागज़ की नाव निकालने नाले से प्रयास कर रहा था। तब अचानक वह उसमें गिर पड़ा। तब मैं उधर से जा रहा था। तुरंत उसे मैंने उठाकर बाहर लाया। तुम भी अपनी कोई रोचक घटना के बारे में लिखो।

माताजी एवं पिताजी को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा प्रिय मित्र

xxxx

पता

xxxx

द न . 6-117

निवास,

हैदराबाद -59

14. पर्यावरण में संतुलन होना आवश्यक है। ऐसा नहीं होने पर कई हानियाँ हो सकती हैं। मनुष्य और पशु-पक्षी हवा से ऑक्सीजन लेते हैं। कार्बन-डाइ-ऑक्साइड छोड़ते हैं। यह इसी रूप में पर्यावरण में फैलता है। पेड़-पौधों की सहायता से पर्यावरण संतुलित हो जाता है।

पर्यावरण असुंतलित हो जाने से समय पर वर्षा नहीं होती, मौसम समय पर नहीं आता। अल्पवृष्टि कभी अतिवृष्टि होती है। अल्पवृष्टि-अतिवृष्टि दोनों भी हानिकारक है। इसलिए पर्यावरण में संतुलन अत्यंत आवश्यक है।

प्रदूषण चार प्रकार के होते हैं। भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण।

कल-कारखानों से निकलनेवाले धुएँ से ध्वनि प्रदूषित होती है। कारखाने से बाहर छोड़ने वाले पानी से जल प्रदूषण और रासायनिक पदार्थों से जल के साथ भूमि प्रदूषण

होता है।

प्रदूषण रोकने के लिए हमें गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। नालियों को साफ़ रखना चाहिए। कूड़ा-कचरा ढक्कनदार डिब्बे में ही डालना चाहिए। जंगलों को बर्बाद नहीं करना चाहिए।

15. हमें पानी को बरबाद नहीं करना चाहिए। हमें जितना ज़रूरी है उतने का ही उपयोग करना चाहिए। जलाशयों में नहाना, पशुओं को धोना, कपडे धोना, कूड़ा करकट फेंकना आदि को मना करना है। कल कारखानों के कचरे का या रासयनिक पानी से प्रदूषित नहीं करना चाहिए। जल में विष मिलानेवाले असामाजिक तत्वों के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए।

V. भाषा की बात

1. आ) ईय
2. अ) संतोष, हर्ष
3. अ) मूर्ति
4. ई) दुःख
5. इ) सर्व + उत्तम
6. ई) ता
7. अ) माता और पिता
8. अ) तो
9. इ) क्रिया विशेषण
10. अ) के
11. अ) मुहावरा
12. अ) बालिकाओं ने
13. इ) राजू ने पुस्तक पढ़ी।
14. आ) मिलती हैं।
15. आ) राम से रोटी खायी गयी।
16. अ) हम मेहनत से पढ़ेंगे और देश का नाम ऊँचा करेंगे।
17. अ) कहाँ
18. अ) अल्पविराम, पूर्णविराम
19. इ) नहीं
20. आ) यह तो कोई यान था।

अंक प्रदान करने के - सूचक

दसवीं कक्षा की नवीन पुस्तकों के आधार पर नमूना प्रश्न पत्र तैयार किया गया है। इसमें किस प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं? किस दक्षता के लिए कितने अंक निर्धारित किए गए हैं? उत्तरों का किन सूचकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए? इसकी अध्यापक को स्पष्ट जानकारी होनी आवश्यक है। प्रश्न -पत्र के आधार पर उसका अवलोकन करें।

अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया (20 अंक)

I. (1) पठित गद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)
गद्यांश उपवाचक से ही लिया जायेगा।

(2) अपठित गद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)
यह किसी भी साहित्यिक या सामाजिक अंश से लिया जाएगा।

(3) पठित पद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)
यह पाठ्य पुस्तक से लिया जायेगा।

(4) अपठित पद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)
यह किसी भी साहित्यिक अंश से लिया जाएगा।

अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता (40 अंक)

स्वरचना - (32 अंक)

(II.) लघु प्रश्न - 12 (अंक) (4x4 = 16)

इसके अंतर्गत चार प्रश्न दिए जायेंगे। पाठ्य पुस्तक में दिए गए प्रश्नों को जैसे का तैसा न देकर उसी स्वभाव वाले अन्य प्रश्न दिए जाएँगे। एक-एक प्रश्न के लिए तीन अंक निर्धारित है।

- लघु प्रश्नों के उत्तर को अंक प्रदान करने के तरीके :-
  - विषय वस्तु की समझ, वाक्य निर्माण का क्रम - 3 अंक
  - वर्तनी की शुद्धता - 1 अंक

4 अंक

(III.) निबंधात्मक प्रश्न - 16 (अंक)

इसके अंतर्गत 4 प्रश्न दिए जाएँगे। दो प्रश्न गद्य भाग से तथा दो प्रश्न पद्य भाग से दिए जाएँगे। इसमें से दो प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ अंक निर्धारित हैं।

- निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर को अंक प्रदान करने के तरीके :-
  - विषय वस्तु की समझ - 3 अंक
  - वाक्य निर्माण क्रम - 3 अंक
  - उचित शब्द का उपयोग - 1 अंक
  - शुद्ध वर्तनी - 1 अंक

8 अंक

(IV.) **सृजनात्मकता - (8 अंक)**

पाठ्य पुस्तक में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों को न देकर उसी प्रकार के अन्य प्रश्न दिए जाएँगे। इसके अंतर्गत तीन प्रश्न दिए जाएँगे। एक प्रश्न पत्र एक निबंध तथा तीसरा अन्य विधा से संबंधित होगा। दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच अंक निर्धारित है।

- सृजनात्मक प्रश्नों के उत्तर को अंक प्रदान करने के तरीके :-

1. वार्तालाप / संभाषण

- पात्रानुसार संवाद	- 6 अंक
- वाक्य निर्माण क्रम	- 1 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	8 अंक

2. लेखन (पत्र लेखन के नियम)

- स्थान, दिनांक, संबोधक, पता, हस्ताक्षर	- 2 अंक
- विषय की अनुकूलता	- 5 अंक
- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	8 अंक

3. गीत / कविता आठ पंक्तियों में लिखना

- विषय की अनुकूलता	- 4 अंक
- उचित शब्द प्रयोग	- 3 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	8 अंक

4. निबंध

- प्रस्तावना या भूमिका	- 2 अंक
- विषय विस्तार	- 4 अंक
- उपसंहार	- 1 अंक
- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	8 अंक

5. नारे / सूक्तियाँ		
	- विषय की अनुकूलता	- 3 अंक
	- उचित शब्द चयन	- 2 अंक
	- वाक्य निर्माण	- 2 अंक
	- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		8 अंक
6. साक्षात्कार	- व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने के लिए पूछे जाने वाले प्रश्न	- 2 अंक
	- विषयगत प्रश्न	- 4 अंक
	- प्रश्नों का क्रम - अनुसंधान	- 1 अंक
	- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		8 अंक
7. कथा/कहानी	- विषयारंभ/प्रभावोत्पादकता	- 2 अंक
	- घटनाक्रम	- 4 अंक
	- समापन	- 1 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		8 अंक
8. करपत्र	- शीर्षक	- 1 अंक
	- संदेश	- 4 अंक
	- विषय-आवश्यकता	- 2 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		8 अंक
9. कहानी आगे बढ़ाना	- अर्थपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाने पर	- 5 अंक
	- उपसंहार	- 2 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		8 अंक

10. घटना वर्णन	- आरंभ / प्रभावोत्पादकता	- 2 अंक
	- कथोपकथन	- 4 अंक
	- उपसंहार	- 1 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		8 अंक

III. **भाषा की बात :- (20 अंक)**

पाठ्य पुस्तक में दिए गए शब्दों के पर्यायवाची, भिन्नार्थ, व्युत्पदार्थ, मुहावरे, वाक्य प्रयोग, तत्सम, तद्भव, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, शब्द-भेद, वाक्य-नकारात्मक, संयुक्त, सरल, मिश्र वाक्य आदि में से किसी भी अंश से संबंधित 20 प्रश्न दिए जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक अंक निर्धारित है।

First Language SA Hindi Blue Print

प्रथम भाषा हिंदी, कक्षाः दसवीं - सारांशात्मक मूल्यांकन

प्रश्न-पत्र - I (Paper - I)

शैक्षिक मापदंड	प्रश्न संख्या	स्रोत	अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	लघु प्रश्न	निबंध प्रश्न	विकल्प	भागवार अंक
स्वरचना	1 से 4	स्वरचना के प्रश्न। पद्य पाठ से दो और गद्य पाठ से दो प्रश्न। इनके उत्तर चार वाक्यों में लिखने होंगे।	12	-	4	-	नहीं है	30
	5 से 10	स्वरचना के प्रश्न। पद्य सारांश से एक, गद्य सारांश से एक और उपवाचक पाठों से एक के उत्तर लिखने होंगे। इनके उत्तर आठ पंक्तियों में लिखने होंगे।	18		-	3	आंतरिक (दो में से एक)	
शब्द भंडार	11 से 26	शब्द भंडार से संबंधित प्रश्न	8	16	-	-	बहुविकल्पीय प्रश्न	10
	27 व 28	शब्द भंडार से संबंधित प्रश्न	2	2	-	-	नहीं है	
कुल			40	18	04	03		40

SSC MODEL EXAMINATION PAPER

सारांशात्मक मूल्यांकन - III

नमूना प्रश्न - पत्र

विषय : हिंदी प्रथम भाषा प्रश्न-पत्र - I **अंक : 40**

कक्षा : दसवीं **समय : 2½ घंटे**

स्वरचना

I) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार पंक्तियों में लिखिए। 4 x 3 = 12

1. राम-लक्षमण-परशुराम संवाद में आपको कौनसा पात्र अच्छा लगा और क्यों?
2. कवि ऋतुराज का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
3. आपके अनुसार गाँवों में मुख्य रुप से क्या-क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
4. बच्चों को खेल के अधिक से अधिक अवसर मिलना चाहिए। इसके बारे में अपने विचार लिखिए।

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ पंक्तियों में लिखिए। 3 x 6 = 18

5. भारत देश के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

या

6. पूर्व चलने के, बटोही बाट की पहचान कर ले। कवि ने ऐसा ही क्यों कहा होगा?
7. जलस्त्रोतों का संरक्षण करना क्यों आवश्यक है? अपने विचार लिखिए।

या

8. 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका मन्नू भंडारी के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?
9. 'मंगल, मानव और मशीन' पाठ मानवतावाद का सफल उदाहरण है। स्पष्ट करें।

या

10. 'गजनंदनलाल पहाड़ चढ़े' पाठ में आपको कौनसा प्रसंग अच्छा लगा और क्यों?

III. भाषा की बात

नीचे दिये गये प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए। 16 x ½ = 08

11. उर पर विशाल-सरिता-सित-हरि-हार चंचल में रेखांकित शब्द के पर्यावाची हैं।

अ) गगन व्योम आ) नदी, सलिला इ) वारिद, जलधि ई) नक्षत्र, तारक

12. सरलता मानव का <u>स्वाभाविक</u> गुण है। रेखांकित शब्द में प्रत्यय है -

अ) विक आ) इक इ) क ई) ईक

13. निम्न में से गलत विकल्प पहचानिए।

अ) शुद्ध x अशुद्ध आ) उपकार x अपकार

इ) पूर्वार्द्ध x उत्तरार्द्ध ई) उन्नति x अउन्नति

14. नीचे दिये गये वाक्यों में अशुद्ध वाक्य है-

अ) वह कल आएगा। आ) वह कल आएगो।

इ) वह कल आएगें। ई) वह कल अयेंगे।

15. पिता बाजार गये हैं। रेखांकित शब्द के पर्याय शब्द पहचानिए-

अ) जननी, वसुंधरा आ) जनक, तात

इ) संतोष, संपर्क ई) मात,माँ

16. आसमान और धरती जहाँ मिलते हैं, वह ..... है। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित शब्द से कीजिए।

अ) क्षीतजि आ) क्षीतिज इ) क्षितिज ई) क्षितीज

17. वह नीच कार्य करता है। रेखांकित शब्द का विलोम क्या है?

अ) श्रेष्ठ आ) स्नेह इ) संतोष ई) मोह

18. सर्वोत्तम व्यक्तित्व परोपकार के विचार रखता है। रेखांकित शब्द किन दो शब्दों से बना है-

अ) सर्वो + तम आ) सव + उत्तम

इ) सर्व + उत्तम ई) स्व + उत्तम

19. Iam playing Kabaddi. -

अ) मैं कबड्डी खेल रहा हूँ।

आ) मैं कबड्डी खेलता हूँ।

इ) मैं कबड्डी खेल रहा था।

ई) मैं कबड्डी खेलता था।

20. 'गिनत' शब्द में जुड़ने वाला उपसर्ग

अ) कु आ) प्रति इ) अप ई) अन

21. जिसका प्रमाण न दिया जा सके-

अ) प्रामाणिक आ) अप्रमाणिक इ) आप्रमाणिक ई) अप्रामाणिक

22. 'मुनाफ़ा' शब्द का अर्थ है-

अ) लाभ आ) हानि इ) नष्ट ई) आधा

23. 'चमन' शब्द का वचन बदलने पर-

अ) चमने आ) चमनें इ) चमन ई) चमनाएँ

24. .....आपको कला के बारे में नहीं पता है?

अ) क्या आ) कौन इ) किसमें ई) कब

25. 'निर्बल' शब्द विस्तार कीजिए।

अ) जिसमें बल न हो आ) जिसमें बल हो

इ) जो नबल हो ई) जो अबल न हो

26. 'धीरे' इस शब्द का पुनरुक्ति शब्द होगा-

अ) धीरे आ) तीव्र इ) शीघ्र ई) मंद

नीचे दिये गये शब्दों के वाक्य प्रयोग कीजिए। 2 x1 = 02

27. 'नौ दो ग्यारह होना'

28. 'हुड़दंग'

विवेक केवल मूल्य से पाया जा सकता है। - गेटे

First Language SA Hindi Blue Print

प्रथम भाषा हिंदी, कक्षाः दसवीं - सारांशात्मक मूल्यांकन

प्रश्न-पत्र - II (Paper - II)

शैक्षिक मापदंड	प्रश्न संख्या	स्रोत	अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	लघु प्रश्न	निबंध प्रश्न	विकल्प	भागवार अंक
अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	1	संदर्भ सहित व्याख्या	5	-	1	-	नहीं है	20
	2 (1-5)	अपठित पद्य	5	5	-	-	बहुविकल्पीय प्रश्न	
	3 (1-5)	पठित गद्यांश (उपवाचक)	5	-	5	-	नहीं है	
	4 (1-5)	अपठित गद्यांश	5	-	5	-	नहीं है	
सृजनात्मक अभिव्यक्ति	5-7	पत्र, निबंध, नारे, पोस्टर, कविता सृजन, विधा परिवर्तन के तीन में से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।	10	-	-	2	आंतरिक (दो में से एक)	10
भाषा की बात	08-17	व्याकरणांश संबंधित प्रश्न	10	-	10	-	नहीं है	10
कुल			40	05	21	02		40

SSC MODEL EXAMINATION PAPER

सारांशात्मक मूल्यांकन - III

नमूना प्रश्न - पत्र

विषय : हिंदी प्रथम भाषा प्रश्न-पत्र - II **अंक : 40**

कक्षा : दसवीं **समय : 2½ घंटे**

I) अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

1) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़िए। संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (1 x 5 = 05)

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार।।

2) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। (5 x 1 = 05)

मानवता की मर्यादा जनतंत्र है
अनुशासन ही जीवन का गुरुमंत्र है
शूल-फूल से भरे हमारे रास्ते
लेकिन मंज़िल पर अपना विश्वास है।
सत्य, अहिंसा, शांति समय के सारथी
जीवन करवट बदल रहा हर मोड़ पर
आकुल होकर देख रहा इतिहास है।।

1. हमारे जीवन का गुरुमंत्र क्या है?
   (क) मानवता (ख) अनुशासन (ग) मर्यादा (घ) सफलता
2. मानवता की सीमा इसे माना गया है।
   (क) मंज़िल (ख) जंनतंत्र (ग) जीवन (घ) विश्वास
3. शूल-फूल से भरे हैं -
   (क) मानवता की मर्यादा (ख) अनुशासन का जीवन
   (ग) हमारे रास्ते (घ) जीवन का गुरुमंत्र
4. समय के सारथी हैं -
   (क) शूल-फूल (ख) सत्य, अहिंसा
   (ग) जीवन, इतिहास (घ) मंज़िल, विश्वास
5. काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -
   (क) अहिंसा (ख) मानवता (ग) आकुलता (घ) इतिहास

3) नीचे दिए गए गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5 x 1 = 5

विपदाएँ और रुकावटें बाहरी हस्तक्षेप हैं। हमारी अपनी आंतरिक शक्ति इन बाहरी हमलों की चिंता नहीं करती। किसी ने सही कहा है 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। हमारा बल और निर्बलता मन के हाथ में है। मजाल कि अँधेरा अंधेर रच जाए। सोच-विचार कर कार्य करना और कार्य करने में आनंद लेना मेरा लक्ष्य है। फल की चिंता मेरे मन में जगती ही नहीं, लेकिन फल-प्राप्ति का आनंद भी बिना किसी प्रदर्शन और प्रचार के ले लेता हूँ। यदि हम समाधान के मोर्चे पर संकल्पवान बनें तो समस्याएँ जीवन को तोड़ नहीं सकती हैं।

1. हमारी आंतरिक शक्ति को किसकी चिंता नहीं है?
2. बाहरी हमलों से यहाँ तात्पर्य क्या है?
3. हमारी सामर्थ्य और कमज़ोरियाँ किस पर निर्भर है?
4. लेखक का लक्ष्य क्या है?
5. संकल्पवान बनने का क्या परिणाम होता है?

4) निम्नलिखित गद्यांश ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। 5 x 1 = 5

यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ हैं। संसार में मानव द्वारा जितने भी कार्य किये जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है - 'शांति'। सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि शांति क्या है? शांति का केवल यह अर्थ नहीं कि मुख से चुप रहें अवितु मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। इसीलिए जहाँ शांति है, वहाँ सुख है, जहाँ सुख है वही स्वर्ग है और जहाँ स्वर्ग है वही दुनिया का श्रेष्ठ स्थान है। युद्ध, दुख, लालच और सभी पीड़ाओं को मिटाने का एक मात्र साधन है - 'शांति'।

1. संसार का सारा सुख-वैभव किसके बिना अधूरा है?
2. वास्तविक शांति है -
3. शांति का अंतिम परिणाम है -
4. युद्ध, दुख, लालच को किसकी संज्ञा दी गयी है -
5. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -

II) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए। 2 x 5 = 10

5. आपके मुहल्ले में 'स्वास्थ्य जाँच शिविर' आयोजन करने हेतु जिला स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

या

6. 'आदर्श विद्यार्थी' विषय पर निबंध लिखिए।

या

7. किसी भी महान व्यक्ति का साक्षात्कार लेने के लिए पाँच प्रश्न तैयार कीजिए।

III) भाषा की बात

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर निर्देशों के अनुसार दीजिए। **10 x 1 = 10**

8. हम बनारस घूमने गए थे। (इस वाक्य का सही पद परिचय लिखिए।)
9. 'बूढ़ा'- (भाववाचक संज्ञा लिखिए।)
10. सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं। (भूतकाल में बदलकर लिखिए।)
11. भुजबल भूमि भूम बिनु किन्ही। (पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार लिखिए।)
12. दोहा छंद के पहले और दूसरे चरण में मात्राएँ होती हैं?
13. यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है? (वाक्य में प्रयुक्त कारक लिखिए।)
14. सूरदास जन्मांध थे। (रेखांकित शब्द का समास लिखिए।)
15. 'जिसकी तुलना न हो सके' - (सही शब्द संक्षेप कीजिए।)
16. सीता गीत गाती है। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
17. ''व्यर्थ'' - (संधि विच्छेद कीजिए।)

शैक्षिक मापदंडों के आधार पर प्रश्नों के प्रकार - उसका महत्व

सब यह जानते हैं कि रटंत उत्तरीय प्रश्न अब नहीं पूछे जायेंगे। नये प्रश्न पत्र में छात्रों की क्षमता व दक्षताओं के अनुरूप प्रश्न रहेंगे।

दक्षताओं के आधार पर प्रश्न :

1. पढ़कर अर्थग्रहण करने की जाँच करने वाले प्रश्न
2. (अ) स्वरचना/अपने शब्दों में उत्तर लिखने वाले प्रश्न

   (आ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति वाले प्रश्न
3. भाषा व व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. पढ़कर अर्थग्रहण करने की जाँच करने वाले प्रश्नः-

इसमें मुख्यतः गद्य व पद्य संबंधी प्रश्न होते हैं। गद्य में पठित व अपठित गद्यांश देकर प्रश्न पूछे जाते हैं। पद्य में भी पठित व अपठित पद्यांश देकर प्रश्न पूछे जाते हैं। पद्य में केवल आधुनिक पद्य से ही प्रश्न पूछे जाय। पद्य हो या गद्य पाँच-छः पंक्तियों तक देकर प्रश्न पूछे जाय।

महत्व :- इस प्रकार के प्रश्नों के अभ्यास के लिए छात्र कई गद्यांशों व पद्यांशों का पठन करते हैं। उसका अर्थ, भाव समझने के लिए शब्दकोश का सहारा भी लेते हैं। ऐसे अभ्यास से छात्रों में पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास होता है। छात्र स्वयं पुस्तकालय में विविध पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक पुस्तकों, समाचार पत्रों का पठन कर विषय समझ सकते हैं।

2. (अ) रचना/अपने शब्दों में उत्तर लिखने वाले प्रश्नः-

ऐसे प्रश्नों के उत्तर में छात्र स्वयं सोचकर अपने विचार व्यक्त करता है। अपनी भावाभिव्यक्ति लिखित रूप में व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता छात्र को मिलती है, जिससे छात्र में लिखित रूप में स्वाभिव्यक्ति करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

(i) लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर चार वाक्यों में दिये जा सकते हैं। ये प्रश्न छात्रों को सोच-विचार कर उत्तर देने के लिए प्रेरित करते हैं।

महत्व :- छात्रों में संक्षेप में उत्तर देने की योग्यता का विकास होता है।

(ii) निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर आठ वाक्यों में दिये जा सकते हैं। ये प्रश्न भी छात्रों को सोच विचार कर उत्तर देने के लिए प्रेरित करते हैं।

महत्व :- वर्णन, व्याख्या की क्षमताओं का विकास होता है।

(आ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रश्न :-

कहानी आगे बढ़ाना, कविता आगे बढ़ाना, विधा रूपांतर करना, नारे, सूक्तियाँ, वचन, कहानी, कविता, पत्र, निबंध आदि का सृजन करना, इसके अंतर्गत हैं।

महत्व :- ऐसे प्रश्न छात्रों की सृजनात्मकता का विकास कर उन्हें भावी जीवन में भाषा के आधार पर आगे बढ़ने के भरपूर अवसर देते हैं।

3. **भाषा की बात :-**

इसमें व्याकरण व भाषा परीक्षण संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं ये दो भागों में पूछे जाते हैं।

(अ) शब्द संबंधी प्रश्न :- छात्रों में भाषागत विकास के लिए शब्द भंडार का विकास होना आवश्यक है। इसलिए शब्दार्थ, पर्याय, लिंग, वचन, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, शब्द संक्षेप, युग्म शब्द, शब्दभेद आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

महत्व :- शब्द भंडार का ज्ञान भाषा पर अधिकार प्रदान करता है और यह समय व संदर्भ के अनुकूल भाषा का प्रयोग करने में सहायक होता है।

(आ) वाक्य संबंधी व्याकरणांश प्रश्न :- इसमें वाक्य रचना, अर्थ की दृष्टि से वाक्य, सकारात्मक व नकारात्मक वाक्य, काल, वाच्य, मुहावरे, कहावतें शुद्ध-अशुद्ध वाक्य, वाक्य क्रम व सामान्य भाषा प्रयोग, व्यावहारिक भाषा संबंधी प्रश्न होते हैं।

महत्व :- वाक्य निर्माण व उसके रूपों की जानकारी से छात्र भाषा की विविध शैलियों व विधाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं और सुंदर ढंग से व्यावहारिक भाषा का प्रयोग कर सकते हैं।

इस अध्याय के विषय में कोई संदेह हो तो हिंदी समन्वयक एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद के मेइल या फोन पर संदेश या भेंट कर सकते हैं।

scerthindi@gmail.com **Cell no. 99 89 39 1942**

अध्यापक के लिए उपयोगी वेबसाइट एवं विशेष सूचनाएँ

(Useful Websites and Important Instructions)

1) उपयोगी वेबसाइटों की सूची

अ) भाषा विकास के लिए उपयोगि सरकारी संस्थाएँ

क्र.सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
1.	सेंट्रल इनस्टिट्यूट ऑफ इंडियन लांग्वेजेस, मैसूर	www.cill.org
2.	कमीशन फर सैंटिफिक अंड टेकनिकल टर्मिनालजी, नई दिल्ली	www.cstt.nic.in
3.	नेशनल कौंसिल ऑफ एड्युकेशनल रीसर्च अंड ट्रैनिंग, नई दिल्ली	www.ncert.nic.in
4.	नेशनल ट्रांश्लेषण मिशन	www.ntm.org.in
5.	केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली	www.hindinideshalaya.nic.in
6.	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा	www.khsindia.org;

आ) स्वच्छंद संस्थाओं के नाम

क्र.सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
1.	सेंटर फर लेरनिंग, बेंगलूर	http://cfl.in
2.	सेंटर फर लेरनिंग, रिसोरसेस, पूणे	www.clrindia.net
3.	दिगंतर शिक्षा एवं खेलकूद समिती, जैपूर	www.digntar.org
4.	एकलव्य, मुंबाई	http://eklavya.in
5.	प्रथम, मुंबाई	www.pratham.org
6.	ऋषीव्याली इनिस्टिट्यूट ऑफ एड्केशन, चित्तूर ज़िला, आ.प्र.	http://www.rishivalley.org
7.	द टीचर फौंडेशन, बेंगलूर	www.teacherfoundation.org
8.	विद्याभवन एड्युकेशन रीसोरस सेंटर, वी.वी. टीचर्स कॉलेज़, उदयपूर	http://vidyabhavansociety-eminar-org

इ) प्रचुरण संस्थाओं के नाम

क्र.सं.	संस्था का नाम	वेबसइट
1.	एमेस्को पब्लिकेशन्स, हैदराबाद	www.emesco.com
2.	भारत ज्ञान विज्ञान समिती (बिजिविएस)	www.bgws.org
3.	सेंटर फर लेरनिंग रीसोरसेस	www.clirindia.net/materials/childrenbooks.html
4.	चंदमामा इंडिया	www.chandamama.com
5.	चिल्ड्रन बुकट्रस्ट (CBT)	www.childrenbooktrust.com
6.	एकलव्य	http://eklavya.in

7. इंडिया बुक हौज़ www.ibhworld.com
8. जनचेतन http://janchetnaa.blogspot.com
9. कराडी टेल्स कंपनी www.karaditales.com
10. कथा, नईदिल्ली www.katha.org
11. मेकमिलन पब्लीशर्स http://international.macmillan.com
12. नेशनल बुक ट्रस्ट (NBT) www.nbtindia.org.in
13. नेशनल कौनसिल ऑफ एड्युकेशनल रिसरर्च एंड ट्रैनिंग www.ncert.nic.in
14. पिसियम चिल्ड्रन्स मैगज़ीन www.pcmmagazine.com
15. प्रथम बुक्स www.prathambooks.org
16. पुस्तक महल www.pustakmahal.com
17. रूम टु रीड www.roomtoread.org
18. द लरनिंग ट्री स्टोर http://www.tltree.com
19. तुलिका बुक्स www.tulikabooks.com
20. सरस्वती पब्लीकेशन्स www.saraswatihouse.com
21. हिंदी वर्णमाला, उच्चारण http://www.anu.edu.au/asianstudies/hindi/pro
ज्ञान तथा भाषा सीखने के लिए - nounce/velar.html; http://pune.cdac.in/html/aai/
lilasil.aspx; http://lilappp.cdac.in/; http://
www.omniglot.com/writing/syllabic.htm
22. हिंदी प्रशिक्षण एवं हिंदी सॉफ्टवेयर http://www.hindiforyou.blogspot.com/
डाउनलोड करने के लिए- http://vishwajitmajumdar.blogspot.com/
23. ऑनलाइन हिंदी शब्दकोश के लिए - http://www.shbdkosh.com/;
http://dsal.uchicago.edu/dictionaries/caturvedi/
http://hi.wiktionary.org/wiki/Hindi_Glossaries
तथा सरल टायपिंग सीखने जैसे आकर्षक सॉफ्टवेयर निशुल्क डाउनलोड
करने के लिए http://www.ildc.in/Hindi/hdownloadhindi.html
24. हिंदी साहित सभी 22 भारतीय भाषाओं के लिए पौद्योगिकी विकास जानने
http://www.ildc.in/Hindi/hdownloadhindi.html
25. हिंदी सीखने के लिए, हिंदी से रोज़गार समाचार के लिए, हिंदी पुस्तकों के लिए और हिंदी अध्यापन विकास के लिए सहायक वेवसाइट
www.rajbhasha.nic.in;www.ildc.gov.in;www.bhashaindia.com;
www.ssc.nic.in; www.parliamentofindia.nic.in; www.ibps.in;
www.khsindia.org; www.hindinideshalaya.nic.in

2) विशेष सूचनाएँ

पाठ्यपुस्तक में कुछ स्थानों पर डी.टी.पी. त्रुटियाँ हैं। इन त्रुटियों के बारे में बताने वाले अध्यापकों व साहित्यप्रेमियों को हम हृदय से साभार प्रकट करते हैं। नीचे दी गयी तालिका में त्रुटियों के साथ-साथ उनके सही सुधार को भी दिया गया है। वे इस प्रकार हैं-

पृष्ठ संख्या	त्रुटि	सुधार
x	भाषा की बात में शैक्षिक मापदंड गलत मुद्रित हुए हैं।	शब्द भंडार व व्याकरणिक अंशों के बारे में मुद्रण होना चाहिए।
17	नल्सन मंडेला की जन्म वर्ष 1898 तथा मृत्यु दिनांक 23 नवंबर मुद्रित हुआ है।	वर्ष 1918 और 5 दिसंबर मुद्रित होना चाहिए।
40	मीरा के पद में छठी पंक्ति में 'पायो' मुद्रित हुआ है।	'पायो' के स्थान पर 'गायो' मुद्रित होना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक अथवा अन्य जानकारी या सुझावों के लिए संपर्क करें और इस वर्ष भर समग्र जानकारी पाते रहें।

श्री सय्यद मतीन अहमद

समन्वयक, हिंदी विभाग,एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

scerthindi@gmail.com **Cell no. 99 89 39 1942**

जय हो...!

''पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी उँचे बन जाओ।''

किसी ने सच कहा है कि हौंसले बुलंद हों तो बड़ी से बड़ी चुनौतियाँ भी छोटी दिखने लगती हैं। चित्र में दिखायी दे रहे मलावत पूर्णा (दसवीं कक्षा, समाज कल्याण पाठशाला, निजामाबाद की छात्रा) और एस. आनंद कुमार (नवीं कक्षा, खम्मम) ने अपने हौंसले से यह सिद्ध कर दिया कि दुनिया में असंभव नाम की कोई चीज़ नहीं होती। दोनों ने ही कम उम्र में गजब का साहस, धैर्य और संयम का परिचय देकर विश्व के मानचित्र में नवगठित तेलंगाणा राज्य को विशेष स्थान दिलाया है। उनका यशस्वी कार्य इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

मलावत पूर्णा ने अपने एक साक्षात्कार में कहा था कि हिंदी पाठ्यपुस्तक में दी गयी कविताओं से उसे कुछ कर गुज़रने की प्रेरणा मिली है। उसकी सफलताओं में हिंदी कविताओं का योगदान विशिष्ट स्थान रखता है।

नवगठित राज्य तेलंगाणा के इन दो हीरों जैसे 'हीरो' पर हमें गर्व है।